चतुवक्रही ॥ ५॥ वेदवित्त नमिनमूं वेद पारगतुही। कलमासन श्रीमान वृषभनमिहूं सही। नमूं वृहस्पति अजित करमकरता जजूं। द्वादश आगम सुधी करमहरता भजू ॥ ६ ॥ नमू केवलालोक स्वयंभू माधव। गोतमभूतनमिनमूं अजभूसाधव। नमूं नमूं ईशान भूनवत्सलनमूं। स्वामीवासवनमूं अर्द्धनारीपमूं ।७। ज्येष्ठनमूं श्रीकण्ठ आत्मभूध्याय ही। नमूं वेद करतार निरंजन गावही। समतागनिकूं वंदिसुवागीसादिही, कोविदके नमिपाय नमूं अष्टादिही ।८। नमूं निरंवरशांत निराकांषी तुही निरारंकनमि नमूं निकलंक निर्मल सही। संसारापरिवर्जितके पदवन्दि ही। चेतन चेतावंदि धीर सुखकंदही ।९। वंदू मैं चिद्रूप अकर्त्तानिर्गुणो। नमूं महोत्तम पापमारजित सद्गुणो। जितमत्सरनमि नमूं सिद्धिभरतासही। नमूं धर्म करतार धर्मचक्री तुही॥१०॥ वीतरागनमि नमूं विदामान्यो सदा। सुधर्मभूत नमिनमों विधाता जी मुदा। नमूं ज्ञानसिद्धान्त निराहारकतुही। स्यादवाद विधिवेद अष्ट जो शुभसही॥११॥मूलमार्ग परकाशक तुम बोधाक्षही द्वै प्रमाण नमिनमूं सुनयगुण भाषही ।थे अद्वैत वादीसनयों नेता सही। तुही सुनय संसार विविध बोधकमही ।१२।नमूं नमूं एकान्त मतासंभेत ही। नमूं निरस्तापायसमुच्चय धेसही। ये अष्टोत्तर नामअमल गुणतैंभरे। चतुर्वीस तीर्थेश पूजलखिके धरे॥१३॥शत अष्टोत्तर नामकण्ठ ये बुध धरै। महा सुष्टु सुरधारिनरोत्तम ऊचरै। नरसुरके सुखभोगि चक्रवर्तिथायही। सिद्धिवधूवरहोय सदासुख पावही॥१४॥

दोहा—जे नरपढै त्रिकालही, संपतिराज्य महान। रामचन्द्र जिनसमलहै, पावै मोक्षनिधान ॥ १५ ॥

(इति श्रीजिन अष्टोत्तरी नामावलिं पठित्वा जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिंक्षिपेत्)।

अथ वर्त्तमान चौबीसतीर्थंकरसमुच्चय पूजा लिख्यते ।

(रामचन्द्र कृत)

(अडिल) वृषभआदिअंत वीर चतुर्विंशतिजिना, ध्यानखण्डगहिहते कर्मवसुदुर्जना ।
वसु गुणयुत वसुधराठये भवछारिकै, आह्वाननविधिकरूं गणौघ उचारिकै ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं वृषभादिमहावीर पर्यन्तचतुर्विंशतिजिनेंद्रा अत्रावतरतावतरत संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं वृषभादिमहावीरपर्यन्त चतुर्विंशतिजिनेन्द्रा अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं वृषभादिमहावीरपर्यन्त चतुर्विंशतिजिनेन्द्रा अत्रममसन्निहिताभवतभवतवषट्सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक (गीताछन्द)

जल-कपूरवासित शरदशशिसम धवलहार तुषारतैं । मुनिचित्तसम सो विमल सौरभरवैमधुकर प्यारतैं
सो हिमन उद्भवनीर शीतल कुंभ भरिकरि लेयही । चौबीसजिन वृषभादिके पद जजूं गुणगण धेयही
ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरान्त चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्योजन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा
चन्दन-मलयनीर कपूरशीतल वरणपूरण इंदही, आमोदबहुलिसमीरतें दिगरवैमधुकर वृन्दही ।
सोद्रव्य भवतपनाशकारण कनकभाजन लेयही, चौवीसजिन वृषभादिकेपद जजूंगुणगणधेयही ॥
ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारातापरोगविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीतिस्वाहा ।

अक्षत–धवलशालिअखण्डडंडी पिंडनामुक्ताजली, नृपभोगजोग मनोगचितहर गन्धतेमधुकर खुसी।
पद अखैकारण क्षालजलतें उभयकरनं लेयहो। चौवीसजिन वृषभादिकेपद जजूंगुणगणधेयही॥
ॐह्रीं वृषभादि महावीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो ऽक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निवपामीति स्वाहा।
पुष्प–विमलगन्धसुगन्धकुन्दिग कुसुमवरण सुहावनो,ललचायलोचन प्राणहारी मधुपकूं रलियावनो।
सोसमरवाण विध्वसकारण अमरतरुके लेयही,चौवीसजिन वृषभादिके पद जजूं गुणगणधेयही॥
ॐह्रीं वृषभादि महावीरान्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
नैवेद्य–सुरहिघीवसुगन्धतें पकवान वहुविधि कीजिये, रसखडदेकरि स्वर्णभाजनसद्यमनहर लीजिये।
सो चारुचरुचखिहरणकारण रसनको अतिप्रेयहो,चोवोसजिन वृषभादिकेपद जजूंगुणगणधेयही॥
ॐह्रीं वृषभादि महावीरान्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दीप–सुभगदीपउद्योततें तममोहपटलविलाय हो, सुपरगुणप्रतिविंवह्वै जिमहस्तरेखलखायही॥
सोस्वर्णभाजनधार मणिमयज्ञानकरिचखि प्रेयहो,चावोसजिनवृषभादिकेपद जजूंगुणगणधेयही॥
ॐह्रीं वृषभादि महावीरान्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीतिस्वाहा।
धूप–गोसीरसंगहुताशधारे धूम्रसंगमधुकरमिलैं, दिगपालचिंतै इहैंक्षितिधरनीलसे खतेचलैं।
सोधूपवसुविधि जरनकारण स्वर्णभाजनखेयही,चौवीस जिनवृषभादिकेपद जजूंगुणगणधेयही॥
ॐह्रीं वृषभादि महावीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो ऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल-फलमनोहरपक्कमधुरे स्वर्णसेरलियावने, ललचायलोचनघ्राणरंजन रसनको प्रियपावनं ।
भरिथालकनमय अमरतरुकेउभय करमेंलयही, चौवासजिन वृषभादिकेपद जजूंगुणगणधेयही ॥
ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरान्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
अर्घ-नीरगन्धइत्यादिलेपद चतुर्विंशतिजिनतनं, जे जजंशभावे वदिसनवैंठानिउत्सव अतिघने ।
सुरहोयचक्री कामहलधरतीर्थंरदके श्रयही, सखरामचन्दलहनशिवके अर्घकरिप्रभु धेयही ॥
ॐ ह्रीं वृषभादिमहावीर पर्यन्त चतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला ।

अडिल-वचनसुधासमभाखिसवै जनत पिया, नृपपदमें धनधान्यदेय सबपोषिया ।
परमातमपदकाजराज तजमुनिभये, केवलले भविवधिशिवालय थिरठये ॥

चौपाई-वृषभजिनं जगवृषदातारं, अजितभवार्णव पारउतारं ।
संभवसंभव क्लेक्षयकरता, अभिनन्दन शिवमारगभरता ॥ १ ॥
सुमतिसुमति दाता जगत्राता पद्माकृतपद्मेशविख्याता ।
जिन सुपार्श्व निजपासि विदारी चंद्राप्रभशशितं द्युतिभारी ॥ २ ॥
पुष्पदन्त आतंकविदारयो, शीतलजगतसंबोधि उधारयो ।

श्रेयश्रेयशिव केदातारं, वासुपूज्यविद्रुमद्युतिसारं ॥ ३ ॥
विमलसकल गुणथान उचारे, लोकालोक अनन्तनिहारे।
धर्मसुध्यातममर्मवतायो,शान्तिजगतहितबोधसुनायो ॥ ४ ॥
कुन्थु सकलसत्तसमकरिपाले,अर अरिवसु धरध्यानप्रजाले।
मल्लि महामलसमर विदारचो मुनिसुव्रत अखिजुतमनमारचो ॥५॥
नमिअष्टादशदोषसंघारे,नेमिनजी रजमत पसुपारे।
सजलजलद तनपार्श्वजिनंदा,वंदोंवीर सिधारथनंदा ।६।
ये चौवीसजिनेश्वरसारं वन्दों मनवचतनकृतकारं।
तीर्थंकरभव्यके भवत्राता, त्रिनकारण जगवन्धु विखाता ॥ ७ ॥
करुणासागर अरज हमारी, जानतज्ञानथकी प्रभुसारी।
तातें कहनीकछुनहि आवै, वांछितार्थपद तुमकरपावै ॥ ८ ॥
घत्ताछन्दः-येनामजिनेश्वर दुरितखयंकर जो भविजनकंटेधरई।
हुयदिवि अमरेश्वर पुहमि नरेश्वर रामचन्द्र शिवनियवरई ॥ ९ ॥
॥ इतिचतुर्विंशति तीर्थंकरसमुच्चयपूजा सम्पूर्णा ॥



१ अथ ऋषभदेवजिन पूजा प्रारभ्यते ।

(रामचन्द्र कृत)

अडिल्ल–सुखमदुखम थितिमेटिकर्म भूथापिही, नृपपदतजिवैरागभये प्रभुआपही ।
ऐसे आदिजिनेश आदितीर्थंकरा, आह्वाननविधिकरूं त्रिविधनमिकेखरा ॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेश्वर अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिन अत्रमम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम् ।॥ गीताछन्दः ॥

अथाष्टकम् । (अडिल्ल)

जल–विमलनीर मनोज्ञशीतल शरदशशिसन श्वेतही, आमोदमिश्रित हिमन उज्वर स्वैमधुकर प्रीतिही ।
जरमरनसंभव नाशकारन कनकभाजन लेयही,श्रीआदिनाथजिनेन्द्रके युगचरणचरचूं धेयही ॥
ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय
जन्मजरामृत्यु रोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
चन्दन–उद्यान आश्रितनीम इमली आदितरु कटुमिष्टही, गोसीरगन्धसमीरतें लगिहोयचन्दनसुष्टही ।

सो मलयतैंकशमीरघसि भवतापनाशन लेयही, श्रीआदिनाथजिनेन्द्रके युगचरणचरचूं धेयही ॥
ॐह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
संसारातापरोगविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत-सरितगंगानीर सींची शालिसुभग सुहावनी, नृपभोग योग्य मनोज्ञ पिंडनमल्ल डंडी पावनी।
पदअखै कारणक्षालिजलतैं पुंजपंच करेयही, श्रीआदिनाथजिनेन्द्रके युग चरणचरचूं धेयही ॥
ॐह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय
अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प-मंदारमेरु सुपारिजाती सुमनवरण सुहावने, चचरीकध्यावें पवनपरसैं चक्षकू रलिपावने।
सोस्मरवाण विध्वंसकारण कनकभाजन लेयही, श्रीआदिनाथजिनेन्द्र के युगचरणचरचूं धेयही ॥
ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य-सुरहि घृतपकवान सुंदरसद्य विविध बनायही, दीप्तरसधरि स्वर्ण भाजन लेयमनललचायही।
सो क्षुधा भंजन रसनरजन चारु चरुनिक्षिप्रयही, श्रीआदिनाथ जिनेन्द्रके युग चरण चरचूंधेयही।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय
क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–त्रैलोक्यके उत्पात व्यय ध्रुव समै एक लखायही,तम मोह पटल विलाय ज्यों घन पवनतें नसजायही।
सो ज्ञान कारणदीपमणिमय तेजभास्करलेयही, श्रीआदिनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चरचूंधेयही।
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय मोहा-
न्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–अगर संगहुताशधारै सुरभितै मधुध्यावही, व्रजधूम्रलखिदिगपालचितैं नील क्षितिधर आवही।
सो अष्टकर्मविध्वंसकारणमलय चंदन खेयही, श्रीआदिनाथ जिनेन्द्रके युग चरण चरचूं धेयही।
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय
अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–मधुर पक फलोघ सुन्दर ललित वर्ण सुहावने, सुखदाय लोचन क्षुधा मोचन घ्राण रंजन पावने।
फल मुक्तिकारण अमरतरुके थालभर करलेयही,श्रीआदिनाथ जिनेन्द्रके युगचरण चरचूं धेयही।
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय
मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–नीर गन्ध इत्यादि वसुविधि अर्घकर जिन पद तने,जे जजें ध्यावें,वंदि सतवें ठानि उत्सव अनिघने।
सुरहोय चक्री काम हलधर तीर्थपदकी श्रेयही,सुख रामचन्द लहंत शिवके आदिजिनवर धेयही।

उों ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पञ्चकल्याणक । चौपई।

गर्भ-तजसर्वार्थसिद्धविमानदोयजसाढ असित भगवान मरुदेव्या उरमें अवतारलयो जजूंगुण चित अविकार

उों ह्रीं वृषभनाथ जिनेन्द्राय आषाढ कृष्ण द्वितीयागर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जन्म-नोमी चैत्र असित जन्मयं आननकंपसुरनकेथयेपूजे सुरगिरसनपनठान वृषभनाथ पूजूं धरध्यान।

उों ह्रीं वृषभनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण नवमी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप-शतसुतयुगतियकन्यादोय,त्यागि उपधि भवमुनिवरहोयाध्यानधरोनवचैतअसेत सुरनरजजेंजजूंशिवहेत

ॐ ह्रीं वृषभनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण नवमी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान-फागुणअसित एकादशि ज्ञान उपज्यों धर्म कह्यो भगवान चतुर्निकायदेवनरनार पूजे मैं पूजूं भवतार।

उों ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय फागुणकृष्ण एकादशी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

निर्वाण-माघ असित चौदसिविधिशश हने मोक्षपाई वृषभेश। सुरनरखगकैलाशसुथान,पूजेमैंपूजूंधरध्यान

उों ह्रीं वृषभनाथ जिनेन्द्राय माघकृष्ण चतुर्दशी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला ।

(अडिल)–आदि जिनेश्वर आदि लब्धिकेवलभई समोशरण धनदेवरच्यो को वरनई। द्वादश जोजन ठीक महाशोभाधरैं ।।वीस सहससोपान सुरासुर जै करैं ॥१॥ (पद्धड़ि छन्द)

जय धूलिशालपण रत्नचूर, ढिगमानसथंभ उद्योत सूर । चउवापीमधि अम्बुज सुहाय, लखिमानी को मद भगथाय ॥२॥ जय खाई मधि नोरज मराल, वनकलपलता बहु कुमुमजाल। प्राकार रत्न मय तंज भान। चव गोपुरप्रति दोयधूपदान।२।शत शत तोरण द्वय नाटचशाल। सुरतिय गावें जिनगुण विशाल । चामीकर वेदी चव दुवार। वन चार फेरि बनसुरतरुचैत्य अशोकआम धुजवरन वरन वनसर्वठाम॥३॥ चव वन वेदी वन चार चारि। शोभाअपार। कलधौतशाल दूजो उतंग चवगोपुर पूरववत सुचंग ॥ ४ ॥ कहुं लताभवन कहुंनंदी परवत गेहसार। सिद्धारथ द्रुममन हरसरूप जिनबिंबांकित बहु पुण्य रूप ॥५॥ सब गावें कल्यान । बहु वीन बजैं मिरदंगतान ।नाचैंकिंनरगधर्वगीत। जिनगुणगावें अपछर संगीत।६। फिरफटिक कोटशोभाअमान। चउगोपुर मंगल द्वारपालकर गदा अनूप। कर जोर चलें सुर खचरभूप । सितचन्द्रकान्तिमणिकी समूप। जय गन्ध कुटीआमोदसार। द्रव्यजान ।७। मधिसभावनी द्वादशअनूप। जय आदि पीठ षोडश सिवाण । मनुषोडशभावन के निधान । जय ध्वज शिखरकलशउद्यातकार ॥८॥ जय तृतीय पीठ वसुभुव लखाव ॥९॥ जय सिंहपीठ परिकमलसार । जिन दुतियपीठ वसुगण चढ़ाव ।

अंतरीक्ष आननसुचार। जय भामंडल छवि कोटभान।जय छत्र तीन तैं शशि लजान ॥ १० ॥ जय तरु अशोकतैंशोक दूर। यषचवरकरैंचउसठिहजूर। है मागधि भाषा कोश चार। सुर पुष्ट वृष्टि शोभा अपार। ११।नभदुंदुभिवाजैं अतिगभीर।अर्धद्वादश कोटिन शब्द भीर। सुर असुरकरंजयनंद नंद। वाजैं समीर अति मंद मंद ॥१२॥ जय देव अनंत चतुष्ट धार। दरसन सुखवीरज ज्ञानसार। जय तीन कालदिव्य धुंनि होय। सुण समझि जाय दश प्राण सोय॥१३॥भू दर्पण समकंटक न कोय। षट् ऋतु फलफूल सुगंध होय।जन्मा विरोध प्राणीन रोष। पद कमल रचैं जन सर्वतोष ॥१४॥प्रभुगुण अनंनभाषेन जांय मैं अल्प बुद्धिसुरगुरुथकांय। मैं अरज करूं करधारि सीस। मुझतारतार भवतैं जगीस ॥१५॥

घत्ता छन्द— इह जिनगुण सारं अमल अपारं जोभविजन कंठ धरई।
हन जरमरणावलि नाश भवावलि रामचन्द शिव तियवरई ॥

ॐ ह्रीं ऋषभदेव जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्पपामीति स्वाहा।

॥ इति श्रीऋषभदेवपूजा संपूर्णा ॥

२ अथ अजितनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

(रामचन्द्र कृत) (अडिल)

स्थापना—सकल कर्म हनि अजित जिनं शिवखेत में। गिरसमदतें गये तिनोंके हेत में।
आह्वानन संस्थापनसंनिधि खरा करूं। मन वच तन कर शुद्ध वार त्रय ऊचरूं ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् संनिधीकरणम्।

अथ अष्टक। (छन्द त्रिभंगी)

जल—गंगासमनीरं प्रासुकसीर कनक रत्नमय भृंगभरम्। जरमरण पियासं हरि सबत्रासं मन वच तन त्रयधारकरम्। श्रीअजित जिनेश्वर पुहमिनरेश्वर सुरनरखगबंदितचरणं। मैं पूजूं ध्याऊं गुणगण गाऊं सीसनवाऊं अघ हरणम्।

ॐ ह्रीं श्री अजित नाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण, पंच कल्याण प्राप्ताय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निवपामीति स्वाहा।

चन्दन–मलयागिरिलावै अगरमिलावै केसरयुत घन सारघसै, भवताप विनाशन शिव सुख कारन पून जिनेश्वरपाप नसै। श्री अजित जिनेश्वर पुहमि नरेश्वर सुर नर खग वंदित चरणम्। मैं पूजूं ध्याऊं गुणगण गाऊं सीस नवाऊं अघहरणम्॥ २॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय संसारताप रोगविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥

अक्षत–तंडुलसु अखंडित सौरभमंडित मुक्ता समजिनपद आगे। कर पुञ्जपियारे भव भ्रमटारे लहै अखंड भय भागे। श्रीअजित जिनेश्वर पुहमिनरेश्वर सुरनरखगवंदित चरणम्। मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीसनवाऊं अघ हरणम्।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंच, कल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–देखतही मोहै सब मन मोहै कुसुमकनकमय रत्नजड़ा। सुर नर पशुमारे कामविदारे पूजतबाण मनोज बड़ा। श्रीअजित जिनेश्वर पुहमिनरेश्वर सुरनरखगवंदित चरणम्। मैंपूजूं ध्याऊं गुण गणगाऊं सीसनवाऊं अघहरणम्।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य—अति मिष्ट मनोहर घेवर गुंजा फेणी मोदक थाल भरूं। बहु क्षुधा सतायो पूजन आयो हरो वेदना अरज करूं। श्री अजित जिनेश्वर पुहमि नरेश्वर सुर नर खग बंदित चरणम्। मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीसनवाऊं अघहरणम्॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप—धर कनक रकाबी रतन सुदीपक जोति ललितकर प्रभु आगे। तब मोह नशावे ज्ञान बधावे लख आयो पर बुधि भागे। श्री अजित जिनेश्वर पुहमिनरेश्वर सुर नर खग बंदित चरणम्। मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अघ हरणम्।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंच कल्याण प्राप्ताय। मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप—कृष्णागर लेऊं जिनढिगषऊं गंध दशोदिशिध्यावत हैं। बहुमधुकर आवें परिमल भावें अष्ट करम जरिजावत हैं। श्रीअजितजिनेश्वर पुहमिनरेश्वर सुर नर खग बंदित चरणम्। मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अघहरणम्।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल—अति मिष्टमनोहर नैननकेहर उत्तम प्रासुकफललावे। श्रीजिन पद धारै चवगति टारै मोक्षमहा फल लघु पावे। श्रीअजितजिनेश्वर पुहमिनरेश्वर सुरनर खग वंदित चरणम्। मैं पूजूं ध्याऊ,गुण गणगाऊं सीसनवाऊं अघहरणम्॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्री अजित नाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंच कल्याण प्राप्ताय म क्ष फल प्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ—शुभ निरमल नीरं गन्ध गहीरं तडुल पुष्पसुचरुलावे। पुनिदीपं धूपं फल सुअनूपं अरघ राम कर गु ग गावे। श्री अजितजिनश्वर पुहमिनरेश्वर सुर नर खग वंदित चरणं। में पूजूं ध्याऊ गुण गण गाऊं सीसनवाऊं अघहरणम्॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पञ्चकल्याणक (दोहा)।

गर्भ—विजयविमानथकीचये विजयागर्भमझार। जेठ अमावस अवतरे जजूं भवार्णवतार।

ॐ ह्रीं अजितनाथ जिनेन्द्राय जेठकृष्ण अमावस्या गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म—माघ शुक्ल दशमीसुरां जन्म जिनेशनिहार। सुरगिर सनपन कर जजं मैं पूजूं पदसार॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्ल दशमी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

तप–माघ शुक्ल नवमी धरचो तप वन में जिनराय। सुर नर खग पूज करी हम पूजें गुणगाय ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्ल नवमी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपमीति स्वाहा।

ज्ञान–पोस शुकल एकादशी केवल ज्ञान उपाय। कह्यो धर्म पद युग जिजे महाभक्ति उरलाय। ४

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पोष शुक्ल एकादशी ज्ञान कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

निर्वाण–चैत्र शुक्ल पंचम विषे अष्ट कर्म हनि मोष। अजित समेदा चल थकी गये जजं गुण घोष ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल पञ्चमी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निवपामीतिस्वाहा

अथ जयमाला। (दोहा)

महाअर्घ– सकल तत्त्वज्ञायक सुधी, गुण पूरण भगवान। धर्म धुरंधर परमगुर नमूं नमूं धरिध्यान।

पद्धडी छन्द–जय जय श्री अजित जिनेशदेव। तुम चरन करूं दिन रैन सेव। जय मोक्ष पंथ दातारधीर। जय कर्म शैल भंजन सुवीर॥१॥जय पंच महाव्रत धरन हार। तज राज्य सबै वन ध्यान धार। जय पंच समिति पालकजिनंद। त्रय गुप्ति करन वस धरमकंद ॥२॥ धर ध्यान भये चिद्रूप भूप, गिरमेरुसमानो अचल रूप। जय घाति करम को नाश ठान,उपजायो केवल ज्ञान भान ॥३॥ तब समवशरण रचना बनाय हरिहरषों मन आनंद पाय। कछु करहूं वर्णन भक्ति भाय। जिम बोलत है पिकअंब

खाय ॥४॥ जिह पंच रत्न मय धूलिशाल । चव गोपुर मन मोहन विशाल। जह मानसथंभ सुरंग चंग, लखिमानी नावैआय अंग॥५॥चउवापीनिर्मल नीरसार । शुभबोलत जह चकवामराल जल भरी खातिका गरद रूप। पष्पनिकी वाडी अति अनूप॥६॥शुभ कोट दिपै जिम तेज भान । नृतशाला में गावें कल्यान । पुनि वन शोभा वरनी न जाय,राजतवेदी बहु धुज उडाय॥७॥फिर कोट हेममय सुघर सार। बहु कल्प द्रुमवन सोभकार। नव रत्नराशि शोभित उत्तंग,ऊंचे मंदिर जेह बहुसुरंग ॥८॥ फिर फटिक कोट शोभा अमान। मंगल द्रव्यादिकधूपदान। मधि सभा वनी द्वादश अनूप। मुनि सुर नर पशु बैठे सुभूप ॥९॥ विच तीन रत्न मय तुंगपीठ। वेदी सिंहासन कमलईठ। जिन अंतरीक्ष आननसु चार। धर्मोपदेश दे भव्यतार ।१०॥सितछत्र तीन उद्योतकार। तरु है अशोकजन शोकटार। गंधोदक वृष्टि युत पुष्प वृष्टि, नभ दुंदुभि वाजै मिष्ट मिष्ट ॥११॥अति धवल चमर चौसठ ढुराय। भामंडल छवि वरनी न जाय। ऐसे विभूतिजिन राजदेव। नमि नमि पुनि पुनि कर हूं जु सेव ॥ १२ ॥

घत्ता छन्द– श्री अजित जिनेश्वरनमितसुरेश्वर पूजत खेचर गण चरणं ।
नरपति बहु ध्यावें शिव पद पावें रामचन्द भव भय हरणम् ॥ १३ ॥

ॐह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञाननिर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताये मोक्षफल प्राप्ताये महाअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ।

इति अजितनाथ पूजा सम्पूर्णा ।

३ अथ सम्भवनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

(रामचन्द्र कृत) (दोहा)

स्थापना-संभव करमहने सबै शिव समेदसे जाय। आह्वानन स्थापनकरूं मम संनिहित भव आय ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् संनिधी करणम्।

अथ अष्टक (छन्द त्रिभंगी)

जल-मोतृषासतायो अतिदुखपायो जल लायो प्रभु तुम आगै। भर कंचन झारी धार उतारी जन्म मृत्यु ततछिणभागै। संभव भवतोरोमोहमरोरो जोरो आतमसों नेहा। मैंपूजूं ध्याऊं सीसनवाऊं तार तार विलमजकेहा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री संभव नाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन-भवताप सतायों तुमढिग आयो चंदन लायो अतिसीरा। हो सिद्ध निरंजन भव भय भंजन तुम पूजूं हरि भव पीरा। संभव भवतोरो मोह मरोरो जोरो आतम सों नेहा। मैं पूजूं ध्याऊं सीस नवाऊं तार तार विलमज केहा।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण, प्राप्ताय संसार ताप रोग बिनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत-भववाससेरा तोरो मेरा मैं चेरा तुमगुण गाऊं। तंडुल सुअखंडित सौरभ मंडित पूज करूं शिव पद पाऊं। संभव भवतोरो मोह मरोरो जोरो आतम सों नेहा। मैं पूजूं ध्याऊं सीस नवाऊं तार तार विलमज केहा।

ॐ ह्रीं श्री संभव नाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प-यो काम महा वल वसकर लीने हरि हर प्रति केसव सारे। मैं पूजन आयो प्रासुक लायो कुसुम मदन सर हर प्यारे। सम्भव भव तोरो मोह मरोरो जोरो आतम सों नेहा। मैं पूजूं ध्याऊं सीस नवाऊं तार तार विलमज केहा।

ॐ ह्रीं श्री संभव नाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामवाण बिनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य—यह क्षुधा हत्यारी अति दुखकारी मोहि सतावत है तातैं। वरमोदक लायो पूजन आयो हरो वेदनाप्रभु यातैं। संभव भव तोरो मोह मरोरो जोरो आतम सों नेहा। मैं पूजूं ध्याऊं सीस नवाऊं तार तार बिलमज केहा।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप—मोह महातम छाय रह्या हम ज्ञानहन्या अति दुख दीनो। मणिदीपक लायो ध्वांत नशायो पूजत पद चेतन चीनो। संभव भव तोरो मोह मरोरो जोरो आतमसों नेहा। मैं पूजूं ध्याऊं सीस नवाऊं तार तार बिलमजकेहा।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्पाण प्राप्ताय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप—ये दुष्टज कर्म बडे अधर्म दुख देवें कवलो गावें। कृष्णागर धूपं मलय अनूपं पद खेये लघु जर जावें। संभव भवतोरो मोह मरोरो जोरो आतमसों नेहा। मैं पूजूं ध्याऊं सीस नवाऊं तार तार बिलमज केहा॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल-मोक्ष महा मग रोक रह्यो अंतराय कर्म वल मो रोधा। फल प्रासुक लायो तोहि चढ़ायो मोक्ष मिलावो हो बोधा। संभव भवतोरो मोह मरोरो जोरो आतमसों नेहा। मैं पूजूं ध्याऊं सीस नवाऊं तार तार विलमज केहा।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्न,तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-निर्मलनीरं गंधगहीरं तंडुलपुष्प सुचरुलावै। मणि दीपं धूपं फल सुअनूपं अरघ रामचन्द करगावै। संभव भवतोरो मोह मरोरो जोरो आतमसों नेहा। मैंपूजूंध्याऊंसीस नवाऊं तार तार विलमजकेहा।

ॐ ह्री श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण, प्राप्ताय अनर्घ प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पञ्चकल्याण। दोहा।

गर्भ-फागुण शुदि अष्टमचये नव ग्रीवकतें इंद। सेना देउर अवतरे जजूं धर्म के कंद।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुणशुक्ल अष्टमी गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म-कातिग सुदि पूनिमसुरा संभव सुरगिरलेय। जन्म महोत्सव कर जजें हम पूजे गुणधेय।। २।

उॅं ह्रीं श्रा संभवनाथ जिनेन्द्रायकार्त्तिक शुक्लपूर्णिमा जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

तप धर मुनिह्वै वन वसे जजूं चरण वसुभेव ॥

तप– पूनिममगसिर शुक्ल ही जगत राज्य तजदेव। तप धर मुनिह्वै वन वसे जजूं चरण वसुभेव ॥

ओंह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मगसिर शुक्ल पूर्णिमा तप कल्याणयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–चौथ असित कार्तिक विषे ध्यान खड्ग गहिवीर। हानि घाति केवल लह्यो जजूं ज्ञान हितधीर।

ओं ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय कार्त्तिक कृष्ण चौथ ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–चैत शुक्ल षष्ठम विषे शेष करम निरवार। मोक्ष वरांगन पति भये जजूं गुणौघ उचार।

ओं ह्रींश्री संभवनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल षष्ठी मोक्ष कल्याणकाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला (दोहा)।

महाअर्घ–संभव जिन संभव हरचो मो संभव हर नाथ। करूं वीनती सुमरि गुण नमूं सीस धर हाथ।

(आडल ढाल परम महा उत्कृष्ट की में)

काल तूर्य गयो पौण, शेष रह्यो पावही। उपजे संभवनाथ जगत के रावही। माता सेनादेवि जितारि पिता नमूं। सावंती भवथान पूज अघको वमूं॥२॥धनुष चारसै तुङ्ग कनक वपु सोहनो। सठ लख पूरव आय अश्व चिह्न मोहनो। वंश इक्ष्वाक सिंगार पूर्व लख तप कियो। घाति करम चउजारि ज्ञान केवल लियो ॥३॥ समवशरण धनदेव रचो शोभा घनी। ग्यारा योजन वीच एक शत पण गनी। वीच महा त्रयपाठि कमलपर जिन लसैं। अंतरीक मुख चार छत्र शशि कोहंसैं ॥४॥चौसठ चमर यक्षेश

करे अतिही सजें। साढा द्वादश कोडि जात दुंदुभि वजें। दिव्य ध्वनिकर, भवतें तारे नाथ जी। मोको भवतें तारदेव गह हाथजी॥५॥इस संसार मझार महादुख मैं सहे। तुमतें छाने नाहि कहा मुखसें कहे। यातें कारज मोहि सरै तुमसें सही। औरन.तें कहा काज शरन तेरी गही॥ ६ ॥ तेरोनाम अपार उदधिनौका भली। तेरो नाम उचार होहि सबही रली। तेरो नाम जपंत उरग ह्वै माल ही। तेरो नाम जपंत सिंह ह्वै स्यालही ॥ ७ ॥ तेरो नाम जपंत रोग सवही टरैं। तेरो नाम जपंत ऋद्धि घर में भरैं। तेरो नाम जपंत ज्वाल जलपेखिये। तेरो नाम जपंत द्विरद मृग देखिये ॥८॥ तेरो नाम पसाय श्वान सुरथाइयो। मो मनमें तुम नाम भली विधि आइयो। तो अब चिंता कौन मोक्ष पद पायसो। सुरपद की कहा बात धृति ह्वै चायसो ॥ ९ ॥

दोहा-संभव जिनकी थुति यह,जो पढसी मन लाय। रामचंद सुख शिवभले पावै सहज सुभाय ॥१०॥

ॐ ह्रींश्री संभवनाय जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याण प्राप्तय अनर्घ पद प्राप्ताये महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

इति श्री संभवनाथजिन पूजा संपूर्णा।

४ अथ अभिनन्दनजिनपूजा लिख्यते ।

स्थापना (अडिल)-घातिहनेलहिज्ञानबोधिभविगिरठये । हनि अघाति अभिनंदशिवालय थिर भये ।
आह्वाननविधिठानि वारत्रयऊचरूं संवौषट् ठः ठः वषट् त्रिविधाकरूं ॥ २ ॥

उों ह्रीं श्री अभिनंदनतीर्थंकर परमदेव अत्रावतरावतरसंवौषट् आह्वाननम् ।
उों ह्रीं श्री अभिनंदन तीर्थंकर परमदेव अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन तीर्थं कर परमदेव अत्र मम संनिहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम् ।

अथ अष्टक (छन्द त्रिभंगी)

जल—उत्तम जल प्रासुक अमलसुवासित गंगादिक हिम तृषहारी। तुम पूजनलायो अतिसुखपायो हरो जन्ममृति दुखकारी । अभिनंदन स्वामी अंतरजामी अरजसुनो दुख अतिपावै। भववासवसेरा हर प्रभुमेरा मैं चेरा तुम गुण गावैं ॥१॥

उों ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेंद्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन—शुभ कुंकुमलावै चरूमिलावै अगरमेल घनसार घसै । श्रीजिनवर आगे पूज रचावै मोह

ताप तत्काल नसै। अभिनंदन स्वामी अंतरजामी अरजसुनो दुख अतिपावै। भव वास वसेरा हर प्रभु मेरा मैं चेरा तुम गुण गावै ॥ २ ॥

ऊँ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वापामीति स्वाहा।

अक्षत–मुक्तासम तण्डुल अमल अखंडित चन्दकिरणसमभरथारी। कर पुंज मनोहर जिन पद आगे लहै अखै पद सुखकारी। अभिनंदन स्वामी अंतरजामी अरजसुनो दुख अति पावै। भववास वसेरा हर प्रभु मेरा मैं चेरा तुम गुण गावै।

ऊँ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्प–मंदारज सुंदर कुसुम मिलावै गन्ध लुब्ध मधुकर आवै। जिनवर पद आगे पूज रचावै मदनवाण नसके जावै। अभिनंदन स्वामी अंतरजामी अरज सुनो दुख अतिपावै। भव वास वसेरा हर प्रभु मेरा मैं चेरा तुम गुण गावै।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–नाना विधि चरुलै मिष्टमनोहर कनकथाल भर तुम आगे। पूजन लायो अति सुख पायो रोग

क्षुधादि सब भागे। अभिनंदन स्वामी अंतरजामी अरज़ सुनो दुःख अति पावै। भव वास वसेरा
हर प्रभुमेरा मैं चेरा तुम गुण गावै ॥ ५ ॥

ऊँ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय क्षुधा
रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-मुझ मोह सतायो अति दुःख पायो ज्ञान हरो करके जोरा। मणिदीप उजारा तुम ढिग धारा
हरो तिमिर प्रभु जी मोरा। अभिनंदन स्वामी अंतरजामी अरज सुनो दुख अति पावे। भव वास
वसेरा हर प्रभु मेरा मैं चेरा तुम गुण गावै ॥ ६ ॥

ऊँ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप-कृष्णागर लावै अगर मिलावै भर धूपायन प्रभु आगे। खेये शुभ परिमल तैंमधु आवैं करमजरै
निज सुख जागे। अभिनंदन स्वामी अंतर जामी अरज सुनो दुख अतिपावै। भववास वसेरा
हर प्रभु मेरा मैं चेरा तुम गुण गावै।

ऊँ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट
कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल-फल उत्तम लावे प्रासुकमोहन गंध सुगन्धे रसवारे। भरथाल चढावैसो फल पावै मुक्ति महातरु

के प्यारे अभिनंदन स्वामी अंतरजामी अरज सुनो दुख अति पावै। भव वास बसेरा हर प्रभु मेरा मैं चेरा तुम गुण गावै ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–कर अर्घ महा जल,गंध सुलेकरतंदुल पुष्प सुचरुमेवा। मणिदीप सुधूपं फलज अनूपं रामचंद फल शिव सेवा। अभिनंदन स्वामी अंतरजामी अरज सुनो दुख अतिपावै। भव वास बसेरा हर प्रभु मेरा मैं चेरा तुम गुण गावै।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ-पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पञ्च कल्याणक (दोहा)।

गर्भ–षष्टी सित वैशाख तज विजय विमान सुरिंद। अवतर गर्भ सिधारथा लयो ज जूं गुण वृन्द ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय वैशाखशुक्ल षष्ठी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–जन्म माघ सुदि द्वादशी सुरपति लखि इत आय। सनपनकर सुरगिर जजे हम जज हैं गुणगाय।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदन जिनेन्द्राय माघशुक्ल द्वादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप-श्वेत द्वादशी माघ की ली दिक्षा जिन जाय। जगत राज्य तृणवत् तज्यो जजूं चरण शिवराय ॥३॥

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल द्वादशी अभिनंदन जिन तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान-पौष शुक्ल चउदस हने घाति करम जिन देव। कह्यो धर्म केवल भयो जजूं चरण जुग एव ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय पौष शुक्ल चतुर्दशी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण-सित षष्ठम वैशाखशिव गए शेष हनि कर्म। जजूं चरण युग भक्ति कर देहु देव निज धर्म॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदन जिनेन्द्राय वैशाख शुक्ल षष्टी मोक्षकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। (दोहा)

महाअर्घ-अभिनदन आनंद के दाता जगत विख्यात। करूं प्रणाम त्रिविधा सदा मुझ आनंदकर तात।

पद्धडि छंद।

जय अभिनंदन आनंदकंद। जयतात स्वयंवर धर्म वृन्द। जय देविसिधारथ उदरसार। अवतार अयोध्या पुरमझार ॥२॥ बहुकनकचाप त्रयसै पचास। इक्ष्वाक व्योममधि रवि उजास। प्रभु पूरव आयु पचास लक्ख। तपधारहने उचघाति अक्ख ॥३॥ केवल उत्सव सुर असुर आय। जय शब्द ठानि कीन्हो अघाय। समवादि भूति अद्भुत अपार। रचि थुति आरंभी इन्द्रसार ॥ ४ ॥ रसना सहस करके भनंत। तब पारलहै नहिगुण अनंत। मैं अल्पबुद्धि किमकरूं बखान। तुम भक्ति जुप्रेरयो देव आन॥५॥

के प्यारे अभिनंदन स्वामी अंतरजामी अरज सुनो दुख अति पावै। भव वास वसेरा हर प्रभु मेरा मैं चेरा तुम गुण गावै ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-कर अर्घ महा जल,गंध सुलेकरतंडुल पुष्प सुचरुमेवा। मणिदीप सुधूपं फलज अनूपं रामचंद फल शिव सेवा। अभिनंदन स्वामी अंतरजामी अरज सुनो दुख अतिपावै। भव वास वसेरा हर प्रभु मेरा मैं चेरा तुम गुण गावै।

ॐ ह्री श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ-पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पञ्च कल्याणक (दोहा)।

गर्भ-षष्टी सित वैशाख तज विजय विमान सुरिंद। अवतर गर्भ सिधारथा लयो ज जूं गुण वृन्द ॥१॥

उँ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय वैशाखशुक्ल षष्ठी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म-जन्म माघ सुदि द्वादशी सुरपति लखि इत आय। सनपनकर सुरगिर जजे हम जज हैं गुणगाय।

उँ ह्रीं श्रीअभिनंदन जिनेन्द्राय माघशुक्ल द्वादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत राज्य तृणवत् तज्यो जजूं चरण शिवराय ॥३॥
तप-श्वेत द्वादशी माघ की ली दिक्षा जिन जाय ।

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल द्वादशी अभिनंदन जिन तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कह्यो धर्म केवल भयो जजूं चरण जुग एव ॥
ज्ञान-पौष शुक्ल चउदस हने घाति करम जिन देव ।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय पौष शुक्ल चतुर्दशी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जजूं चरण युग भक्ति कर देहु देव निज धर्म ॥५॥
निर्वाण-सित षष्ठम वैशाखशिव गए शेष हनि कर्म ।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदन जिनेन्द्राय वैशाख शुक्ल षष्टी मोक्षकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला । (दोहा)

करूं प्रणाम त्रिविधा सदा मुझ आनंदकर तात ।
महाअर्घ-अभिनंदन आनंद के दाता जगत विख्यात ।

पद्धडि छंद ।

जय अभिनंदन आनंदकंद । जयतात स्वयंवर धर्म वृन्द । जय देवि सिधारथ उदरसार । अवतार अयोध्या पुरमझार ॥२॥ बहुकनकचाप त्रयसै पचास । इक्ष्वाक व्योममधि रवि उजास । प्रभु पूरव आयु पचास लक्ख । तपधारहने उचघाति अक्ख ॥३॥ केवल उतसव सुर असुर आय । जय शब्द ठानि कीन्हो अघाय । समवादि भूति अद्भुत अपार । रचि थुति आरंभी इन्द्रसार ॥४॥ रसना सहस करके भनंत । तब पारलहैनहिगुण अनंत । मैं अल्पबुद्धिकिमकरूं वखान । तुम भक्ति जुप्रेरचो देव आन ॥५॥

जय तीन जगत पतिके सुनाथ। गुरु गुरू नमूं मैं जोड़हाथ। जगस्वामि तणा तुम स्वामिदेव। पूजित तुमरी करतसेव ॥६॥ त्वं ज्ञान्या में सर्वज्ञ ईश। जय तपामांहि तपसी गरीश। त्वं जोगिन में जोगी महंत। हो परम जिनेश्वर जिन कहंत ॥७॥ जय विश्व उधारन दुख निवार। निरवांछ हितू जगके अधार। जय उभय श्रीराजित अपार। निरग्रंथ महा भुवि के मझार ॥८॥ जय शची आदि कर सेव्य पाय। स्तबूं महान ब्रह्म चारणाय। त्वं सकल द्रव्य परजै लखान। युगपत ही चव्य निर्मुक्त ज्ञान ॥९॥ त्वं दर्शन रविकर तम अज्ञान। युत पाप नसै प्रगटै कल्यान। मैं नमूं चरण युग जोड पाण। गुणसिंधु शरण तुम नांहि आण॥ १०॥ मैं धन्य भयो तुम निकट आय। मो जीतव धन तुम चरणपाय। त्वं धन्यनाथ किरपा निधान। चंदराम कहै दे मुक्तिथान॥ ११॥

घत्ता छन्द–यह थुति अभिनंदन पाप निकंदन जो भवि गावै सुरधरई।
हुय दिवि अमरेश्वर पुहमि नरेश्वर लघु पावइ शिव सुख वरई॥ १२॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्री अभिनंदन जिन पूजा संपूर्णा॥

५ अथ सुमतिनाथ पूजा प्रारभ्यते ।

स्थापना---(अडिल)संवौषट् ठः ठ. वषट् त्रिविधा करूं । आह्वननविधिठान वारत्रय ऊचरूं ।
सुमति जिनेश्वर पायजिजन के काजही । गिरि समेद कल्याणक मोक्ष विराजही ॥
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक गीता छन्द।

जल—अति स्वच्छ उत्तम नार प्रासुक मिश्रगंध मिलाईये। भरहेम झारी पूज जिन पद जन्म मृत्यु नसाईये।
श्री सुमतिजिनवर सुमतिद्यो मुझ पूज हूं वसुभेव ही। मैं अनंतकाल अकाजभटकोबिना तेरी सेव ही।
ॐ ह्रां श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण, पचकल्याण प्राप्ताय जन्म
मृत्युजरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन—कपूर केसर अगर लेकर घसों चंदन बावना । जिन पूज भविजन भावसेती मोहताप न सावना ।
श्री सुमति जिनवर सुमतिदो मुझ पूज हूं वसुभेवही। मैं अनंतकाल अकाज भटको बिना तेरी सेव हो ।

जय तीन जगत पतिके सुनाथ। गुरु गुरू नमूं मैं ज़ोड़हाथ। जगस्वामि तणा तुम स्वामिदेव। पूजित तुमरी करतसेव ॥६॥ त्वं ज्ञान्या में सर्वज्ञ ईश। जय तपामांहि तपसी गरीश। त्वं जोगिन में जोगी महंत। हो परम जिनेश्वर जिन कहंत ॥७॥ जय विश्व उधारन दुख निवार। निरवांछ हितू जगके अधार। जय उभय श्रीराजित अपार। निरग्रंथ महा भुवि के मझार ॥८॥ जय शची आदि कर सेव्य पाय। स्तबूं महान ब्रह्म चारणाय। त्व सकल द्रव्य परजै लखान। युगपत ही चख्य निर्मुक्त ज्ञान ॥९॥ त्वं दर्शन रविकर तम अज्ञान। युत पाप नसै प्रगटै कल्यान। मैं नमूं चरण युग जोड पाण। गुणसिंधु शरण तुम नांहि आण॥ १०॥ मैं धन्य भयो तुम निकट आय। मो जीतव धन तुम चरणपाय। त्वं धन्यनाथ किरपा निधान। चंदराम कहै दे मुक्तिथान॥ ११॥

घत्ता छन्द–यह थुति अभिनंदन पाप निकंदन जो भवि गावै सुरधरई।
हुय दिवि अमरेश्वर पुहमि नरेश्वर लघु पावइ शिव सुख वरई॥ १२॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्री अभिनंदन जिन पूजा संपूर्णा॥

५ अथ सुमतिनाथ पूजा प्रारभ्यते।

स्थापना---(अडिल)संवौषट् ठः ठ. वषट् त्रिविधा करूं। आह्वननविधिठान वारत्रय ऊचरूं।
सुमति जिनेश्वर पायजिजन के काजही। गिरि समेद कल्याणक मोक्ष विराजही॥
ऊों ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥
ऊों ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक गीता छन्द।

जल-अति स्वच्छ उत्तम नार प्रासुक मिश्रगंध मिलाईये। भरहेम झारी पूज जिन पद जन्म मृत्यु नसाईये।
श्री सुमतिजिनवर सुमतिद्यो मुझ पूज हूं वसुभेव ही। मैं अनंतकाल अकाजभटकोबिना तेरी सेव ही।
ऊों ह्रां श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म
मृत्युजरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन-कर्पूर केसर अगर लेकर घसों चंदन बावना। जिन पूज भविजन भावसेती मोहताप न सावना।
श्री सुमति जिनवर सुमतिदो मुझ पूज हूं वसुभेवही। मैं अनंतकाल अकाज भटको बिना तेरी सेव हो।

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा
ताप रोग विनाशाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–तंडुलसु निर्मल लेहु दीरघ जानि मुक्ताफल यही । जिन चरण आगे पुंजकरिये अखै पद पावे सही ।
श्री सुमति जिनवर सुमतिद्यो मुझ पूज हूं वसुभेवही । मैं अनंत काल अकाज भटको बिना तेरी सेव ही
ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्प–पण वरण कुसुम सुगंध प्रासुक अमरतरु के लावई । जिन पद कमल आगे चढ़ोडे मदन वाण नसावई ।
श्रीसुमति जिनवर सुमति दो मुझ पूज हू वसुभेवही । मैं अनंत काल अकाज भटको बिना तेरी सेवही
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय ।
काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्य–सरस मोदकमिष्टघेवर कनक थाल भराइये । जिन पूज भवि नैवेद्य सेती क्षुधारोग नसाईये । श्री
सुमति जिनवर सुमतिदो मुझ पूज हूं वसुभेवही । मैं अनंत काल अकाज भटको, बिना तेरी सेवही ।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा
रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–तेज मणिमय दीप सुन्दर करत तम को नाश ही । जिन पूज भवि जन भावसेती होय ज्ञान प्रकाश ही ।

श्रीसुमति जिनवर सुमतिदो मुझ पूज हूं वसुभेव ही। मैं अनंतकाल अकाज भटको बिनातेरी सेवही॥
ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–कर्पूर कृष्णागर सुचंदन धूप दहन हुताशनं। वरखेय भविजन चरण आगे अष्टकर्म विनाशनम्।
श्रीसुमति जिनवर सुमतिदो मुझ पूज हूं वसुभेवही। मैं अनंत काल अकाज भटको बिना तेरी सेवही॥
ओं ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–वादाम श्री फल चारु पुंगी मधु मनोहर लाइये। पद कमल जिनके पूजते ही मोक्ष के फल पाइये॥
श्रीसुमति जिनवर सुमतिदो मुझ पूज हूं वसुभेव ही। मैं अनंतकाल अकाज भटको बिना तेरी सेवही॥
ओं ह्री श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥

अर्घ–नीर गन्ध सुगन्ध तंडुल पुष्प चरु अरु दीप ही। वरधूप फल ले अर्घकीजे रामचन्द अनूप ही।
श्रीसुमति जिनवर सुमतिदो मुझ पूज हूं वसुभेव ही। मैं अनंत काल अकाज भटको बिना तेरी सेवही
ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ पंच कल्याणक (दोहा)

गर्भ-वैजयंत विमान तज श्रावण दुतियासेत। मंगला उर अतवार जिन लियो जजूं शिवहेत ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय श्रावणशुक्ल द्वितीया गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जन्म-चैत्र शुक्ल एकादशी जन्म महोत्सव इंद्र। सन पन कर सुर गिरि जजे जजूं सुमतिगुणवृन्द ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल एकादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

तप-नवमी सित वैशाख तप धरो मोहरिपु चूर। नगनदिगंबर वन वसे जजूं सुमति गुण भूर ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय वैशाखशुक्ल नवमी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

ज्ञान-चैत्र शुक्ल एकादशी केवल ज्ञान उपाय। कह्यो धर्म दुविधा मुदा जजूं चरण गुण गाय ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल एकादशी ज्ञान कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

निर्वाण-एकादशी सित चैत की शेषकर्म हनि मोष। शिखरसमेदा चलगये जजूं चरण गुणघोष ।। ५ ॥

ॐह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्रशुक्ल एकादशी मोक्ष कल्याणकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

अथ जयमाला। दोहा

महाअर्घ-सुमति सुमति दायक सदा, घायककुमतिकलेश। लायकशिवपद देनके, ज्ञायक लोक अशेष ।१।

(पद्धड़ीछंद)-जय सुमति चरणनख द्युतिमहान। जग करम भरम तम हरण भाण। जय मेघ

पिता चित पद्मलाल। त्रिकसावनकोरवि प्रातकाल ।२। जय मात सुमंगला उदरसार। अवतारलियो त्रय ज्ञान धार। द्युति कनक धनुष त्रयसै सु काय। चालीस लाख पूरव सुआय ।३। जय वंश इक्ष्वाक सिंगार देव। तज राज धरो तप सुष्ट एव। जय पंचमहाव्रत धरनधीर। जय पंच सुमति पालनसुवीर ॥ ४ ॥ जय तीन गुप्तिवस करनसूर। गह ध्यान खड्ग चउ घाति चूर। केवल उपजे समवादिसार। रवि इंद्र करी थुति नांहि पार ॥ ५ ॥ जय निरा भरण भासुर अपार। निर आयुध निर्भै निरविकार। निर मोह निरा कृत सर्व दोष। निरनेह जगतहित धर्मघोष ॥ ६ ॥ जय कृपा नाथ प्रति पाल शिष्ट। जिन वांछितार्थ फलदाय इष्ट। जय भव्य भवार्णवतारदेव। दुःखकर्म दाघ जल वृष्टि एव ॥ ७॥ तुम मोष मार्ग दरसाव भानु। भव संतति द्रुम जालन कृशानु। तुम गुण गण को नहि पारनाथ। मैं करूं बीनती जोड़ हाथ ॥८॥ भव तारण विरद निहार देव। मैं सदा करूं तुम चरण सेव। हो करुणानिधि जगपति अवार। शिवदेहु अखै सुख को भंडार ॥९॥

घत्ता छन्द–यह जिन गुणमाला परम रसाला रामचंद जो कंठधरै। ह्वै सिद्ध निरंजन भव भय भंजन मोक्ष रमा ततकार वरै ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्री सुमतिनाथ जिन पूजा संपूर्णा।

६ अथ श्रीपद्मप्रभ जिनपूजा लिख्यते।

रामचन्द्रकृत (अडिल)

स्थापना– पदम करम हन केवल ले भविबोधिये। कर अघाति निरमूल शिखरतैं शिव गये।
आह्वानन संस्थापन मम सन्निहित करूं। संवौषट् ठः ठः वार त्रय ऊचरूं॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्।

अथ अष्टक। ढाल योगी रासाकी।

जल–कनकरतनमयझारीभरकरप्रासुकनीरसुलाऊं। जनमजरामृतनाशनकारणश्रीजिनचरण चढाऊं।
पद्मजिनेश्वर पद्मादायक घायक हो भव केरा। ह्वै चेरा प्रभु तुम गुणगाऊं पाऊं मैं गुण मेरा॥१॥

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन–केशर अगर कपूर सुलेकर चंदन मेल घसावै। भवाताप निवारण कारण श्रीजिनपूज रचावै।

पद्मजिनेश्वर पद्मादायक घायकहो भव केरा। है चेरा प्रभु तुम गुण गाऊं पाऊं मैं गुण मेरा ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय संसारा तापरोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–अक्षत अखंडित दीरघ उज्वल चंद किरण समलावै। श्री जिनवरपद पूज मनोहर तुरत अखै पद पावै। पद्म जिनेश्वर पद्मादायक घायकहो भवकेरा। है चेरा प्रभु तुमगुण गाऊं पाऊं मैंगुण मेरा३

ओं ह्रीं श्री पद्म प्रभ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा।

पुष्प– पंचवरण मय कुसुम मनोहर प्रासुकचक्षु सुहावै। गंध सुगंधी मधुकर आवै पूजत काम नसावै। पद्म जिनेश्वर पद्मादायक घायक हो भवकेरा। है चेरा प्रभु तुम गुण गाऊं पाऊं मैं गुण मेरा।

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म, तप, ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

नैवेद्य–घेवर मिष्ट मनोहर मोदक फेणी गुंजालावै। श्रीजिनवर पद चरुतैं पूजैं रोग क्षुधा नसजावै॥ पद्म जिनेश्वर पद्मा दायक घायक हो भवकेरा। है चेरा प्रभु तुम गुण गाऊं पाऊं मैं गुण मेरा।५।

ओं ह्री श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–दीप रतन मय ध्वांत विनाशन कनक रकावी धारै। श्रीजिनवर पद पूजतही नर मोह मिथ्यात विडारै।
पद्म जिनेश्वर पद्मादायक घायक हो भव केरा। ह्वै चेरा प्रभु तुमगुण गाऊं पाऊं मैं गुण मेरा।६।
ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार
रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–चंदन अगर कपूरसुलेकर धरधूपायणमाहीं। श्रीजिनवर पद आगै खेये अष्टकरम जरजाहीं ॥
पद्मजिनेश्वर पद्मादायक घायक हो भवकेरा। ह्वै चेरा प्रभु तुम गुण गाऊं पाऊं मैं गुण मेरा।७।
ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्म
दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–श्री फल लौंग बदाम सुपारी एला आदि मंगावै। श्रीजिनवर पद फलतैं पूजै मुक्ति महाफल पावै।
पद्मजिनेश्वर पद्मा दायक घायक हो भवकेरा। ह्वैचेरा प्रभु तुम गुण गाऊं पाऊं मैं गुणमेरा।८। ओंह्रींश्री
पद्मप्रभ जिनेन्द्रायगर्भ,जन्म,तप,ज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणप्राप्तायमोक्षफलप्राप्तयेफलंनिर्वपामीतिस्वाहा

अर्घ–जल गंधाक्षत पुष्पसुलेकर दीपसुधूप मंगावै। उत्तम फल ले अर्घ बनावै रामचंद सुख पावै।
पद्म जिनेश्वर पद्मा दायक घायक हो भव केरा। ह्वै चेरा प्रभु तुम गुण गाऊं पाऊं मैं गुण मेरा ॥९॥
ओं ह्रीं श्री पद्म प्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाणपचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ
पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पञ्चकल्याणक। दोहा।

गर्भ–ऊपर ग्रीवकतें चये षष्ठी माघ असेत। गर्भ सुसीमा अवतरे जजूं त्रिविध धरहेत ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्री पद्म प्रभ जिनेन्द्राय माघ कृष्ण षष्ठी गर्भ कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–कातिक तेरस कृष्ण ही जन्मे श्रीजिनराय। इंद्र महोत्सव कर जजे जज हूं तूर बजाय ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कार्त्तिक कृष्णत्रयोदशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

तप– महाभूति साम्राज्य तज कार्त्तिक तेरसस्याम। वसे अरण तप धारजन जजूं चरण अभिराम ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय कार्त्तिक कृष्ण त्रयोदशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

ज्ञान–पूनम चैत हने अरी घातिकर्म धरध्यान। केवल ज्ञान उपाइयो जजूं पद्म भगवान ॥ ४ ॥

ॐ ह्री श्री पद्म प्रभ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल पूर्णिमा ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–चौथ कृष्ण फागुण विषे हनि अघाति जिनराय। मोक्ष समेदा चल गये जजूं चरण गुणगाय ।५।

ॐ ह्री श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्ण चतुर्थी मोक्ष कल्याण कायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला। (दोहा)।

महाअर्घं–पद्मनाथ के पद्म पद महाअरुण अविकार। नमूं उभय कर सीस धर देह देव मतिसार॥ १ ॥

पद्धड़ी छन्द–जय पद्म नाथ कौशांबीथान। ऊपर ग्रीवकतज के विमान। आये हैं सुसीमा

गर्भसार। वदि माघ षष्ठि चित्रा सुवार ।१। वदि कातिक तेरस जन्म एव। आये तहां चतुर्निकाय देव ॥ जय नंद नंद करते अपार। गिरमेरु कियो अभिषेकसार ।२। धर पद्मनाम हरि पूज पाय। नृपधारण के दरबारलाय। बहु नृत्य करो को करवखान। लषि मगन भये पितमात आन ॥ ३ ॥ जिन वृद्ध भये तनु तरुणभान। धन दोय शतक पंचास जान। नृप बाल पूर्व उणतीस लक्ष। सुख मगन भये तज राज दक्ष।४। षट्वर्षकरो तप घोर वीर। ऋतु ग्रीषम में गिरि शिखरधीर। रवि किरण तपै मनु अग्नि ज्वाल। धरध्यान खड़े निरभै निशाल।५। रति पावस तरु तल चतुर्मास। धरयोग खडे अहिलिप्तडांस। रति सीत तरंगनि ताल वास। वाजै समीर अनुभव विलास ॥ ६ ॥ धर ध्यान अग्नि चउघाति जार। लहि ज्ञान चराचर सब निहार। समवादि सहित कर के विहार। धर्मोपदेश दे भव्य तार ॥ ७ ॥ षट् वर्ष घाटि लख पूर्व ज्ञान। सब आयु पूर्व लख तीसजान। फागुण वदि चौथ संमेदथान। हनिके अघाति पहुंचे निबाण ॥ ८ ॥ मैं करू वीनति जोर हाथ। मुझ देहि अखै पद पद्मनाथ। तुम कारण बिन जग बंधु देव। इह प्रचुर भवार्णव को न छेव ॥ ९ ॥

घत्ता छन्द—कातिक तिथि कारी तेरस तप धारी चैत पुनम प्रभु ज्ञान वरं। सुर नर खग आये गुण गण गाये रामचंद नमि ध्यान धरम् ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महा अर्घं निर्वपामीति स्वाहा। इति श्री पद्म प्रभ जिन पूजा संपूर्णा।

७ अथ सुपार्श्वनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

रामचन्द्र कृत (अडिल)

स्थापना–सुरपति नरपतिफणी सभा मधि जिनतणी। वाणी सुनप्रतिबुद्ध होय आतम मुनी।
जिनसुपार्श्वपद युगलनमूं सिरनायके। आह्वाननविधिकरूं एकचितथायके ॥१॥
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्॥

अथ अष्टक (गीता छन्द)

जल–हिमशैलनिर्गत नीर शीतल स्वच्छ मुनिचित्ततुल्य ही। भरभृंगधारजिनाग्रदेवै लहैसुक्खअतुल्यही।
भवपाशनाशसुपार्श्वजिनवरतिरभत्रिबहुतारही। मुझतार जिनवर शरणआयोविरदतोहिनिहारही।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु
जरारोग विनाशनायजलंनिर्वपामीति स्वाहा।
चन्दन–घनसारअगरमिलाय केसर घसूं चंदनबावना। जिनपूज परम उछाह सेती मोहतापनसावना।
भवपाशनाशसुपार्श्वजिनवर तिरभत्रिबहुतारही। मुझतारजिनवरशरणआयोविरदतोहिनिहारही।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ,जन्म, तप,ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याणप्राप्ताय
संसारा तापरोग विनाशाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–दार्घ अखंडितसरलतंडुल सोमसम मनहरसही। भविपूजजिनवर चरणआगे अखैपदपावै सही ।
भवपाशनाशसुपार्श्वजिनवर तिरेभविबहुतारही । मुझतारजिनवरशरणआयोविरदतोहिनिहारही ।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेद्राय गर्भ, जन्म,तप, ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय
क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प–मंदारमेरुसुपारिउज्वमोहचक्षुमुहावना । जिनपूजभविजन भावसेती समरवाण नसावना ।
भवपाशनाशसुपार्श्वजिनवर तिरेभविबहुतारही । मुझतारजिनवरशरणआयोविरदतोहिनिहारही।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म, तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय
कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य–रसखंडउत्तमऔरघृतपकवानसबहिसुहावना । भरकनकथालजिनेन्द्रपूजै क्षुधारोगनसावना ।
भवपाशनाशसुपार्श्वजिनवर निरेभविबहुतारही । मुझतारजिनवरशरणआयोविरदनोहिनिहारही ।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ,जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप–मणिदीपज्योतिउद्योतसुन्दरध्वांतनाशनभानही । भर कनकभाजनधरजिनागरलहैअविचलज्ञानही।

भवपाशनाशसुपार्श्वजिनवर तिरेभविबहुतारही। मुझतारजिनवरशरणआयो विरदतोहिनिहारही।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप, ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय
मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप—धूपधूम्रसुगंधसौरभ दसोंदिशमेंह्वै रहे । अलिगुञ्जकरतदिगंतरालेंपूजजिनवसुकर्मदहे ।
भवपाशनाशसुपार्श्वजिनवरतिरे भविबहुतारही । मुझतारजिनवरशरणआयोविरदतोहिनिहारही।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप, ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याणप्राप्ताय
अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल—बादामश्रीफललौंगपिस्तामिष्टपारकलावही । जिनपूजपरमउछाहसेतीमुक्तिकेफलपावही ।
भवपाशनाशसुपार्श्वजिनवर तिरेभविबहुतारही। मुझतारजिनवरशरणआयोविरदतोहिनिहारही ।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ—नीरगंधसुगंधतंडुल पुष्पचरुअरुदीपही । शुभधूपफललेअर्घकीजे रामचन्द्र अनूप ही ।
भवपाशनाशसुपार्श्वजिनवर तिरेभविबहुतारही । मुझतारजिनवरशरणआयोविरदतोहिनिहारही।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप, ज्ञान,निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय
अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंचकल्याणक (दोहा)

गर्भ-ग्रीवक मध्य थकी चये षष्ठीभाद्रवसेत पृथिवी देवि उर अवतरे जजूं मोक्ष के हेत ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भाद्रपद शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म-जेठ शुक्ल द्वादशिविषै जन्मे सुरपतिराय । नृत्यत ध्वनिकरजजे मैं जजहूं गुणगाय ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जेष्ठ शुक्ल द्वादशी जन्मकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप-तृणवतनजसाम्राज्य तप धरयोअरणिमेंजाय । जेठ शुक्लद्वादशिविषे जजूं पद्मयुगध्याय ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रायजेष्ठशुक्लद्वादशी तपकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान-कृष्णषष्ठि फागुणहने घातिकर्मधरधीर । कह्योधर्मलहिज्ञानजिन जजूं हरो भवपीर ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेद्राय फाल्गुण कृष्ण षष्ठी ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण-सप्तमिफागुणकृष्ण ही हनि अघातिशिवथान । गएसमेदाचलथकी जजूं मोक्षकल्याण ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्णसप्तमी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ।

अथ जयमाला । (दोहा)

महाअर्घ-जिनसुपार्श्वके चरणयुग नमूंहियेधरध्यान । सकलतत्वज्ञायकसुधी घायककर्मवितान ॥१॥

चौपई-देवसुपार्श्वतणेपददोय । त्रिविधनमूंअतिहरषितहोय । तजमांधग्रीववनारसराय । सुरप्रतिष्ट

पृथ्वीदेमाय ॥ २ ॥ तिन के गर्भलियो अवतार। सितभाद्रवषष्ठीदिनसार। जन्मजेठसुदि द्वादशिभयो। वंशइक्ष्वाककृतारथथयो ॥३॥ हरितवर्णतनदुयसैडंड। आयुपूर्वलखवीसअखंड। राज्यपूर्वलखचौदहभोग जेठ शुक्ल द्वादशिधरयोग ॥ ४ ॥ सप्तवर्षतपकरवरवीर। ध्यानखडगगहिसाहसधीर। घातिहनेलहि केवल ज्ञान। फागुणवदिछठतूर्य कल्यान ॥ ५ ॥ सुरपतिनरपतिखगपति आय। थुतिकीनीकिम कहे बनाय। पै तुम भक्ति थकी नरनाथ। करूंनिलज्जह्वैधरसिरहाथ ॥ ६ ॥ जय जय दोष अष्टदशाहंत। जयजय शिव सुन्दरिके कंत। जय जय निराभरणनिर्मोह। जय जय निरआयुधनिरकोह ॥ ७ ॥ जय निरलोभनिराकृतमान। जय शिवपंथदिखावन भान। जय त्रिनकारण जगहितकार। पतितउधारन विरदनिहार ॥ ८॥ आयोशरण तिहारा नाथ। इस भवमें डूबनगहि हाथ। काढि नावि विलम न कर देव। सही विरद तुमतारणएव।

दोहा—हन अघातिसंमेदतें फागुणसप्तमिस्याम। जिनसुपार्श्वशिव को गये नमें जोड़कर राम ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महा अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥इति श्रीसुपार्श्वनाथजिन पूजा संपूर्णा ।७

८ अथ चन्द्रप्रभ जिन पूजा प्रारभ्यते।

(रामचन्द्र कृत) (अडिल)

स्थापना–शुभ अतिशय चौतीस प्रातिहारिज अधिकाईं। अनंत चतुष्टययुक्त दोष अष्टादश नांही ॥
आह्वानन विधिकरूं नाय सिरसुध कर मन ही। लोक मोह तम हरन दीप अद्भुत शशिजिन हो।१।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक। गीताछन्द।

जल–हिमशैल निर्गत तोय शीतल मधुर सुरग थकी परै। भरभृंग जिनवर चरण आगे धारदे भवमृत हरे ॥
श्रीचन्द्रप्रभ द्युतिचंदको पद कमलनख शशिलग रहे। आतंकदाहनिवारमेरी अरजसुनमैं दुख सहे॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्युजरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चंदन–भवताप दाहदहंत मोको एकछिन न विसार ही। घनसार मलयथकी जिनेश्वर पूजहूं दुख टार ही
श्रीचन्द्रप्रभ द्युतिचंदको पद कमलनख शशिलग रहे। आतंकदाह निवारमेरी अजरसुनमैं दुख सहे ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा
ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षत–संसार उदधिअपारतारण भक्तिप्रभु तुमकी सही। शुभशालिपुंज जिनाग्रधरिहैं लहैवसुगुणवसुमही
श्री चन्द्रप्रभु द्युतिचंदको पद कमलनख शशिलगरहे। आतंकदाह निवारमेरी अरज सुन मैं दुखसहे ॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय
पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्पं–अतिसुभट मार प्रचंड शरतें हने सुरनर पशुसबै। शुभकुसुमसों पद पूजिहों जिनहरो मनमथदुखअबै ॥
श्रीचन्द्रप्रभु द्युतिचंदको पद कमलनख शशिलग रहे। आतंकदाह निवारमेरी अरजसुनमैं दुख सहे ॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामबाण
विनाशनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्य–यहक्षुधा मोकोदहै नितहीनेकसुख नहिंपाव हीं। चरुमिष्टतैंपद पूजिहूं जिन क्षुधारोग नसावहीं ॥
श्रीचन्द्रप्रभु द्युतिचंदको पद कमलनख शशि लगरहे। आतंकदाह निवारमेरी अरजसुनमैं दुखसहे ॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग
विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–अतिमोह तम ममज्ञानढाप्यो स्वपरपद नहि वेवही। तुमचरण पूजूं रतनदीपक करो तम को छेवही ॥

श्रीचन्द्रप्रभु द्युतिचंदको पद कमलनख शशिलग रहे। आतंकदाह निवारमेरी अरज सुनमैं दुखसहे ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप—मलयअगर सुगंधसौरभ थकी अलिवहु आवही। जिनचरण आगेधूपखेये कर्म वसु जर जावही ॥

श्रीचन्द्रप्रभु द्युतिचंदको पद कमल नख शशिलग रहे। आतंकदाह निवारमेरी अरज सुनमैं दुखसहे।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल—शुभमोक्षमग अंतराय रोको मोहिनिरबलठानिके। जिन मोक्षदो तुमचरण पूजूं फलमनोहर आनिके

श्रीचन्द्रप्रभु द्युतिचंदको पद कमलनख शशिलगरहे। आतंकदाह निवारमेरी अरजसुनमैं दुखसहे ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ—जलगंध तंदुल पुष्पचरुले दीपधूप फलौघही। कनथाल अर्घबनाय शिवसुख रामचंद लहै सही ॥

श्रीचन्द्रप्रभु द्युतिचंदको पद कमलनख शशिलग रहे। आतंकदाह निवारमेरी अरजसुन मैं दुखसहे।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पञ्चकल्याणक । दोहा ।

गर्भ–चैत्र असितपंचमि चये, वैजयंततैं इन्द । उदर सुलक्षणा अवतरे, जजूं त्रिविध गुण वृन्द ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय चैत्रकृष्णपंचमो गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म–असित पोह एकादशी, जन्मे युतत्रय ज्ञान । वासव उत्सव कर जजे, जजहूं जन्म कल्याण ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पौषकृष्णएकादशी जन्मकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–चन्द्रपुरी साम्राज्य तज, कृष्ण एकादशी पोह । धरो उग्र तप बन विषे, जजूं नाशहित द्रोह ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पौषकृष्ण एकादशी तप कल्याणकायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–फागुण सप्तम कृष्ण ही, घातिहने लहिज्ञान । भव्या [illegible] बोधे घने, जजहूं ज्ञान कल्याण ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्णसप्तमी ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्पपामीति स्वाहा।

निर्वाण–कृष्ण फाल्गुण सप्तमी, शेष कर्म हनि मोष । गए समेदाचल थकी, जजूं गुणन के कोष ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्णसप्तमी मोक्षकल्याणकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महार्घ-वसुजिन वसुकम हानिकै, वसेधरा वसुजाय। हरो हमारे कर्मवसु, नमूं अंगवसु नाय ॥ १ ॥

(अहो जगत गुरु देवकी ढाल।)

अहो चंद्रद्युतिनाथ ज्ञायक अंतरयामी। सकललोक तिरकाल लखे जगपति गुण धामी ॥ जे चर अचर अवार अनागत तीत उपाये। लोकालोक निहारलखे कछु नांहि छिपाये ॥ २ ॥ शाखा ज्यों करमाहिं सिधारथ धार निहारे। अथवा अंगुरी रेख लखै करयुत इकवारे। ऐसो ज्ञान अपार और कहूं नाहि सुनो है ॥ दरशन को परताप तुहे जिन माहिभनो है ॥ ३ ॥ मैं दुःख पाये घोर चतुरगति माहि घनेरे। तुमतें छाने नांहि कहा भापूं जिन मेरे ॥ पैं शिशु की सव वात ख्यात पित जननी जाने। मांग्या विन नहि देय तोय पय धाननखाने ॥ ४ ॥ देखो करम अपार सुभट जड़ चेतन नांही। चेतन को कर रंक चोर जिम वांधत जांही ॥ सातूं अवनि मझार नरक दारुण दुःख देही। कोऊ शरणै नांहि धर्मबिन निश्चय येही ॥ ५ ॥ तिर्यच् गति दुःख घोर सहे विन संयम धारे। भूख प्यास लदिभार आर दे पीठ मझारे ॥ मारत वंधक धाय जाल मधि उडन पखेरू। पकड कसाई लेय शरण नाहीं जिहि वेरू ॥ ६ ॥ मानुषगति कुल नीच विकल इंद्रीचख नांही। भूपति आगे दौड़ तुवक कंधे धरिजांही ॥ अहनिशि चौकी देह मेघ सिय घाम सवेही। विन दरशन दुःख यह घने चिरकाल लहे ही ॥७॥ कोऊ

पुण्य वसाय बालतप तैं सुरथायो। हस्ती घोटक बैल महिष असवारी धायो॥ पूरण आवज थाय तबे माला मुरझानी। आरतितैं तज प्राण कुसुमभ वपाय अज्ञानी॥ ८॥ ऐसे दुःख अपार सहे थिरता नहीं पाई। क्रोधमान छल लोभ थकी दिन दिन अधिकाई॥ तुम करुणा निधि लेख शरण आयो ततकारी। दुःख को कर निरवार अहो जगपत जगतारी॥ ९॥ जगनायक जगदीश जगोत्तम दिष्ट निहारो। मोकोदास विचार करो वपुतें निरवारो॥ या वपुसगति पाय सहे दुःख और न हेती। यह निश्चैकर जान लखे तुमवाणी सेती॥ १०॥ करम विचारे कौन भूल मेरी अधिकाई। अग्निसहे घनघात लोहकी संगति पाई॥ ऐसे या वपुसंग सहे दुःख औरन सती। धन वाणी तुम देव सुनी गुरु के मुख एती॥ ११॥ तुम अनुकंप वसाय तजूं दुर ध्यान विकारो। वरनादिकतें भिन्न लखूं चिद्रूप हमारो॥ ज्योति सरूपी देव वसै याही घट मांही। ढूंढूं कौन सथान लखूं तुम ध्यान उपाही॥ १२॥ तेरे ध्यान प्रताप करम जरजांय अनंता। रामचंद्र कर ध्यानलहे सुख नरगुणवंता॥

सोरठा—इस भव सुख अपार, और भव सुरपदपावै। अनुक्रम तें निरवाण, जिके सुरधर कर गावै।१३।

दोहा—वसु द्रवले सुधभावतें, जजूं तिहारे पाय। देह देवशिव मुझिअवै, अहो चंद्रद्युति राय॥ १४॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीचन्द्रप्रभ जिन पूजा संपूर्णा।

९ अथ पुष्पदन्त जिनपूजा प्रारम्यते ।

(रामचन्द्र कृत) (अडिल)

स्थापना– तीन गुप्तिव्रत पंच महा पण समति ही । द्वादश तप उपदेश उधारे संतही।
पुष्पदंत जिन पाय नमूं सिरनायहो । आह्वाननविधि करूं एक चित थायहो ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्र अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्री पुष्प दंत जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम् ।

अथ अष्टक । सोरठा ।

जल–क्षीर उदधि समनीर भरझारी त्रयधारदे । नसे जन्म मृतपीर । पुष्पदंत जिनवरजजे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
चंदन– कृष्णागर घन सार कुंकुमचंदनमेल के । भवआतापनिवार पुष्पदंतजिनवर जजे ॥ २ ॥,
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्तायसंसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–तंदुल धवल अनूप। मुक्ता फल शशि किरण सम। होय मुकति को भूप पुष्पदंत जिनवर जजे ३

ओं ह्रीं श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–कुसुमकल्प तरुलेय मन मोहन चख भावने। बाण मनोजहरेय पुष्पदंतजिनवरजजे ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्य– खंडघिरत चरुसार रसना रंजित आनिये। होय क्षुधा निर्वार पुष्पदंतजिनवर जजे ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप– दीपरतन मय ज्योति कंचन भाजन में धरे। ह्वै है ज्ञान उद्योत पुष्पदंत जिनवरजजे ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–अगर कपूर मिलाय धूपदहन शुभ कीजिये। अष्टकर्मजरजाय पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ७ ।

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–उत्तम फल अतिसार नासा नेत्र सुहावने। होय मुकति भरतार पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ८॥

ओं ह्रीं श्री पुष्प दंत जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलंनिर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–अर्घ अनूप बनाय रामचंद वसुद्रव्यतें। होय मुक्तिको राय पुष्पदंत जिनवर जजे ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। दोहा।

गर्भ–फागुण नवमी कृष्ण ही आरणस्वर्गविहाय। रामा देउर अवतरे जजूं गर्भ दिन ध्याय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्ण नवमी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म–अगहन सित प्राँत पद विषे। ज्ञान तीन युत देव। जन्मे हरि सुरगिर जजे। जजूं मोक्ष हित एव ॥२॥

ओं ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्लप्रतिप्रदा जन्मकल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

तप– सित प्रतिपद अगहनधरचो। तप तज राज महान। सुरनर खगपति पद जजे जजहूं तपकल्याण ३

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदत जिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्लप्रतिपदा तप कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–दोयज कार्तिक शुक्ल ही घाति कर्महनि ज्ञान। लह्यो धर्म दुविधा कह्यो जजहूं ज्ञान कल्याण ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदत जिनेन्द्राय कार्तिक शुक्ल द्वितीया ज्ञान कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

निर्वाण–भाद्रव सित अष्टमिहने । सकलकर्म शिवथान। गए समेदाचलथकी जजहूं मोक्ष कल्याण।

ओंह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय भाद्रपद शुक्ल अष्टमी मोक्षकल्याणकाय अर्घनिर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–पुष्प दंत के विमल गुण सकलसुखाकर पेख। सुमर सुमर वरणन करूं। करकरहर्षविशेष।

(ढाल श्री जिन वंदिस्या जगसार हो)

पुष्पदंत जिनवंदिस्या जगसार हो, काकिंदीपुरथान पितानमूं सुग्राव जी जगसार हो वंश इक्ष्वाक महान। महानवंश इक्ष्वाक में चय स्वर्ग आरणतें भये। धनदेवि रामा मातके उरकृष्णफागुण नवथये। गर्भावतार कल्याण सुरपति ठानि सुरलोकेंगये। जननी हि सेवा राखि धनपति मास नव सुखसों भये॥ २ ॥ अगहन सित प्रतिपद भली जगसारहो। जन्म सुराधिप जान। मेरु सुदर्शन लेगये जगसारहो। क्षीरोदक शुभ आन। आन जल अभिषेकर पुनि नृत्य तूर वजाइये। कह पुष्पदंत पिता सुजननी सौंपिमंगल गाइये। पुनिनृत्य तांडव हरी कीनों कौन उपमा दीजिये। जन्मा कल्याण उछाह मन में राखनितही पूजिये ॥ ३ ॥ तन शशीसम धन शत भलो जगसार हो। आयु पूरव लख दोय लख पूरव सुख भोग के जगसार हो। विरकत भवतें होय। होय विरकत सुकल पडिवा मास मगसिर बन गये। नमः सिद्धेभ्यः कह लौंच कीन्हो ध्यान में प्रभुथिर भये। हरि केश पंचम उदधि खेपे आय

पद पूजाकरी। निः कर्म कल्याणकसुमहिमा पुण्य करता अघहरी ॥ ४ ॥ बरस चार बहु तप करे जग सार हो। ध्यान अगनि पर जाल। कातिक सुदि दोयज भली जगसार हो। घाति चतुक लघु बाल। लघु बाल घाति उपाय केवल लोक करवत पेखही। समवादि सहित विहारकर कैकह्यो धर्म विशेष ही। तुम बचन अमृत पानते उर दाह ततछिणं ही मिटचो। लख ज्ञान कल्याणकसु महिमा मोहतम मेरो फटो ॥ ५ ॥ गणधर हरि सुर थुतिकरी जगसार हो। सो थुति उनसों होय। धन दिन यो धन या घडी जगसार हो। धनधन मोचखि दोय। मोचखि धन तुम दरसदेख्यो परसि पद धन करभये। धन धन ये वसु अंग मेरे ध्यान कर तुमकोनये। धन भई रसना आज मेरी नाथ तुम थुति करत ही। धन उभै पद तुम सरन आयो सबै कारज सरन हीं ॥ ६ ॥ निर अंबर सुंदर घने जग सारहो। दिग अंबर सुखदाय। निरा भरणं तन अति लसै जगसार हो। कोरवि को शशिकाय। शशि काय लांछन अभ्रसम दिन हीन वृद्धि सदाभ्रमै। तुम चरण नखद्युति कोटि रविबिन और उपमाको फसै। दरसन ज्ञान चरित्र भूषण देख शिवतिय होखुशी। आलिंगदेने भई सन्मुख तोही छवि लखि अतिहसी ॥ ७ ॥ निर आयुध निरभैघने जग सारहो। कोप तणो नहिलेश। मोह सुभट किम जय करो जगसार हो। युत परिवार महेश। महेश हस्ती ध्यान पै सन्नाहसंयम असि छिमा। प्रय लाय असुरन संग लाग्यो रही ना तसुकी जमा ॥ सोफेर निकट न आवही युतसमर सुपननके विषे। हरि हरादिक कै हिये बासो करै जगकी को अखै ॥ ८ ॥ तुम गुण गणपति मन धरै जगसारहो। पै वच कहे ना जाय। ज्यों तारे स-

गगन में जगसार हो पै कर में न समाय। कर में न तारे आयज्यों गुरु सहस रसना धारही। वरनन करत नहीं पार पावे, रह्यो पौरषहारी ।मैं बुद्धि बिन थुति करन उमग्यो होय कैसे नाथजी। शशि विंवजल में बालबिन बुधि गहे किम गहिहाथ जी ॥ ९ ॥ मैं विनऊं कर जोरि के जगसारहो। तुम गुण को नहिछेव। इस भव में वहु दुख सह्या जगसार हो। देहु अचल पद देव। देव अचल पद देहु मोको शरण चरनन की गही। कहे रामचंद्र लहंतशिवजे गायसीसुरधरसही। इत होय मंगल नितनये घर ऋद्धि सिद्धि अनेकही। अज्ञान तिमिर विलाय ततछिण हिये होय विवेक ही ॥१०॥

घत्ताछन्द–अष्टमि सित भाद्रं नासि अघातं पुष्पदंत शिवनगरगयं । सुरनर खग आये मंगल गाये गिरि समेद कल्याण थयम् ॥ ११ ॥

ओं ह्रीं श्री पुष्प दन्त जिनेद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताये अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति श्री पुष्पदंत जिन पूजा संपूर्णा ॥ ९ ॥

१० अथ श्रीशीतलनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

रामचन्द्रकृत। (अडिल)

स्थापना–शीतलयुगक्रमनमूंधर्मदशधा इमभाख्यो। उत्तमक्षमासुआदिअंतब्रह्मचर्यसुआख्यो।
सुनप्रतिबुधह्वैभविमोक्षमारगकोलागे। आह्वाननविधिकरूं चरणयुगकरअनुरागे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। (गीताछन्द)

जल–ऋतुशरदइंदुसमान अंगसुस्वच्छशीतल अतिघणो। भरहेमझारीधारदेवै नीरहिमवतगिरतणों॥
भविपूजशीतलनाथजिनवर नशैंभवकेतापही। आतंकजाय पलाय शिवतिय होयसन्मुखआपही॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप, ज्ञान,निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय
जन्ममृत्युजरारोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥
चन्दन–कर्पूरनीरसुगंधकेशरमिश्रचंदनावना। जिनराजपूजेदाहनासै होय सुखरलियावना॥
भविपूजशीतलनाथ जिनवर नशैंभवके तापही। आतंकजायपलायशिवतियहोयसन्मुखआपही॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
संसारातापरोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षत–उत्तमअखंडितशालि उज्वलदुरितखंडनकारही। करपुञ्जश्रीजिनचरणआगै अखैपदकरतारही।
भविपूजशीतलनाथजिनवर नशैं भवकेतापही। आतंकजायपलायशिवतियहोयसन्मुखआपही॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान,निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय
अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्प–निरदोषऔघअनेकविधिके कुसुमपावनल्यावही। जिनचरणचरचउछाहसेती समरबाण नसावही।
भविपूजशीतलनाथ जिनवर नशैं भवकेतापही। आतंकजायपलायशिवतियहोयसन्मुखआपही॥
ओं ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्य–पकवानसुन्दरसुरहिघृतकर खंडरसके मिष्टही। धरकनकभाजनपूजजिनपदक्षुधानासै दुष्टही।
भविपूजशीतलनाथजिनवर नशैंभवकेतापही। आतंकजायपलायशिवतिय होयसन्मुख आपही।
ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–दीपज्योतिउद्योतसुन्दर कनकभाजनधारिये। जिनपूजभविजनमोहनाशैं स्वपरतत्त्व निहारिये ॥

भविपूजशीतलनाथ जिनवर नशैंभवके तापही । आतंकजायपलाय शिवतिय होय सन्मुख आप ही ॥

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप-श्रीखंड अगरकपूर उत्तम कनकधूपायन भरै । भविखेय श्रीजिन चरण आगे दुष्ट कर्म सबै जरै।
भविपूज शीतलनाथ जिनवर नशैं भवके तापही। आतंकजाय पलाय शिवतिय होय सन्मुख आपही॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल-फललेहि उत्तममिष्ट मोहन लौंग श्रीफलआद ही। जिनचरण पूजे मुक्तिकेफल लहैअचल अनादही।
भविपूज शीतलनाथ जिनवर नशैंभवके तापही। आतंकजाय पलाय शिवतिय होय सन्मुख आपही ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ-नीरगंध सुगन्ध तंडुल पुष्प चरु अति दीपही। कर अर्घ धूप समेत फलले रामचंद अनूप ही ।
भविपूज शीतलनाथ जिनवर नशैं भवके ताप ही। आतंकजाय पलाय शिवतिय होय सन्मुख आपही।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पञ्चकल्याणक । दोहा ।

गर्भ–चैत्र कृष्ण अष्टमि चये, अच्युत तें भगवंत । उदर सुनंदा अवतरे, जजूं मोक्ष के कंत ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय चैत्रकृष्ण अष्टमी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म–कृष्ण द्वादशी माघकी, जन्मे श्रीजिनराय । उत्सव कर वासव जजे, मैं जजहूं गुणगाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय माघकृष्ण द्वादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–असितमाघ द्वादश तजी, तृणवत् भूतिमहान् । नगन दिगंबर वन वसे, जजूं दशम भगवान् ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय माघकृष्ण द्वादशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान–पौष चतुर्दश स्याम ही, शुक्लध्यान असिधार । हने कर्म चउ घातिया, जजूं देवमुझ तार ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय पौषकृष्ण चतुर्दशी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाण–अष्टम सित आसोज की,गए मोक्ष भगवान् । वसु विधि पद पंकज जजूं,मोहि देहु शिवथान ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय आश्विन शुक्ल अष्टमी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

अथ जयमाला ।(दोहा) ।

म ःअर्घं–शीतल तुमपद कमल युग, नमूंसीस धरहाथ । भवदधि डूबत काढमो, कर आलंवदे नाथ ॥

(ढाल पंचमंगल की)

शीतल पद युग नमूं उभै कर जोर ही। भद्रिकापुर अवतरे अच्युत पद छोर ही॥ दृढ रथ तात त्रिख्यात सुनंदामाय जी। चैत्र कृष्ण वसुगर्भ लयो सुख दायजी॥ सुखदाय गर्भ कल्याण कीजो आय सुरपति सब मिले। जननीहि सेवा राख धनपति आप सुरलोकैं चले॥ षट् मास ले नव मास दिन में वारत्रय मणि वरषिये। गर्भाकल्याण महंत महिमा देख सबजन हरषिये॥ ७॥ पूर्वाषाढ नक्षत्र माघवदि द्वादशी। जन्मे श्रीजिननाथ योगिणी सब हंसी॥ चतुरनिकाय मझारि घंटादि बजे भले। नये मौलि पुनिपीठ सबै हरि के चले॥ चले पीठ अवधि तैं जिन जन्म निहचै हरि लख्यो। डग सप्त चलि नुति ठानि वासव मेर चलने को अख्यो॥ जिन लेय पांडुक वन त्रिषे अभिषेक कर पूजा करी। पितमातदे जन्मा कल्याणक ठांनि थल चाल्यो हरी॥८॥ हेम वरण तन तुंग नव्वै धनुको सही। लक्षण श्रीवछ आय पूर्व लखकी कही। नीति निपुण कर राज तज्यो तृणवत तवै। लौकांतिक सुर आय संबोध चले सवैं। संबोधि आये माघ द्वादशी कृष्ण श्रीजिन वन गये। नमः सिद्धेभ्यःकहि लौंचकीन्हो उपधितज कर मुनि भये। सुर असुर नृपगण ठानि पूजा धवल मंगल गावही। निःकर्म कल्याणक सु-महिमा सुनत सब सुखपावही॥९॥षष्ठम धर निज ध्यान विषे प्रभु थिर भये। पूरन कर अनिकाज सिंह पुरमें॥ गये षीर दानयुत भक्ति पुनर्वसुजीदियो। हरषिदेव आश्चर्य पंचततछिणकियो। कियो आश्चर्य रत्नवर्षे अर्द्धद्वादश कोटिही। धर ध्यान शुकल उपाय केवल घाति चारों तोड़ही। चर अचर लोक अलोक

युगपद देख सब ही वरनिये। शतइन्द्र ज्ञान कल्याण उत्सव पौष वदि चउदस किये ॥१०॥ जो जन साढासात लसैं सम वादि ही। लखि मुनि में गणदेव इक्यासी आद ही। पूरव सहस पच्चीस हीन वर्ष तीन ही। विहरे केवल पाय आयु भई छीन ही ॥ भई छीन समेद गिरते अश्विन सित अष्टमी सही। असि ध्यान शुक्ल थकी अघाते हने मुक्ति तिया लही। शतइंद्र आय कियो महोत्सव मोक्ष मंगल गायही। मैं नमूं शीलतनाथ केपद अमल गुण गण ध्यायही ॥ ११ ॥ वसुखिति वसु क्रम हान वसे वसु गुण मई। ज्ञानावरणजु घाति विश्व जानो सही ॥ देख्यो लोक अलोक हने द्रसनावली ॥ वेदनको कर नाश अवाध भये वली। पुन वली शुद्ध चरित्र में थिर मोहनाश थकी भये ॥ अवगाह गुण क्षय आयतैं निरकाय नाम गये थये। गुण अगुर लघुगोत के अंतराय क्षय वलनंत ही ॥ सिद्ध भये शीतलनाथ जिन तिरकाल वंदैं सन्त ही॥१२॥वसु गुण ये विवहार नियत अनंतही। जानेगणधर पैन वखानत अंत ही॥ ज्यों जल निधि विसतार कहै कर तैं इतो। वालन मरम लहंत न जानत है कितो। कितनों न जाने उदधिहैंजिम तुहे गुण वरनन करूं। मैं भक्ति वश वाचाल है कछु शंकमन नांही धरूं गुण देह तेरे करूं विनती अहो शीतलनाथ जी। चंदराम शरण निहार आयो जोर करके हाथजी॥१३॥

दोहा—शीतलके पद कमलयुग,त्रिविध नमूं सुखदाय। भवदुःख ताप मिटाय मो, अहो दशम जिनराय ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घं पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ इतिश्रीशीतलनाथजिन पूजा संपूर्णा।

११ अथ श्रीश्रेयासनाथ जिन पूजा प्रारभ्यते।

(रामचंद्रकृत) अडिल।

स्थापना–सभा लोक सुन धर्म अंग द्वादश श्रुत सारे। भये अनंदित सवै श्रेय जिन भवि बहुतारे।
प्रशम चित्त कर कोप हन्योवंदू युगकरही। आह्वाननविधिकरूं चरण युग हिय में धरही ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांस नाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र अत्र ममसंनिहितों भव भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥१॥

अथ अष्टक (छंद मोतीदाम)

जल–हिमन उद्भव स्वच्छ गगोदकं। कनककुंभ भरेण सुगंधिना। जन्म मृत्यु जराक्षय कारणं । परि
जजे श्रेयांस पदाब्जकम् ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय जन्म
मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चंदन–अगर चंदन कुंकुम सद्रवं। भ्रमर कोटिभ्रमंति सुगंधिना। प्रचुर दुःख भवार्णव नाशनं । परजजे
श्रेयांस पदाब्जकम् ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग बिनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–सरलशालि अखंड मनोहरं। लसत सोम मरीचि समानकं। सुभग सौख्य अखै पद कारणं। परिजजे श्रेयांस पदाब्जकम् ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–कुसुम औघ कल्पतरुपावने। हरत चक्षु सुगंध सुहावने। अशुभ काम मनोद्भव नाशनं। परिजजे श्रेयांस पदाब्जकम् ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–सरस मोदकघेवरवावरं। लसत कांचन पात्र चरोत्तमम्॥ प्रचुररोग क्षुधा निर नाशनम्। परिजजे श्रेयांस पदाब्जकम् ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप– कनककांचन पात्र सुदीपकं। लसत ज्योति विवर्जित धूम्रही ॥ अखिल मोहविध्वंसन कारणं।
परिजजे श्रेयांस पदाब्जकम् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग बिनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–अगर कृष्ण कपूर सुचंदनं। सुराभता गतषट्पदवृंदही। निचय कर्महुताशन जारनं। परिजजे श्रेयांस पदाब्जकम् ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय,धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल–मधुर श्री फल चारु इत्यादिही। ललित गंध महारस अद्भुतं। अतुल सौख्य महाफल दायकं,परिजजे श्रेयांस पदाब्जकम् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये, फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ–सलिल गंध सुतंदुल पुष्पकं चरुसुदीप सधूप फलौघकं। परम मुक्ति सथान विदायकं परिजजे श्रेयांस पदाब्जकम् ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंच कल्याणक । दोहा ।

गर्भ–पुष्पोत्तरतैं हरिचये, विमला उर अवतार । षष्ठी जेठ असेत ही, जयो जजूं भवतार ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा॥

जन्म–फागुण स्याम एकादशी, जन्मे श्रीभगवान । चतुर निकाय सुराधिपा, जजे जजूं हितज्ञान ॥२॥

ओं ह्रींश्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्रायफाल्गुण कृष्णएकादशी जन्मकल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा॥

तप–फाल्गुण ग्यारस कृष्ण ही, तज उपाधि दुखकार। धरो ध्यान चिद्रूप को,जजूं देह मतिसार ॥ ३ ॥

ओं ह्रींश्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रायफाल्गुण कृष्णएकादशीतप कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥

ज्ञान–माघ अमावस ज्ञान ही, उपज्यो केवलसार । घाति कर्म चउ जर गये, जजूं भवार्णव तार ॥ ४ ॥

ओं ह्रींश्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय माघ कृष्ण अमावस्या ज्ञान कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा॥

निर्वाण–सावणशुदि पूनिम गए, हन अघातिशिवथान । सुरनर खगपति मिल जजे,जजूं मोक्ष कल्याण॥५॥

ओं ह्रींश्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल पूर्णिमा मोक्षकल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥

अथ जय माला। दोहा।

महाअघ–श्रयतणे पद कमल युग,नमूं उभैकर जोर। प्रचुर इह भवतार तुम, मो निश्चय नहि और।

(ढाल पंच मंगलकी)–जय जय जय श्रेयांस नमूं सिरनाय ही । चय पुष्पोत्तरथकी,सिंहपुर आय

ही ॥ विमला उर अवतार जेठ वदि छट लियो। गर्भ कल्याणक इंद्रसवे मिल कै कियो। गर्भ कल्याण सुरपति रुचि रुवासिन प्रति कह्यो। तुम करो सेवा जननिकेरी छपनसुन कर सुख लह्यो। पुन धनदवर्षा रतन केरी। मासषट् नवलोंकरी। वा समे हिर्दै वसो मेरे धन्य दिन धन वा घरी॥ १ ॥ फागुण ग्यारस कृष्ण ज्ञान युत त्रय भये। चले सिंहासन मौलि अवधि लख हरि नये। सब मिल उत्सव ठांनि इन्द्र शत आय ही। मेरु शिखर लेंजाय सनान कराय ही। कराय सनपन पूज कीनी वसन भूषण धार ही। लख रूप त्रिपति न इन्द्र हूवो सहस लोचनकार ही। नृपविमल के दरबार सुरपति नृत्य तांडव अति करो। श्रेयांसनाम उचार वासवपिता लखि आनंद भरो ॥ २ ॥ श्रमजल रहित शरीर आदि संहनन लह्यो। आदि लसै संस्थान धवल शोणित कह्यो। बलअनंत वपू सोहै नही मलतन विखै शुभलक्षण शुभगंध वचन हित मित अखै ॥ अखै हितमित सहज अतिशय लिये दश जिन जन्म ही। तन हेम अस्सी डंड आयसु लाख चवरासी कही। कर राज वरष वयाल लख ही त्याग तृणवत बन गयो। सुर असुर फागुण कृष्ण ग्यारस ठानि उत्सव सव नये ॥३॥ धरत चरित मन ज्ञान जिनेश्वर को भयो। षष्ठम पूरणठान अरठपुरमेंगयो। तहां दये पय दान नाह नरनंदही। वरखेरतन अपार भयो सुखकंदही। सुखकंद वरष उभै करो तप घोर द्वादश विधितदा। असि ध्यान शुकलथकीहने चव घातिदुस्तरविधि यदा ॥ सुर असुर ज्ञान कल्याण पूजा ठान वहुथुति ऊचरी। सो द्योस पावन माघ मावस सकल मंगल की घरी ॥ ४ ॥ तब ही केवल ज्ञान भये जखि धनदही। समोशरण रचसार लखे सुख वृंदही ॥ मध्य

महात्रय पीठ कमल परि जिन ठये। अंतर अंगुल चार अनन्त चतुष्ठये । भये अनंत चतुष्ठ प्रभु सिर छत्रतीन विराजही। लखि चवरचवसठकरैअति सित थकी शशिद्युतिलाजही। सुर पुष्पवृष्टी वजे दुंदुभि तरु अशोक सुहावनो । दिव्यधुनि सुन सुख होत श्रवण न प्रभा मंडल पावनो॥५॥शत योजन सुरभिक्ष व्योमगति हल तना। छाय नआन न चार भौह चख चलतना ।सव विद्या परमेश न प्राणी वधहवै। बधै केश नख नाहि क्षुधादि न संभवै। संभवै मागधि भाषा सवजन तोष षट ऋतु फल फलै। सव सत्त्व मैत्री आन अठ दह मुकर भूवृष चरचलै॥ युत गंधवात गंधोद वरषा विमल नभ सुरजै करै। खित बात सोधै द्रव्यमंगल कमल पद तल सुर धरै ॥ ६ ॥ इम गुण युक्त जिनेश विहर भवि तार ही। बरष लख इक वीस ज्ञान प्रभुधार ही। शेष रह्यो इकमास समेदा चल ठये। हन अघाति शिवथान पूर्ण श्रावण गये। गए श्रावण सुकलपूनिम मोक्ष तवहरि आयही। वसुभेव पूजा ठान उत्सव मोक्षमंगल गायही सो मोक्ष मंगल देहु मोको श्रेययुत श्रेयनाथजी। चंदराम ध्यावै बंदि सतवै जोरके युग हाथ जी॥ ७ ॥

दोहा-श्रेयतणे पद मोहिये, तिष्ठो आठों याम। मो हियश्रिय पद विषै, रहो होय शिवधाम ॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान,निर्वाणपंचकल्याण प्राप्तायअनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति श्री श्रेयांसनाथ जिन पूजा संपूर्णा।

१२ अथ श्रीवासुपूज्यजिन पूजालिख्यते।

रामचंद्र कृत (अडिल)

स्थापना–वासपूजिजिननमूं रत्न त्रय शेखरधारो। द्वादश तप सिंगार वधूशिव दिष्ट निहारो।
कठालिंगनदेन लुब्ध ह्वै सन्मुख आई। आह्वाननविधि करूं वार त्रय मन वच काई॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक (छन्द त्रिभंगी)

जल–क्षीरोदधिनीरं निर्मलसीरं मिश्रगंध शुभ भृङ्ग भरं। जिन वर पद सारं जजुं अविकारं जन्म मृत्यु के दाहहरं। चंपा पुरथानं शुभ कल्याणं वासुपूज्य जिन राजवरं। वसुविधि कर अरचै भव दुख विरचै परिचै सब सुख तासु घरं॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥

चंदन–अति शीतल चंदन दाह निकंदन केसर अगर कपूर घसै। शुभ सौरभ आवै मधुकर ध्यावै पूज

जिनेश्वर पापनशै। चंपापुरथानं शुभकल्याणं वासु पूज्य जिन राज वरं। वसु विधि कर अरचै भव दुख विरचै परिचै सब सुख तासु घरं ॥ २ ॥

उों ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–सितशालि अखंडं दुरित विहंडं सोम समा मन हर लावै। श्रीजिन पद आगै पूज रचावै तुरत अखै पद भवि पावै। चंपा पुरथानं शुभ कल्याणं वासु पूज्य जिन राज वरं। वसु विधिकर अरचै भव दुख विरचै परिचै सब सुखतासु घरं ॥ ३ ॥

उों ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–सुर तरु के लावे चक्षु सुहावै कुसुम गंध दशों दिश ध्यावै। श्री जिनवर अरचै शिव तिय परिचै मदन वाण लघु नसजावै। चंपापुरथानं शुभ कल्याणं वासु पूज्य जिनराज वरं। वसुविधि कर अरचै भव दुख विरचै परिचै सब सुख तासु घरं ॥ ४ ॥

उों ह्रीं श्री वासु पूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण बिनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–चरु मिष्ट मनोहर घेवर बावर कनक थाल भर अति प्यारी। श्री जिनवर आगै पूज रचावै

हरो वेदना दुखकारी। चंपापुरथानं शुभ कल्याणं वासुपूज्य जिनराज वरं। वसुविधि कर अरचै भव दुख विरचै परिचै सब सुख तासु घरं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासु पूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–शुभ रतनसुदीपं कनकरकावी ललित ज्योतिधर प्रभुआगै। तम मोह नसावै अतिसुखपावै स्वपर लखै निजगुण जागै। चंपापुरथानं शुभ कल्याणं वासुपूज्य जिनराज वरं। वसुविधिकर अरचै भव दुख विरचै परिचै सब सुखतासु घरं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–अगर कपूरं चंदन चूरं शुभ धूपायण माहिभरै। श्रीजिन पद आगै खेय मनोहर अष्ट कर्म तत्काल जरै। चंपापुरथानं शुभ कल्याणं वासुपूज्य जिन राज वरं। वसुविधि कर अरचै भव दुख विरचै परिचै सब सुख तासु घरं ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–शुभ श्रीफल लावै लौंग मिलावै पूंगी खारिकमनहारे। श्रीजिनपद आगै पूजरचावै लहै मुक्ति फल सुखकारे। चंपापुरथानं शुभकल्याणं वासुपूज्यजिनराजवरं। वसुविधिकर अरचै भव दुख विरचै परिचै सब सुख तासुघरं ॥८॥

ओं ह्रीं श्री वासु पूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलंनिर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–अति निर्मल नीरं गध गहीरं तंदुल पुष्प सुचरुलावे। पुन दीपं धूपं फलस अनूपं अर्घरामकर गुण गावै। चंपापुरथानं शुभ कल्यानं वासुपूज्य जिनराज वरं। वसुविधिकर अरचै भवदुख विरचै परिचै सब सुख तासु घरं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंचकल्यणाक। दोहा।

गर्भ–महा शुकतैंचयलियो स्यामा उर अवतार। षष्ठी षाढ असेतही जजूं भवार्णतार ॥१॥

ओं ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय आषाढ कृष्ण षष्ठी गर्भ कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा

जन्म–चउदश फाल्गुण कृष्ण ही वासव जन्म कल्याण। कीनो उत्सव कर महा मैं जज हूं धरध्यान २

ॐह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेंद्राय फाल्गुण कृष्णचतुर्दशी जन्मकल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

तप–फागुण चौदस कृष्ण ही लख भव अनिति असार । राज्य त्याग तप वनधरो जजूं चरणसुखकार।

ॐह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेंद्राय फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी तप कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

ज्ञान–माघ शुकलदुतियाहने घातिकर्मधरध्यान । कह्यो धर्म केवल भये जज हूं ज्ञान कल्याण ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय माघ शुक्ल द्वितीया ज्ञान कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा

निर्वाण–भाद्रव चौदशि शुक्ल ही हनि अघाति भगवान । लही मोक्ष सुख मयसदा पूजूं मोक्षकल्याण ५

ॐह्रीं श्रीवासुपज्य जिनेन्द्राय भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी जन्म कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामातिस्वाहा

अथ जयमाला । सोरठा ।

महाअर्घ–अरुणवरण अविकार वासुपूज्य जिनकी छवी। ध्याऊं भवदधितार देहिसुमति विनती करूं।
(अडिल) वासुपूज्य जिनतनै पंच कल्यानही । चंपापुर में भये नमूं धर ध्यान ही। षष्ठी श्याम असाढ गर्भ विजयातने । महा शुक्रतें आय जिनेश्वर ऊपने ॥ २ ॥ फागुण चउदश कृष्ण जन्म प्रभु को भयो। तीनों लोक मझार महा आनंद थयो। नये मुकुट पुन पीठ सुरासुरकेहले । जन्म कल्याणक जान सबै वासव चले ॥ ३ ॥ मेरु शिखरले जाय सनान कराय ही । वासुपूज्य धरनाम पिता घर आयही । तांडव नृत्य महान शक्र हित धरकरो । भूप लख्यो वसुदेव महा आनंद भरो ।४। सत्तर धनुष उत्तंग काय जिम

सभै विनश्वर भानही। लक्ख वहत्तर आयु महिष चिह्न जानही। राज करो चिरकाल महासुखदायही। पुष्पांजलि शुभदेय संवोधे ज्ञान भावना भायही ॥ ५॥ फालगुण चउदसि स्याम देव ऋषि आयकैं । पाढल तरु तल जाय योग वन में धरो ॥ ६ ॥ मन ध्याय कैं। इन्द्र सिगार बनाय कल्याणक तप करो। पुरसिद्धारथ गये दान परजै भयो ज्ञान ततछिण ही जवै। षष्ठमपूरणठान अशन हित जिन तवै। वरष एक छद्मस्थ विविध विधि तप सुंदर दियो। वरषे रतन अपार हरख अनि ही भयो॥ ७॥ करी धर्म की करै। ध्यान शुक्ल असि थकी घातिचव जिनहरे। उपजो केवल उभै सित माघ ही । ठये चंपापुर वाह्य निरोधे योग ही। वृष्ठि मिटो भव दाघ ही।८। विहरे आरज देश बोधिभविलोग ही। मोक्ष कल्याणक हनि अघाति शिवथान गये जिन रायही। भाद्रवसित उचदशी सुरासुर ध्यायही।९। रामचन्द्र कर जोर नमैं करुणापती। थान पूज उत्सव करो । मंगल गान उचार महा आनंद धरो। मोकूं भवतैं तार अरज सुन मो इती।

घत्ताछन्द–चंपापुरथानं पंचकल्याणं सुरनर खग वंदित सबही। मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं वासुपूज्य दे शिव अब ही ॥११॥

ओं ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्री वासुपूज्य जिन पूजा संपूर्णा ॥ १२ ॥

१३ अथ श्रीविमलनाथजिनपूजा प्रारभ्यते।

(रामचंद्रकृत) अडिल।

स्थापना–परमसरूपी व्रती विवेकी ज्ञानी ध्यानी। प्राणीहित उपदेश देय मिथ्या तजध्यानी।
शिवसुख भोगी विमलपायवंदूयुगकरके। आह्वाननविधि करूं। त्रिविधि त्रय वार उचरके ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक। (छंद मोतीदाम)

जल–विमलशीतल सज्जलधारयं। जन्म मृत्यु जराक्षयकारयं। सकल सौख्यविधानमनायकं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन–अगर कृष्ण कपूर सुकुंकुमं। रणित भृंग घटावलि गंधनं। अखिलदुःखभवादिक नाशनं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम् ॥ २ ॥

उों ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–अक्षत उज्वल खंडन तीक्षणं। लसतचंद समान मनोहरं। त्रिगतदुःखसथानसुदायकं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम् ॥३॥

उों ह्रीं श्री बिमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प–कल्पवृक्ष भवेन सुगंधिना। कुसुमचारु हरे चख पावनं। प्रवल बाण मनोद्भवनाशनं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम् ॥४॥

उों ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–सरस मोदकमिष्ट मनोहरं सुभग कांचन पात्र सथापितं। असमदुःखक्षुधादिविध्वंसनं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम् ॥५॥ उों ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–मणिउद्योत महातम नाशनं। लसतदीपसुकांचन पात्रकं। अखिल मोहविध्वंसनकारणं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम् ॥६॥

ओं ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–अगर चंदन धूप सुगंधिनं। मधुपकोटि रवंत दिगाननं। अशुभ कर्म महादुःखजारनं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम् ॥ ७॥ ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्य ण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–सुपक्वमिष्टरसामृतपावनं। सुभगश्रीफलआदिफलौघकं। परममोक्षमहाफलदायकं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम् ॥ ८॥ ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–सलिलगंध सुतंडुल पुष्पकं। चरुसदीपसुधूपफलौघकं। परममुक्ति सथान विदायकं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम् ॥ ९॥

ओं ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घनिर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। (दोहा)

गर्भ–स्यामादे उर अवतरे सहसरारतैं आय। दशमी जेठ असेत ही जज हूं हरषउपाय ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय जेष्ठ कृष्ण दशमी गर्भ कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म–माघ शुक्ल तिथि चौथ को जन्मेसुरपति आय। सुरगिर सन पन कर जजे मैं जजहूं गुणगाय२।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्लचतुर्थी जन्म कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

तप–तज्यो राज कपिलापुरी जिनवर वन में जाय। चौथ माघ सित तप धरो जजहूं तूर वजाय ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्ल चतुर्थी तप कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–माघशुकलषष्ठी हने घाति करम धर ध्यान। कहो धर्म केवल भये जजहूं ज्ञान कल्यान ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्ल षष्ठी ज्ञान कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–अष्टमिसाढ असेतही हने अघातिशिवथान। गये विमल सुरनर जजे जजहूंमोक्षकल्यान ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय आषाढ कृष्ण अष्टमी मोक्ष कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–विमल विमल मति दीजिये हो करुणापति मोहि। करूं वीनती जोरकर नमूंनमूंपदतोहि।

(ढाल अहो जगतगुरु की)

अहो विमल जिनदेव सुनियो अर्ज हमारी। इस संसार मझार और न शरण निहारी। सुनिये हरि हर देव काल सबैही खाये। उनको सरनो कौन आप नहीं थिरताये ॥ २ ॥ तुम निरभै तजमोह ध्यानशुकल प्रभु ध्यायो। उपजो केवल ज्ञान लोका लोक लखायो। समोशरण की विभूति दोष इते

लखि भागे। सुपननतोढिगथाय असुरन के संगलागे ॥ ३ ॥ धरो जन्म नहि फेर मरन नहि निद्रानासी रोग नांहि नहि सोग मोह की तोरीफासी। विस्मय कोनांहि लेश धीरभय प्रकृतिविदारी। जरानांहि नहि खेद प्रस्वेद न चिताटारी ।४। मदनाही नहिवैर विषै नहि रति नहि काते। प्यासहनी नहि भूख अष्टादश दोष न याते। नमूं सीस धरि हाथ ख्यात देवन को देवा। गुण षट्चालीस भंडार करूं प्रभु तेरी सेवा ॥ ५ ॥ नमूं दिगंवर रूप नमूं लख निश्चल आसन। मुद्राशांत निहार नमूं नमि हूं तुमशासन ।६। नमूं किया निधि तोहि नमूं जग करता थे ही। अशरण को तुम शरण हरो भवके दुख येही। जामन मरण वियोग सोग इत्यादिघनेरे। फेरन आवै निकट करो प्रभु ऐसी मेरे ॥ ७ ॥ तुम लख दीन दयाल शरण हम यातें आये। वैसे देव निहार भाग्य तें तुम प्रभुपाये। रामचन्द्र कर जोर अरज करे हे जिन ऐसी। विपति यह जगमांहि सवे तुम जानत तैसी ॥ ८ ॥ यातें कहनी नाहि हरो जिन साहिब मेरे। बिनकारण जग बंधु तुही अन मतलब केरे। शरण गहे की लाज राख जगपति जिन स्वामी। करुणा कर संसार विमल जिन अंतर जामी ॥ ९ ॥

(दोहा)—बिनती विमल जिनेशकी जो पढसी मन लाय। जन्म जन्म के पाप सब ततछिण जांय पलाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्री विमलनाथ जिन पूजा संपूर्णा।

१४ अथ श्रीअनन्तनाथजिन पूजा लिख्यते।

(रामचंद्र कृत) अडिल।

स्थापना—वाह्यअभ्यंतर त्यागपरिग्रह यति भये। बहुजनहित शिवपंथ दिखायो हरि नये॥
ऐसे अनंतजिनेश पाय नमहूं सदा। आह्वानन विधि करूं त्रिविध करके मुदा॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्॥

अथ अष्टक। (नाराचछन्द)।

जल—क्षीर। नीर हीरगौर सोम शीत धारया। मिश्रगंधरत्न भृंग पाप नाश कारया॥
अनंतनाथ पायसेव मोक्ष सौख्यदाय है। अनंतकाल भ्रम जाल पूजतैं नसाय है॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन—कुंकुमादि चंदनादि गंधशीत कारया। संभवेन अंतकेन भूरिताप हारया॥
अनंतनाथ पायसेव मोक्ष सौख्य दाय है। अनंतकाल भ्रम जाल पूजतैं नसाय है॥

ॐ ह्री श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–श्वेतइंदु कुंदहार खंडना अक्षत्तहो। दुत्तिखंडकार पुंज धारये पवित्तही॥
अनंतनाथ पाय सेव मोक्ष सौख्य दाय है। अनंतकाल भ्रमजाल पूजतैं नसाय है॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प–सुरोपनीत पुष्पसार पंचवर्णलयायहो। गंधलुब्ध भृंग वृन्द शब्दधार आवही॥
अनंतनाथ पायसेव मोक्ष सौख्य दाय है। अनंतकाल भ्रमजाल पूजतैं नसाय है॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–मोदकादि घेवरादि मिष्ट स्वादसार हो। हेमथाल भव्यधार दुष्ट मुष्ट टार ही॥
अनंतनाथ पायसेव मोक्ष सौख्य दाय है। अनंतकाल भ्रमजाल पूजतैं नसाय है॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–रत्न दीप तेजभानहेम पात्र धारिये। भवांधकार दुःख भार मूलतैं निवारिये॥

अनंतनाथ पायसेव मोक्ष सौख्य दाय है। अनंतकाल भ्रमजाल पूजतैं नसाय है॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–देवदार कृष्णसार चंदनादि ल्यावही। दशांग धूप धूम्र गन्ध भृंग वृंद ध्यावही॥
अनंतनाथ पायसेव मोक्ष सौख्य दाय है। अनंतकाल भ्रम जाल पूजतैं नसाय है॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–श्रीफलादि खारि कादि हेमथाल में भरे। सुष्टंमिष्ट गंधसार चक्षु नासिका हरे॥
अनंतनाथ पायसेव मोक्ष सौख्य दाय है। अनंतकाल भ्रमजाल पूजतैं नसाय है॥ ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्रायगर्भ,जन्म,तप,ज्ञान निर्वाणपंचकल्याण प्राप्तायमोक्षफल प्राप्तयेफलं निर्वपामीतिस्वाहा

अर्घ–(छप्पय) सलिलशीत अतिस्वच्छमिष्ट चंदन मलियागर। तंदुल सोमसमान पुष्प सुरतरु के ल्यावर॥
चरु उत्तम अति मिष्ट पुष्ट रसना मन भावन। मणि दीपक तम हरण धूप कृष्णागर पावन॥
लहिफल उत्तम कणथालभर अर्घ रामचंद्रइमकरै। श्रीअनंतनाथके चरणयुग वसुविधिचरचैशिववरै।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक (दोहा)

गर्भ–पुष्पोत्तरतें चयलियो, सूर्यादेउर आय। कार्त्तिक पड़वा कृष्ण ही, जजहूं तूरवजाय ॥ १ ॥

उोंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय कार्त्तिककृष्णप्रतिपदा गर्भकल्याणकायअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा

जन्म–जेष्ठअसित द्वादशी विषे, जन्म सुराधिप जान। सनपन कर सुरगिरजजे, जजहूं जन्मकल्याण॥

उों ह्रीं श्रीनंतनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्ण द्वादशीजन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–जगतराज तृणवततज्यो, द्वादशिजेठ असेत। लौकांतिकसुरपति जजे, मैं जजहूं शिवहेत॥

उों ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्ण द्वादशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–चैत्रअमावस अरिहने, घातिकर्म दुःखदाय। कह्योधर्म केवलभये, जजूं चरण सुखदाय॥

उों ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय चैत्रकृष्ण अमावस्या ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

निर्वाण–चैत्रअमावस शिवगये, हनअघातिभगवान। सुरनर खगपति मिलजजे, जजहूं मोक्ष कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय चैत्रकृष्ण अमावस्या मोक्षकल्याणकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

अथ जयमाला। (दोहा)

महाअर्घ–कालअनंता नंतभव, जीवअनंता नंत। जिन उतपति व्यय ध्रुव कही, नमूं अनंतभगवंत॥

(ढाल त्रिभुवन गुरु स्वामी की)

जय अनंतजिनेश्वर जी। पुष्पोत्तरतैं सुर जी। सिंह सेन नरेश्वर के चय सुत भये जी। सूर्यादे माताजी। जग पुण्य विख्याता जी। तिन कै जग त्राता गर्भ विषे थये जी॥ १॥ कार्त्तिक अंधियारी जी। पडवा अविकारी जी। साकेत मझार कल्याणक हरिकीयो जी। षट् मास अगेरे जी। मणि स्वर्ण घनेरे जी। वरषे नृप केरे मंदिर धन जीयोजी ॥ २॥ द्वादशि अंधियारी जी। जनमे हित कारी जी। प्रभुजेठ मझार सुरासुर आयकै जी। सुर गिरले आये जा। भव मंगल गाये जी। अभिषेक रचाये पूजे ध्यायके जी॥ ३॥ फिर पित घर लाये जी। नृत तूर वजाये जी। लख अंगनमाये मात पिता तबै जी। तनहेम महाछवि जी। पंचास धनू रवि जो। लख तीस कहे कवि आय भई सबै जी॥ ४॥ नृप पदवी धारी जी। लखपण दह सारी जो। सब अनित्य विचारि तपों बनको गये जी। वदि जेठ द्वादशी जी। तप देख सुराऋषि जी। पद पूजनये नस पाप सबै गये जी॥ ५॥ षष्ठम कर पूगे जी। भोजन हित सूरो जी। पुर धर्म सतूरो आवत देख के जो। नव भक्ति थकी पयजी। वैशाष तहां दियो जी। मणि वृष्टि अक्षय करी सुर पेख कै जी॥ ६॥ धर ध्यान शुकल जब जी। चउघाति हने तब जी। सुर आय मिले सब ज्ञान कल्याण ही जी। वदि चैत अमावस जी। लख भक्ति तुहे वस जी। समवादि रच्यो तसु उपमा भान ही जी॥ ७॥ ममतादि जिते भवि जी। सुन धर्म तिरे सबजी। प्रभु आय रही जब मासतणी तबे जी। संमेद पधारे जी। सब योग सुधारे जी। सम भाव विथार

वरी शिव तिय जबै जी ॥ ८ ॥ वसु गुण युत भूषित जी । भव छोड़ वसे तितजी। सुख मगन भये जित मावस चैत की जी। सुर सब मिल आये जी । शिव मंगल गाये जी। बहु पुण्य उपाय चले तुम गुणथकी जी ॥ ९ ॥ गुण वृंद तिहारे जी। बुध कौन उचारे जी। गण देव निहारे पै वच ना कहै जी । चंदराम कहे थुति जी। वसु अंगथकी नुति जी । गुण पूरन दो मति मर्म तुहे लहै जी ॥ १० ॥ प्रभु अरज हमारी जी। सुनियों सुखकारी जी। भव में दुःख भारो निवारो हो धनी जी। तुम शरण सहाई जी। जग के सुख दाई जी। शिव दे पित माई कहा कबलों भनों जी ॥ ११ ॥

घत्ताछन्द–इति गुणगण सारं अमल अपारं जिन अनंत के हिय धरई । हन जरमरनावलि नाश भवावलि शिव सुन्दर ततक्षिण वरई ॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीअनंतनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥१४॥

१५ अथ धर्मनाथ जिन पूजा प्रारभ्यते।

रामचन्द्र कृत। अडिल।

स्थापना—सार द्रव्यषट् कहे पदारथ नव शुभ भाखे। सप्त तत्त्व वरनये काय पंचाशत आखे।
लोक तीन थिति कही धर्म जिन वर वृषदायक। आह्वाननविध करूं प्रणम त्रिविधा शिवनायक॥

ओं ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ओं ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक (ढाल मद अवलिप्त कपोलको)

जल—अति निर्मल शुचि नीर तीर्थ उद्भव भृंगधारैं। शीतल मिश्रितगंधसुरभतैं मधुझंकारैं।
जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिन शिव के मंडन जन्म मृत्यु आताप दुरितदारिद दुःख खंडन॥

ओं ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग बिनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन—कृष्णागर कश्मीर नीरघनसारसुणंदन। षट्पद ओघ भमन्तसुरभतैं दाहनिकंदन।
जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिन शिवके मंडन। जन्म मृत्यु आताप दुरित दारिद दुःख खंडन॥

ओं ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–सोम किरण समश्वेत शुद्ध डंडीर अखंडित। अति निर्मल चखहरै शालि शुभसौरभ मंडित।
जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिनशिव के मंडन। जन्म मृत्यु आताप दुरित दारिद दुःख खंडन॥
ओं ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–पंचवर्णमय कुसुम कल्प तरु के मन भावै। गंध लुब्ध मधुभ्रमै समरके वाण नसावै।
जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिन शिवके मंडन। जन्म मृत्यु आताप दुरित दारिद दुःख खंडन॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–उज्वल ललित पवित्र कनक भाजन चरुधारै। मधुर घृत रस युक्त क्षुधा लखतै निरवारै।
जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिन शिवके मंडन। जन्म मृत्यु आताप दुरित दारिद दुःख खंडन॥
ओं ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग बिनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-मणिमयदीपककांतिथकीतम औघविदारै । विकसत है वरबोध सुपरलखगुण विसतारै ।
जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिन शिवके मंडन । जन्म मृत्यु आताप दुरित दारिद दुख खंडन ॥
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांध
कार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप- अगर कृष्ण कर्पूर सुरभ चंदन के दाहक । धूप निर्जरा करै अघ है शिवगाहक । जजूं चरण धर
भक्ति धर्म जिनशिवकेमंडन । जन्ममृत्यु आताप दुरित दारिद दुःख खंडन ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट
कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल-सुरतरु के फल भूरि कनक भाजन भर पावन । श्री फल मिष्ट बदाम चक्षु घ्राणा मन भावन ।
जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिन शिवके मंडन । जन्म मृत्यु आताप दुरित दारिद दुःख खंडन ॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष
फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ-जल गंधाक्षत पुष्प दीप चरु धूपमिलावै । अर्घ रामचद करै मेल फल शिव सुख पावै ।
जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिन शिवके मंडन । जन्म मृत्यु आताप दुरित दारिद दुःख खंडन ।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अर्घन पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पञ्चकल्याणक । दोहा ।

गर्भ–सर्वारथ सिधितैं चये, गर्भसुव्रतासार । वैशाख असित तेरस सही, लयो जजूं भवतार ।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण त्रयोदशी गर्भ कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म–जन्म माघ शुदि त्रोदशी, सुरपति लख इतआय । सुरगिर ले सनपन जजे, मैं जजहूं गुण गाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय माघ शुक्ल त्रयोदशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप–माघ शुक्ल तेरस तज्यो, तृणवत राज महान । धरचों धीर तप बन विषे, जजूं धर्म भगवान ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय माघ शुक्ल त्रयोदशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान–पौष शुक्ल पूनिमहने, घाति कर्म लह ज्ञान । कही सकल थिति लोक की, जजूं बोध भगवान ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय पौष शुक्ल पूर्णिमा ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाण–जेठ शुक्ल तिथि चौथ ही, हन अघाति शिवथान । गये समेदाचल थकी, जजूं मोक्ष कल्यान ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ–वंदूं श्रीजिन धर्म के, पदनख मंडन भान । ममता रजनी हरन दिव, भवदधि तारन जान ।१।

चौपई–सर्वारथ सिधितैं अहमिंद । चय रतनाग पुरी गुण वृंद ॥ पिता भानु गुणवंत अपार । मातसुव्रता गर्भ मझार ॥ २ ॥ आये वदि त्रोदसि वैशाख । नये मुकुट हरि धर अभिलाख ॥ चले सवैं सुर युत परिवार । गर्भ कल्याणक कीनो सार ॥ ३ ॥ षट् नव मास थकी मणि वृष्ट । वार तीन दिन माहीं सृष्ट ॥ करी धनद सुर छप्पन पाय । सेवैं माता को सुख दाय ॥४॥ जन्म माघ सुदि तेरस भयो । तीन ज्ञान युत अचरज थयो ॥ वजे घंटादि सुमन की वृष्ट । इंद्र चले सब नुति कर इष्ट ॥५॥ माया शिशुधर शची जिनंद । परदच्छिन लीने सानंद ॥ वासव नमि लीने हर षाय । चले मे पांडुक वन जाय ॥ ५ ॥ क्षीरोदधितैं जल शुभ लाय । सनपन कर भव मंगल गाय ॥ वाजैं साढे बाराकोडि । जाति धुनै कर नृत्य वहोडि ॥ ६ ॥ पूज पदांवुज पित घर लाय । तांडव नृत्य करो सुर राय ॥ धर्म नाथ कह निज थल गये । बालचन्द्र सम वढते भये ॥ ७ ॥ तन कंचन धणुपण चालीस । आयु वरष लख दशकी ईस ॥ पांच लाख व्रष कीनो राज । कछु कारण लख धर्म जहाज ॥ ८ ॥ तृणवत त्यागो भावन भाय । देव ऋषि नय पूजे पाय ॥ और सुरासुर खग अविनीस । शिविका ले थापे वन ईस ॥९॥ कचलौंचत उपजो मन ज्ञान । षष्ठम धर तिष्टे भगवान ॥ तेरस माघ शुक्ल सुर राय । करयो कल्याणक

तप सुख दाय ॥ १० ॥ वर्द्धमानपुर भोजन काज। गये दियो पय धर्म जहाज ॥ कोटि अर्द्ध द्वादशमणि धार। भई वृष्टि घर सेण अगार ॥ ११ ॥ वर्ष एक तप दुर्धर धार। पूनिम पौष ध्यान पर जार ॥ भस्म घातिया कर वर वीर। केवल ज्ञान उपायो धीर ॥ १२ ॥ वर्ष अढाई लख उपदेश भविजन भवतैं तार अशेष ॥ शेष मास इक आयु जब रही। गिर समेद प्रभु पहुंचे सही ॥ १३ ॥ योग निरोध करे सम भाव। हने अघाति भये शिव राव ॥ चतुर्निकाय देवता आय। उत्सव कीनो मंगल गाय ॥ १४ ॥ सो मंगल दे जिन पत मोहि। जोर उभे कर विनवू तोहि ॥ जे चर अचर लोक त्रय माहिं। तुमतैं परनति छानी नाहिं ॥ १५ ॥ यातैं मो मन की सब बात। हो त्रिभुवन पति कर विख्यात ॥ रामचंद्र बिनवै प्रभु तोहि। धर्मनाथ जिनदे शिव मोहि ॥ १६ ॥

घत्ताछन्द–इति श्रीजिनधर्मं गुण गणपरमं जो भविमन वचतन गावै। लहि सुर सुखसारं समकित धारं नरहुय शिव सुख लघु पावै ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीधर्मनाथजिन पूजा संम्पूर्णा। १५ ॥

१६ अथ श्रीशान्तिनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

(रामचंद्र कृत) अडिल।

स्थापना–शांति जिनेश्वर नमूं तीर्थ वत् दुगण ही। पंचम चक्री अनंग दुविधषट् सुगण ही ॥
तृणवत्‌रिधसब छाड धार तप शिववरी। आह्वानन विधिकरूं वारत्रय ऊचरी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक। (नाराचछंद)।

जल–शैलहेम ते पतंत आपगासु व्योम ही। रत्नभृंग धार नीर शीत अंगसोम ही ॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है। अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन–चंदनादि कुंकुमादि गंधसार ल्यावही। भृंगवृंद गुंजते समीर संग ध्यावही ॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है। अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–इंदु कुंद हारतें अपार स्वेत शालि ही। दुत्तिखंड कार पुंज धारिये विशाल ही॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है। अनंत सौख्यसार शांतिनाथ सेय पाय है॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–पंच वर्ण पुष्प सार लाइये मनोज्ञ ही। स्वर्ण थाल धारिये मनोज नाश योग्य ही॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है। अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–खंड घृत कार चारु सद्य मोदकादि ही। सुष्टु मिष्ट हेम थाल धार भव्य स्वाद ही॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है। अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–दीप ज्योति को उद्योत धूम होत ना कदा। रत्न थाल धार भव्य मोह ध्वांत है विदा॥

रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है। अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांध कार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–अग्रचंदनादि द्रव्यसार सर्व धार ही। स्वर्ण धूप दानमें हुताश संग जार ही ॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है। अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–चोटकेन श्री फलेन हेम थाल को भरे। जिनेश के गुणौघ गाय सर्वएन को हरे ॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है। अनंत सौख्यसार शांतिनाथ सेय पाय है ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–(छप्पय) शरद इंदुसम अंबुतीर्थ उद्भव तृट हारी। चंदन दाह निकंद शालि शशितें द्युति भारी सुर तरुकेवर कुसुम सद्य चरु पावनधारै। दीप रत्नमय ज्योति धूपतें मधु झंकारै॥लहफलउत्तमअर्घ करशुभरामचंदकणथाल भर। श्रीशांतिनाथ केचरणयुग वसुविधिअरचैभावधर॥ ॐह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंचल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तयेअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। दोहा।

गर्भ–सर्वारथ सिधितें चये, भाद्रव सप्तमि स्याम। ऐरादे उर अवतरे, जजूं गर्भ अभिराम ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय भाद्रपद कृष्णसप्तमी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जन्म–जेठ चतुर्दशि कृष्ण ही, जनमें श्रीभगवान। सनपन कर सुरपति यजे, मैं जजहूं धर ध्यान ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

तप–जेठ असित चउदसिधरचौं, तप तज राज महा। सुर नर खगपति पदजजे, मैं जजहूं भगवान ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्णचतुर्दशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान–पौष शुकल दशमीहने, घाति कर्म दुख दाय। केवल लहि वृष भाखियो, जजूं शांति पद ध्याय ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय पौष शुक्ल दशमी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–कृष्ण चतुर्दशि जेठ की, हन अघाति शिवथान। गए समेदाचल थकी, जजूं मोक्षकल्याण ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

अथ जयमाला। सोरठा।

महाअर्घ–शांति जिनेश्वर पाय, वंदू मनवचकाय तैं। देहु सुमति जिन राय, यूं विनती रुचिसो करूं ॥

(ढाल संसार सासरियोदोहिलो)

शांति कर्म वसु हानिकैं। सिद्ध भये शिव जाय। शांति करो सब लोक में। अरज यह सुख दाय। शांति करो जग शांत जी ॥ २॥ धन नगरी हथना पुरी। धन पिता विश्व सेन ॥ धन उदरे अयरासती शांति भये सुख देन, शांति करो जग शांत जी ॥ ३ ॥ भाद्रव सप्तमि कृष्ण ही गर्भ कल्याणक ठांन ॥ रत्न धनद वरषाइये षट् नव मास महान। शांति करो जग शान्त जी ॥ ४ ॥ जेठ असित चउदस विषे। जन्म कल्याणक इंद ॥ मेरु करयो अभिषेक के पूजनचेसुर वृंद। शांति करो जग शांत जी ॥ ५ ॥ हेम वरण तन सोहनो तुंग धनुष चालीस ॥ आयु वरष लख नर पति सेवत सहस बत्तीस। शांति करो जग शान्त जी ॥ ६ ॥ षट् खंड नवनिधि तिय सवै चउदह रत्न भंडार ॥ कछु कारण लखके तजे खणचव असिय अगार ॥ शांति करो जग शांत जी ॥ ७ ॥ देव ऋषि सब आय के। पूज चले जिन वोध ॥ लेय सुरां शिवका धरी। विरछ नंदी सुर सोध॥ शान्तिकरो जग शांत जी ॥ ८ ॥ कृष्ण चतुर्दशी ज्येष्ठ की। मन परजै लह ज्ञान ॥ इंद्र कल्याणक तप करयो। ध्यान धरयो भगवान् ॥ शांति करो जग शांत जी ॥ ९ ॥ षष्ठम कर हित असन के। पुर सोमनस मझार ॥ गये दियो पय मित्त जी। वरषे रत्न अपार ॥ शांति करो जग शांत जी ॥१०॥ मौन सहित वसु दुगण ही। वरष करे तप ध्यान ॥ पौष शुकल दशमी हने। घाति लियो प्रभु ज्ञान ॥ शांति करो जग शान्त जी ॥ ११ ॥ समव शरण धनपति रच्यो। कमलासन परि देव ॥ इंद्र नरा षट् द्रव्य की। सुन थिति

थुति कर एव ॥ शांति करो जग शांत जी ॥ १२ ॥ धन्य युगल पद मोतणो॥ आयो तुम दरबार ॥ धन्न उभै चखये भये। वदनजिनेंद्र निहार ॥ शांति करो जग शांत जा ॥ १३ ॥ आज सफल करये भये। पूजत श्रीजिन पाय ॥ सीस सफल अब ही भयो। धोकिये तुम प्रभु आय ॥ शांति करो जग शान्त जी ॥ १४ ॥ आज सफल रसना भई। तुम गुणगान करंत ॥ धन्य भयो हिय मोतणो, प्रभु पद ध्यान धरंत ॥ शांति करो जग शांत जी ॥ १५ ॥ आज सफल युग मोतणो, श्रवण सुनत तुम वैन ॥ धन्य भये वसु अंग ये। नमत लियो अति चैन ॥ शांति करो जग शांत जी ॥ १६ ॥ राम कहै तुम गुण तणो। इंद्र लहै नहि पार ॥ मैं मति अलप अजान हूं। होय नहीं विस्तार ॥ शांति करो जग शांत जी ॥ १७ ॥ वरष सहस पच्चीस ही। षोडश कम उपदेश ॥ देय समेद पधारिये। मास रहे इक शेष। शांति करो जग शांत जी ॥ १८ ॥ जेठ असित चौदस गये। हन अघाति शिव थान ॥ सुर पति उत्सव अति करयो। मंगल मोक्ष कल्याण ॥ शांति करो जग शांत जी ॥ १९ ॥ सेवक अरज करे सुनो। हो करुणानिधि देव ॥ भवदधि दुःख मय तें मुझे। तार करूं तुम सेव। शांति करो जग शांति जी ॥२०॥

घत्ताछन्द–इति जिन गुण माला अमर रसाला। जो भविजन कंठै धरई। हो दिवि अमरेश्वर पुहमिनरेश्वर शिव सुन्दर ततछिन वरई ॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा। इति श्रीशांतिनाथजिन पूजा संम्पूर्णा ॥१६॥

१७ अथ श्रीकुन्थुनाथ जिन पूजा प्रारभ्यते।

(रामचंद्र कृत अडिल)

स्थापना–जे परशंसा करैं रागतासों नहीं। करैं विराधन दुष्टथकी दुख ना कहीं।
शुद्धातम में लीन कुंथु जिनको नमूं। आह्वानविधिठान सबै अघ को वमूं॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्।

अथ अष्टक। (त्रिभंगीछन्द)

जल–अति आमय दुस्तरतैं तृट्थावैं दुखपावै अति ही भारी। तिस नाशनकारण पूजन आयो तीरथको जल भरझारी। श्रीकुंथुजिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज गुमायो अबतारो तुम पद शरणा॥ १॥ ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलंनिर्वपामीति स्वाहा।

चंदन–भवगाहत श्रमतैं दाह भयो मुझ छिन सुख नांही का वरना। घस कुंकुम चंदन दाह निकंदन पूजन लायो हरमरना। श्री कुंथुजिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल

अनंत अकाज गुमायो अब तारो तुम पद शरना॥२॥ ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–यह संसार अपार उदधिको तारन भक्ति तुहै नवका। सित तंडुल लावै पुंज बनावै लघु पावैते सुख शिवका। श्री कुंथु जिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज गुमायो अबतारो तुम पद शरणा ॥३॥ ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्नये अक्षतान् निर्वपामीनि स्वाहा।

पुष्प–सुर असुर विद्याधर हरि हर प्रतिहर ब्रह्मा भ्रष्ट मदन कीने। सुर तरुके कुसुम थकी पद पूजं हरो समर इन दुख दीने। श्री कुंथुजिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज गुमायो अबतारो तुम पद शरणा ॥४॥ ओं ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–दोष अठारा यातैं होय क्षुधा तृपति ना नितखाते। सद घेवर मोदक पूजन लायो हरो वेदना दुःख पाते। श्री कुंथुजिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज गुमायो अब तारो तुम पद शरना ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवैद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–मोह महातम छाय रह्यो मम ज्ञान हरचो दुख अति दीना। मणिदीप उजारा तुम ढिगधारा सुपर लखै तम ह्वै छीना। श्री कुंथु जिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज गुमायो अवतारो तुम पद शरना ॥६॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–कारागार इह वपुमें मुझ मूंदि महा दुःख विधि पारै। क्रम इंधन जारन भरधूपायन अगर हुताशन संग जारै। श्री कुंथुजिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज गुमायो अब तारो तुम पद शरना ॥७॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–मोक्ष महामगरोक रह्यो अंतराय कर्म मुझ बल हरकै। शिवकारण फल ले पूजन आयो स्वर्णथाल तुम ढिग भरकै। श्री कुंथुजिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज गुमायो अवतारो तुमपद शरना ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–जल गंधाक्षत पुष्प दीप चरु धूप फलोत्तम अघकरै। जिन गुण गण गावै तूर बजावै रामचंद शिव रमनिवरै। श्री कुंथुजिनेश्वर आपण से चर लखपोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज

गुमायो अब तारो तुम पद शरना ॥ ९ ॥ उों ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पञ्चकल्याणक। दोहा।

गर्भ–दशमी श्रावण कृष्ण ही। तजसर्वारथ सिद्ध ॥ गर्भ लियो श्रीमतितणो जजूं देउ शिवरिद्ध ॥ १ ॥

उों ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय श्रावण कृष्ण दशमी गर्भकल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–प्रतिपद सित वैशाख ही जन्म सुराधिप जान। उत्सव कर सुर गिरि जजे। मैं जजहूं भवहान ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय वैशाख शुक्ल प्रतिपदा जन्म कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

तप–तज्यो राज षट् खड को तृणवत दीक्षा धार। पडवा सित वैशाख ही जजूं भवार्णवतार ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय वैशाख शुक्ल प्रतिपदा तप कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

ज्ञान–चैत्र शुक्ल तृतियाहने। घातिकर्म लह ज्ञान। कह्यो धर्म सुन भवितिरे जजहूं ज्ञान कल्याण ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल तृतीया ज्ञान कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–पड़वा सित वैशाख ही। सकल कर्म हन मोख। गए समेदाचलथकी जजूं चरण गुणघोख ॥५॥

ॐह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय वैशाख शुक्ल प्रतिपदा मोक्ष कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

कुंथुनाथ जिन के चरण त्रिविध नमूं कर जोर। धर दीक्षा षट्काय को पोखे षट्खंड छोर १

महाअर्घ-

(ढाल त्रिभुवन गुरु स्वामी की)

जय कुंथुजिनेश्वर जी। वंदू परमेश्वर जी। सर्वारथ सिद्धथकी चय आयेजी। श्रीमति उर थाये जी। नृप सूर्यकहायेजी। वदिश्रावण दशमें मंगल गाइये जी ॥ २ ॥ वारणपुरथानं जी। हरि जन्म कल्याणं जी। मिल आये वैशाख शुकल पडिवानवै जी। सुर गिरलेआये जी। जल क्षीर सुलाये जी। अभिषेक सिंगार करी पूजा सवैजी ॥ ३ ॥ फिर पित ढिग आये जी। नच तूर वजाये जी। लख अंग नमाये मात पिता सवैजी। तन कंचन सोहै जी। रवि कोटि को हैजी। धनु तुंग पैंतीस अजा लछिन फवै जी ॥ ४ ॥ वयबालविहाई जी। नृप पदवी पाईजी। शुभ चक्र इत्यादि भंडार विषै भयेजी। षट् खंडके भूपा जी। बल धार अनूपाजा। सुर सिंधु मझारि इत्यादि सवै जये जी ॥ ५ ॥ नृप शेखर धारा जी। सेवैंपद साराजी। वत्तीस हजार तियातिगुणीलही जी। कछु कारण पायोजी। भव चंचल भायो जी। नवनिधि सिंगारविभोविषवत तजे जी ॥ ६ ॥ लौकांतिक आये जी। पद पुष्प चढायेजी। नुतिकै थुति ठानि संबोधि घरां गये जी। शिविकाहरिकीनीजी। मिल कंधे लीनी जी। वन जायतिलक तरु तल ठये जी ॥ ७ सिंगार उतारे जी। सिरकेशउपारे जी। नमः सिद्ध उचारे सुधातम ध्याइयो जी।

वैशाख उजारो जी। पडिवा तपधारो जी। तब ही मन ज्ञान जिनेश्वर पाईयो जी ॥ ८ ॥ षष्टम कर पूरो जी। भोजनहितसूरोजी। पुरमंदिर धीर लख भू पाय धरैजी। वरदत निहारेजी। नमि तिष्ठ उचारे जी। पय दान सुरां लख पंचाचर्य करेजी ॥९॥ षोडश त्रषतांई जी। कर तप अधिकाईजी। आतम लव लायहने चउ घातिया जी। केवल लहि ज्ञानोजी। त्रैलोक्य बखानो जी। सित तीज कल्यानो चैत सुरां कियो जी ॥ १० ॥ सब आरज विहरे जी। भवितार घनेरे जी। सब आयु नवेड समेदाचलठयेजी। वैशाख सु प्रतिपद जी। अघातिकरे रद जी। तब मोक्ष महापद कुंथजिन गयेजी ॥११॥ श्रीजिनवर स्वामी जी। गुण पूरणधामीजी। करुणा निधिनामी अरज सुनो करूंजी। भववास महावन जी। इसमे सुखना छिनजी। बिन कारण ए जन वैर करै डरूंजो ॥ १२॥ तुम शरण सहाइ जी। बिन कारण भाई जी। हो त्रिभुवन राई शरण तुहै गहूंजी। गुण गान तिहारे जी। चंदराम उचारे जी। हर वैर हमारे सौख्य सदा लहुंजी ॥ १३ ॥

घत्ता छन्द–गुण गण अविकारं भवदधि तारं कुंथु जिनेश्वर के अमलम्। सुर नर खग ध्यावै शिपपद पावै रामचंद जजपद कमलम्।

ओं ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्री कुंथुनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥ १७ ॥

१८ अथ श्रीअरनाथजिन पूजा लिख्यते।

(रामचंद्रकृत; अडिल।

स्थापना—तज षट्खंड विभूति तृणवत् सवै। शुद्धातम में लीन भये अर जिन जवै।

ध्यान खडगतैं हने कर्म वसु मैं नमूं। आह्वानन विधि ठान सवै अघ को वमूं॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्॥

अथ अष्टक (गीता छन्द)

जल—शरद ऋतु के इंदतैं सित तीर्थ उद्भव नीर ही। भर भृंग मणिमय धार देवे नसैं त्रिविधा पीड़ ही॥

अरनाथ दुस्तर हान अरि वसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इंद्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन—घनसार अगर मिलाय कुंकुम घसत परिमल दिग्महै। चंचरीक शब्द करंत आवै पूजजिन भवतप जहै।

अरनाथ दुस्तर हान अरि वसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शतइंद्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये ॥

ओ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत—सितशालि शशितें खंड नाहीं सरलदीरघ आनही। करपुंज जिनवर चरण आगे लहै अविचलथानही

अरनाथ दुस्तर हानअरि वसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इन्द्र आय उछाह कीना जजूं पुलकित अंग ये॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प—कुसुम चारु अपार परिमल कल्प तरु के पावने। चख घ्राण हारी भरूं थारी समर वाण नसावने ॥

अरनाथ दुस्तर हान अरि वसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इन्द्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य—खंड घृत पकवान सुन्दर स्वर्ण भाजन में भरे। अति मिष्ट रसना भावना जिन पूज रोग क्षुधाहरे ॥

अरनाथ दुस्तर हान अरिवसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इन्द्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप–मणि दीप ज्योति उद्योत अद्भुत ध्वांत नाशन भान ही। धर कनक भाजन पूजजिनपद लहैकेवलज्ञानही॥
अरनाथ दुस्तर हान अरिवसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इन्द्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये॥
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांध कार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–घनसार अगर दशांगधूपसु स्वर्ण धूपायण भरे। जिन चरण आगे खेय भविजन दुष्टकर्म सब जरे॥
अरनाथ दुस्तर हानअरि वसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इन्द्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये॥
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–बादाम श्रीफल दाख खारिक आदि फलबहुमिष्टही। भरकनकथाल जिनाग्र धारैलहैशिवफलसुष्टही।
अरनाथ दुस्तर हान अरिवसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इन्द्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये॥
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–नीर गंधसुगंध तंदुल पुष्प चरुअर दीप ही। करअर्घ धूपफलौघ लेकर रामचंद अनूपही। अरनाथ दुस्तर हान अरि वसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इन्द्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये॥ॐह्रींश्रीअरनाथ जिनेन्द्रायगर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाणपंच कल्याण प्राप्तायअनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

अथ पंचकल्याणक । दोहा ।

गर्भ–फाल्गुण सुदि तृतीया चये, अपराजितते इंद । उदर सुमित्रा अवतरे, जजूं देव गुण वृंद ॥

ऊँ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय फाल्गुण शुक्ल तृतीया गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म–अगहन चउदस शुक्ल हो, जन्मे युतत्रय ज्ञान । हरि सनपन कर गिर जजे, जजहुं जन्मकल्याण ॥

ऊँ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्ल चतुर्दशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

तप–मगसिर दशमी शुक्ल ही, षट्खंड रत्न महान । तृणवत तज तप बन धरयो, जजूं चरण धर ध्यान ॥

ऊँ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्ल दशमी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान–कार्त्तिक द्वादशी शुक्ल ही, घाति कर्म हन ज्ञान । लह्यो धर्म दुविधा कह्यो, जजूं ज्ञान कल्याण ॥

ऊँ ह्रीं अरनाथजिनेन्द्राय कार्त्तिक शुक्ल द्वादशी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाण–चैत्र अमावस शिव गये, सर्व कर्म हन देव । चतुर्निकाय सुरां जजे, मैं जजहूं वसुभेव ॥

ऊँ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण अमावस्या मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ।

अथ जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ–अर जिन के पद कमल युग, बंदूं सीस नवाय । देउ सुमति विनती रचूं, पढे पाप खैं जाय ॥

(ढाल चन्द्र प्रभ जिन ध्याइयो जी)

अर अराति वसु हानके, शिव तिय के पति थाय। सुख अनंता संग लहै वंदूं गुण मन लाय॥

वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी। २। ध्यावत शिव पदवी लहै नर पद की किह बात॥ भृत्य होय सुर पति रहे देखो फल अव दात। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ३॥ हस्तिनाग पुर में नमूं पिता सुदर्शन पाय। मात सुमित्रा कूख में आये त्रिभुवन राय। बुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ४॥ फागुण सुदि तृतीया कह्यो सुरपति गर्भ कल्याण। रत्न वृष्टि धनपति करी षट् नव मास महान। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ५॥ मगसिर सुदि चउदसि विषे जन्मे सुरपति आय। कर सनपन सुर गिर परे पूजे तूर वजाय। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ६॥ आयु असीचव सहस की तन कंचन धनु तीस। मुकुट बंध नर पति करें सेवा सहस बत्तीस॥ बुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ७॥ कछु कारण प्रभु पाय के भव तन भोग विनंद। देव ऋषि सब आय के बोधि चले पद वंद। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ८॥ मगसिर सुदि दसै तजे षट् खंडरत्न महान। छिनमें सहस तिया तजी अंबतले धर ध्यान। वुध हो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ९॥ षष्ठम पूरो कर चले गज पुर भोजन काज। प्रभु के कर पर कर करचो अपराजित महा राज। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ १०॥ नवधा भक्ति सुरांलखी करी वृष्टि सुख पाय। साढा द्वादश कोटि ही मणि सुवरण जस गाय। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ११॥ षोडश वर्ष करे

भले उग्र उग्र तप सार। कार्तिक सुदि द्वादश हने घाति करम दुःख कार ॥ वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी ॥ १२ ॥ केवल ज्ञान उपाय के कह्यो धर्म भव तार। द्वादश व्रत श्रावक तणे दश विध वृष अणगार। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी ॥ १३ ॥ विहर समेदा चल गये आय रही इक मास। योग निरोध अघातिया हन लीनों शिव वास। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी ॥ १४ ॥ चैत अमावस सब सुरां आये चतुरनिकाय। मोक्ष सथानक पूज कै ध्याये मंगल गाय। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी ॥ १५ ॥ अविनाशी सुख में तहां ज्ञान रूप निरवाद । लखै काल भव की सबै परणति वोध अगाध। वुधहो अरजिन ध्यावो भावसों जी ॥ १६ ॥ तुम करुणा निधि जगपति जग नायक भगवान। रामचंद्र विनती करै दो मुझ अविचल ज्ञान ॥ वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी ॥१७॥ ध्यावत शिव पदवी लहै नर पद की किहबात। भृत्य होय सुर पति रहै देखो फल अवदात। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी ॥ १८ ॥

घत्ताछन्द–अरजिन गुण सारं विवुध अपारं गावत अह निशि मन धरई। तसु कीरति देवा खग नृप सेवा ठानत उत्सव बहु करई ॥ १९ ॥

ऊं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीअरनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥१८॥

१९ अथ श्रीमल्लिनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

(रामचंद्र कृत) अडिल

स्थापना—मल्लिसनाहसज शील मदन दुस्तर हरो। अनुप्रेक्षा सर संधि मोह भट जय करो।
प्रवज्याशिवि का साज वरांगन शिववरी। आह्वाननविधिकरूं प्रणमि गुणहियेधरी ॥ १॥

उों ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
उों ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
उों ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। नाराच छंद।

जल—इंदु कुंदक्षीरतैं अपारश्वेत वारही। मिश्र गंध भृंगधारकैंनिकार धारही। अनेक गीत नृत्य तूरठानिये
बिनोदसों। अनर्घ्यद्रव्यलाय मल्लिनाथ पूज मोदसों ॥ १ ॥

उों ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलंनिर्वपामीति स्वाहा।

चंदन— गंध चंदनादि लेभवादि दाहकोहरै। शरद है सनेह उष्ण बूंद एक जो परै ॥ अनेक गीत नृत्य
तूर ठानिये बिनोदसों। अनर्घ्यद्रव्यलाय मल्लिनाथ पूज मोदसों ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–राज भोग के मनोज्ञ तंडुलौघ सारही। सरलचित्तहारश्वेत पुंज भव्य धारही। अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदसों। अनर्घ्यद्रव्य लाय मल्लिनाथ पूज मोदसों ॥३॥

ओं ह्रींश्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प–सुरोपनीत पुष्पसार पंच वर्ण लाइये। जिनेश अग्र धारिके मनोजकों नसाइये॥ अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदसों। अनर्घ्यद्रव्य लाय मल्लिनाथ पूज मोदसों।॥ ४॥

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–मोदकादि घेवरादि घृत खंडतैं करै। स्वर्ण थाल धारतैं क्षुधादि रोग को हरै। अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदसों। अनर्घ्यद्रव्यलाय मल्लिनाथ पूज मोदसो ॥५॥

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–रत्न दीप तेज भान हेम थाल में धरै। जिनेश अग्र धार भव्य मोहध्वांतकोहरैं।

अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदसों। अनर्घ्यद्रव्य लाय मल्लिनाथ पूजमोदसों ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप– दशांग धूप चंदनादि स्वर्ण पात्र में भरे। हुताश संग धार कर्म औघ भव्य के जरै।
अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदसों। अनर्घ्य द्रव्यलाय मल्लिनाथ पूज मोदसों ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–मिष्ट सुष्ट श्री फलादि घ्राण चक्षु को हरै। मनोज्ञ चित्त हार पुंज योग्य थाल में भरै।
अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदसों। अनर्घ्य द्रव्य लाय मल्लिनाथ पूज मोदसों ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–(छप्पय) सलिल स्वच्छ शुभ गंध मलयतैं मधु झंकारे। तंडुलशशितैंश्वेत कुसुम परिमल विस्तारे।
क्षुधा हरन नैवेद्य रत्न दीपक तम नाशै। धूप दहैं वसु कर्म मोक्ष मग फल परकाशै। इम अर्घ
करैं शुभद्रव्य ले रामचन्द्र कण थाल भर। श्रीमल्लिनाथ के चरण युग वसु विधि अरचै भावधर॥९॥

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। दोहा।

गर्भ–चैत्र शुक्ल प्रतिपदच्यो अपराजित तैं इंद। प्रजावती उर अवतरे जजूं मल्लिगुण वृन्द ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा गर्भ कल्याणकायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जन्म–अगहन शुदि एकादशी सुरपति चतुर निकाय। सुर गिरि सनपन कर जजे मैं जजहूं गुणगाय। २।

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्ल एकादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप– भव भय कर तृणवत तज्यो जगतराज धर धीर। सित अगहन एकादशी जजूं धरो तपवीर ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्लएकादशी तप कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

ज्ञान–पौष कृष्ण दुतिया हने घाति कर्म दुःखदाय। केवल लै वृष भाखियो जजूं ज्ञान गुण गाय ॥४॥

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्ण द्वितीया ज्ञान कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा

निर्वाण–फागुण पंचमि शुकल ही शेष कर्महनि मोष। गये समेदाचलथकी शिव हित पद गुणघोष ॥५॥

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय फाल्गण शक्ल पंचमी मोक्षकल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

अथ जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ–बालपणै मल्लिनाथ जी त्रिषै अनिंदुखकार। प्रकट भस्मतप अग्नितैं करे नमूं पदसार ॥ १ ॥

(पद्धडी छंद) जय तीन जगतपति मल्लिदेव। भव उदधितार तुम शरण एव। जय धर्मतीर्थ करता जिनेश। जग बंधु बिना कारण महेश ॥ १ ॥ जय तीर्थराज किरपा निधान। जय मुक्ति रमा भरता सुजान। जय स्वय बुद्ध शंभूमहान। जय ज्ञान चक्षु कर विश्वजान ॥ २ ॥ जय स्वपर हितू मद मोहसूर। दीक्षा कृपाण गहितुरत चूर। जय त्रयोदश चारित अमलधार। हत राग द्वेष वय अति कुमार ॥ ३ ॥ तुम ज्ञान पोत लहि भवि अनेक। भव सिंधु तरे संशय न एक। तुम वचनामृत तीरथ महान। है पावन जेकर है सनान ।४। दुष्कर्म पंक छिन ना रहाय। तुम बैन मेघ कर कै जिनाय। तुम ज्ञान भान कर के महेश। है तिमिर मोहको छयअशेष।५। शिव पंथ भव्य निर्विघ्नजाय। तेरी सहायनिर्वाण पाय। वहु योगीश्वर तुमशरण थाय। निर्वाण गये जासी अघाय ।६। जय दर्शन ज्ञानचरित्र ईश। धर्मोपदेश दाता महीश। जय भव्य निकर तारन जहाज। भवसिंधु प्रचुर तुम नाम पाज ।७। त्वंनाम मंत्र जो चित धरेय। सर्वारथ सिद्धि शिव सौख्य लेय। मैं विनवूं त्रिविधा जोड हाथ। मुझ देह अखै पदमल्लिनाथ ।८।

घत्ता छन्द–श्रीमल्लिजिनेश्वर नमत सुरेश्वर वसुविधि कर युग पद चरचें। दुह जर मरणा वलि नसै भवावलि रामचंद्र शिव तिय परिचै ।९। ॐह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा। इति श्रीमल्लिनाथजिन पूजा संपूर्णा

२० अथ श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिन पूजा प्रारभ्यते।

(रामचंद्रकृत) अडिल ।

स्थापना–सकल परीषह जीत ध्यान असितैं हने । घाति चतुक लहि ज्ञान भव्य बोधे घने ।
मुनि सुव्रत जिन पाय नमूं सिर नाय के। आह्वानन विधि करूं चरण लवलाय के ॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक (ढालजोगीरासा की)

जल–इंदुशरदऋतु का अंगतैं सित मुनिचित्तसो अविकारी। शीत सुगंध तृट् परसत नासै तीर्थोदकभरझारी ॥
मुनिसुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुण नवनाशै । लोक सकल कर रेख ज्यों देखै ऐसो ज्ञान प्रकाशै ॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन–घस मलयागर कुंकुम के संग कृष्णागर घन सारं। दाह निकंदन परिमलतैं अलिध्यावत वृंदअपारं।
मुनि सुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुण नव नाशै। लोक सकल कररेख ज्यों देखै ऐसो ज्ञान प्रकाशै॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय
संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–चंदकिरण सम उज्ज्वल दीरघ मन रंजन अनि यारे। तंडुल ओघ अखंडित लेकर पुंजकरो दृगहारे।
मुनि सुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुण नव नाशै। लोक सकल कर रेखज्यों देखे ऐसो ज्ञान प्रकाशै॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–कुसुम मनोहर पंच वरनही सुरतरु के शुभ लावै। गंधसुगंधे घ्राणा रंजन गुंजतषट् पद आवै॥
मुनि सुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुण नवनाशै। लोक सकल कर रेख ज्यों देखे ऐसो ज्ञान प्रकाशै॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–मोदक गुंजा घेवर फेणी सुरही घृत्त वनावै। रसनारंजन रसतैं पूरे कंचन थाल भरावै॥
मुनि सुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुण नवनाशै। लोक सकल कर रेखज्यों देखै ऐसो ज्ञान प्रकाशै॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–दीप रत्नमय ज्योति मनोहर सुवर्ण पातर धारै। ध्वांतनसै जिम मेघ पवनतैं रवि आतम विस्तारै॥

मुनि सुव्रतजिनके पद पूजे दोष दुगुण नवनाशै। लोक सकल कर रेखज्यों देखै ऐसो ज्ञान प्रकाशै।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–कृष्णागर मलयागर चंदनधूप दशांग मंगावै। स्वर्ण धूपायण संग हुताशन जारे मधुकर आवै।
मुनि सुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुण नवनाशै। लोक सकल कर रेख ज्यों देखे ऐसो ज्ञान प्रकाशै॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–फल उत्तम मनहर बहु नीके श्रीफल दाख मंगावै। पूंगी खारिक आदि घनेर घ्राणा चक्षु सुहावै॥
मुनि सुव्रतजिनके पद पूजे दोष दुगुण नव नाशै। लोक सकल कररेख ज्यों देखै ऐसो ज्ञान प्रकाशै॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–जल चंदन तंदुल चरुदीपक धूप कुसुम फल लावे। अर्घकरै चंद वसुविधि ऐसे सोशिवके सुख पावै॥
मुनि सुव्रतजिनके पद पूजे दोष दुगुण नवनाशै। लोक सकल कर रेख ज्यों देखै ऐसो ज्ञान प्रकाशै।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। (दोहा)

गर्भ-प्राणत स्वर्ग थकी चये स्यामा उर अवतार। श्रावण द्वितिया कृष्ण ही, लयो जजूं पद सार॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय श्रावण कृष्ण द्वितीयागर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म-दशमी वदि वैशाख ही, जन्मे युतत्रय ज्ञान। सकल सुरासुर गिर जजे, मैं जजहूं धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण दशमी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

तप-कृष्णदसैं वैशाखतप, धरचो परिग्रह त्याग। नगन दिगंबर बन वसे, जजूं चरण युगराग॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण दशमी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

ज्ञान-नौमी कृष्ण वैशाख अर, हने घाति दुख दाय। कह्यो धर्म केवल भयो, जजूं चरण गुण गाय॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण नवमी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

निर्वाण-फाल्गुण द्वादशी कृष्ण ही, हनि अघाति निर्वाण। गये सुरासुर पदजजे, जजूं मोक्ष कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्ण द्वादशी मोक्षकल्याणकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महार्घ-श्रीमुनि सुव्रत जिनतने, नमूं युगल पद सार। भवदधि तारन तरनहो, पतित उधारन हार॥

(ढाल श्रीमंधरजिनवंदिस्याकी) मुनि सुव्रतजिन बंदिस्या जग सार हो। नगरकुसागर भूप। पिता नमूं सुमित्र जी जग सार हो॥ श्रीहरिवंश अनूप। अनूप श्रावण दूज कारी सुरग प्राणततैं चये। तव मात स्थामा गर्भ आये लोकत्रय में सुख भये। सुरअसुर के नय मुकुट कंपे पीठ सब हरि आय ही। गर्भा कल्याण महंत महिमा ठानि मंगल गाय हो॥ १॥ षट्नव मास त्रिकालही जग सार हो। वरषेरतन-अपारवदि दसै वैशाखकी जग सार हो। जिन जन्मे तिहवार। तिहवार घंटा आदि बाजै सबै सुर मिल आयही। जिनलेय पांडुक वन न्हायेक्षीरजल शुभ लायही। सिंगार कर पित मात सौंपे नृत्यतांडवहरि करचो। लखहृदय हर्षित भये दंपति नाममुनिसुव्रत धरचो॥२॥श्याम वरण तन तुंगहैजग सार हो। वीस धनुष परमाण तीस सहस व्रष आय है जग सार हो। कछु लांछन शुभ जान। शुभ राज्य पंदरां सहस कीनो त्याग तृणवत वन गये। नमः सिद्धेभ्यः कह लौंच कीनो ध्यान में प्रभु थिर भये। तब ही भयो मन ज्ञान सुर नर पूज पद गुण गाइये। वैशाख दसै कृष्ण चंपक वृक्षतल व्रत भाइये॥ ३॥ कर षष्ठम मिथिला गये जग सार हो। भोजन हित जिन राय। विश्व सेन नृपजी दयो जग सार हो। पयलख सुर हरषाय। हरषाय सुर आश्चर्य्य कीनो पंच फिर वन जाय ही। तप करे ग्यारा वरस द्वादश भांति निर्भै थाय ही। बैशाख नवमी कृष्ण हरिये घाति चव धर ध्यान ही। लह ज्ञान लोक अलोक पेख्यो भयो बोध कल्याण ही। समव शरण धनपति रच्यो जग सार हो। मानस थंभ त्रिशाल चव। चव गोपुर सोहने जग सार हो। खाई सजल मराल। मराल बन बन कल्प तरु पुनि

चैत्य चंपक अंब ही। धुज शैल सरित सुरूप सुर तिय नचै हलत नितंबही। मध सभा द्वादश सभा मंडपकमल आसन जिन ठये। चतु वक्र अंगुल चार अतर भई धुनि सुन हरषये॥ ५ ॥ तरु अशोक त्रय छत्र हैं जग सार हो। चवसठ चमर ढुलंत। योजन वाणी मागधी जग सार हो। दुंदुभि मधुर धुरंत। धुरंत दुंदुभिसुमन वरषे तुंग आसनत्रय लसै। तमपटलभा मंडल विध्वंसै कोटि रविकी छवि नसै। वसु प्राति हारिज सहित आरिज देश के भवि वोध ही। संमेद गिर समभाव प्रण मे भूत योग निरोध ही॥ ३॥ फाल्गुण द्वादश कृष्ण ही जग सार हो। ध्यान शुक्ल असिधार हन अघाति शिव पुर लियो जग सार हो। सुख अनंत भंडार। भंडार सुख अविकार अवयव हीन वृद्धि नहीं कदा। त्रिलोक की तिरकाल परिणति ज्ञान गर्भित है सदा। तित जन्म मरण जरा न व्यापे नाहि सेवक भूप ही चिद्रूप वसु गुण मई राजे सदा एक सरूप ही ॥ ७॥ तुम गुण सुर गुरु वर्नवै जग सार हो। जिह्वा सहस वणाय ,तोऊपारल है नहीं जग सार हो। नो हम पै किम थाय। किम थाय हम पै तुहे वर्नन देव गुरु से थक ,रहे। हो कृपा नाथ अनाथ के पति इह भव मैं दुःख सहे। तुम तरन तारन दुःख निवारन तार भव तैं नाथ जी। चंदराम शरण निहार आयो जोर कै युग हाथ जी॥

दोहा—श्रीमुनि सुव्रत देव की, बिनती परम रसाल। जो पढसी सुणसी सदा पासी मोक्ष विशाल॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा। इति श्रीमुनिसुव्रतनाथजिन पूजा संपूर्णा।

२१ अथ श्रीनमिनाथजिन पूजा लिख्यते।

(रामचंद्र कृत) अडिल।

स्थापना—शकल ध्यान पर जाल भस्म कर घाति ही। केवल ज्ञान उपाय धर्म कह ख्यात ही।
सान प्रतिबुध भवि भये नमूं नमिपाय ही। आह्वानन विधि करूं तिष्ठ इत आय ही ॥ १।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम् ॥

अथ अष्टक। (गीताछंद)

जल—सरित गंगाहिमन पर्वन थकी पूरब ध्याय ही। भरत सन्मख होय नभतैं पडी कुंड में आय ही। सो
नीर निर्मल अति हि शीतल तृषा नाशन लेयही। नमि नाथजिनकेचरण पूजूं अमलगुणगणधेयही।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन—उद्यान निर्जन मांहि पन्नग घाम दुःखतैं अतिभ्रमैं। लख मलय चंदन दारु कंदनतासपैसुखतैं रमैं।
सो दारु प्रासुक नारतैं घस कनक भाजन लेयही। नमिनाथ जिनके चरण पूजूं अमलगुणगणधेयही

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत-शरद इन्दु समान उज्ज्वल गंधतैं मधुकर भमैं। सरल दीरघ नांहि खंडित ज्योति मुक्ता की दमैं।
सो अखित जलतैं क्षालि भविजन उभं करमें लेयही। नमिनाथ जिनके चरण पूजूं अमलगुणगणधेयही

ओं ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचजल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प-कनक माणमय सुघर घरिये पंचवर्ण सुहावने। जावित्रि आदि अनेक विधि ही अमर तरुके पावने।
सो कुसुम अद्भुत घ्राण हारी लगैं मधुको प्रेयही। नमिनाथ जिनके चरण पूजूंअमलगुणगणधेयही।

ओं ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, मिर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य-खंड घृत पकवान सुंदर सद्य अनुपम मोहने। अतिमिष्ट रसना हरैं देखत क्षुधा डाकन कोहने।
सो सुष्ट मोदक चारु फेणी स्वर्ण भाजन लेयही। नमिनाथ जिनके चरणपूजूं अमलगुणगणधेयही५

ओं ह्रीं श्री नामनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-दीपमणि,मय ज्योति सुंदर धम वर्जित ललित ही। तम मोह पटल विलाय ऐसे पवन ज्यों घन चलत ही

सो कनक भाजन धार भविजन चक्षुको अति प्रेयही। नमिनाथ जिनके चरण पूजूं अमलगुणगणधेयही
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांध
कार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप– सुभग धूप दशांग चूरण स्वर्ण धूपायण भरै। तसु सुरभितैं मधुभ्रमै अतिही दशोंदिश में रव करै।
सो द्रव्य भविजन लेहि उत्तम अग्नि के संग खेयही। नमिनाथ जिनके चरण पूजूं अमलगुणगणधेयही।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट
कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–बादाम श्री फल चारुपूगी आदि शुभ रलि यावने। तसु गंधतैं ह्वै घ्राण रंजन लखे चक्षुसुहावने। कण
थाल फलतैं भरो उत्तम अमरतरु के लेयही। नमिनाथ जिन के चरण पूजूं अमलगुणगणधेय ही ॥८॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष
फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–विमल नीर सुगंध चंदन अषत श्वेत उजास ही। वरकुसुम चरुतै क्षुधा नाशै दीपतैं तमनाशही।
रामचंद इम अर्घ कीजे धूप फल शुभ लेयही। नमिनाथ जिनके चरण पूजूं अमलगुण गणधेयही ९
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ
पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वा।

अथ पंचकल्याणक (दोहा)

गर्भ—अपराजिततैं हरिचये विमला उर अवतार । दोयज श्याम असोज ही लयो जजूं भवतार ॥१॥
ओंह्रींश्री नमिनाथ जिनेन्द्राय आश्विन कृष्ण द्वितीया गर्भ कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।
जन्म—दशमी आसत असाढ ही जन्म सुराधिप जान । सुरगिरलेसनपनजजे जजहूं जन्म कल्यान ॥२॥
ओं ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अषाढ कृष्ण दशमी जन्म कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा
तप—आषाढ कृष्ण दशमी तज्यो जगत राज्य तप धार । स्थिर भये निजध्यान में जजूं चरणसुखकार ।३।
ओं ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढ कृष्णदशमी तपकल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा
ज्ञान—मगसिर सुदि एकादशी हने घातिया कर्म । कह्योधर्मकेवलभये जजूं चरण तज भर्म ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रायमार्गशिर शुक्लएकादशीज्ञान कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।
निर्वाण—चतुर्दशी वैशाख वदि हनि अघाति शिवथान । गये समेदाचलथकी जजहूं मोक्षकल्यान ॥५॥
ओं ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण चतुर्दशी मोक्ष कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

अथ जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ—इंद नमत मणि मुकुट की नेक न द्युतिदरसाय । नामजिननख मंडल थकी त्रिविध नमूं तिन पाय १
(पद्धडी छंद)—जयनमि जिनवरके युगलपाय । प्रणमूं मन बचतन सीसनाय । अपराजितनाम

विमान सार । चयआये मिथिलापुर मझार ॥१॥ ।वजथा रथ तात इक्ष्वाकवंश। विपुलादेवी उर सहस अंश । अश्विनि कुवार दोयज असेत । जिन गर्भलयो हरि धार हेत ॥२॥ आये कल्याण गर्भादिकाज । कर उतसव चाले,देव राज । धन पति कर है तिरकाल विष्ट । षटमास आदि नव रत्न सुष्ट ॥ ३ ॥ जय,जिन जन्मे त्रय ज्ञान धार । आषाढ कृष्ण दशमी मझार । आये सब चतुर निकाय देव । निजनिज वाहन निज सारि एव ॥४॥ तव शचीजाय परसूति थान । नमि गुप्त लिये जिनतेज भान । हरि नमस्कार करगोद लेय । सिर छत्र तीन ईशान देय ॥ ५ ॥ पुनि सनत कुमार महेंद्र इंद । सितचमरकरैं शोभा अमंद । सुरगिर पांडुक वन मांहिजाय । अभिषेक करो जल क्षीर लाय ॥ ६ ॥ शचि पोंछि करैं सिंगार सार । बहुतूर वजै तिनको न पार । वसुविधि पूजा कर निरतठान । संतोषे मात पितादि आन ॥७॥ तन हेम धनुष पण दह उतंग । दश सहस वर्ष की आयुचंग । कर राज तजो भय भीत होय । भव भोग विनश्वर काय जोय ॥ ८ ॥ तव ही लौकांतिक आयदेव । संवोध चले थुति ठान एव । सौ धर्म आदि सुर खचरभूप । शिविकाले चाले वन अनूप ॥९॥ तरुवकुलतलैसिरकेशडार । तज उपधि सुधातम ध्यान धार । आषाढ कृष्णदशमी महान । इंद्रादि चले कर तप कल्यान ॥१०॥ कर षष्टम नगरी सुजगत मांहि । अन काज गये नृपदत लखां हि । पयदान दियो सुर भक्ति देख । आश्चर्य करे पणविधिविशेख ॥११॥ नवमास महातप उग्रठान । धर ध्यान शुकल चउ घाति हान । अगहनसित ग्यारस ज्ञान भान । उपज्यो सुर असुर कल्याण मान ॥१२॥समवादि सहित कर कै विहार । संमेदठये बहुभव्यतार । वैशाख

कृष्ण चउदसि मझार । शिव वधूवरी चउ घाति जार ॥१३॥ तब चतर निकायक देव आय । वसु भेव पूज बहु पुन उपाय । कर उत्सव मंगल मोक्ष ठांन । निज थान गये कर क कल्यान ॥१४॥ जय महा अमल गुण समत धार । जय लोक बोध धरणी मझार । दर्शन सव युगपत लखतभूप । वल अनंतकाल ध्रुव एक रूप ॥ १५ सहमंत देश सूक्षम अपार । गुण अगुर लघू हलको न भार । तन चर्म कछू अवगाह हीन । नहि आमय अव्यावाध चीन ॥१६॥ गुण अष्ट इहै निश्चै अनंत। को वर्ण सकै भुवमाहि संत। मैं विनवूं श्री नमिनाथ देव । मुझ देय सदा तुम चरण सेव ॥ १७ ॥ हो कृपा नाथ जगपति जगीश। तुम तारन तरन निहार ईश । मैं शरण गहो तुम तार नाथ। चंदराम नमें धर सीस हाथ ॥ १८ ॥

घत्ताछन्द-इह नमि गुण माला परम रसाला मन वच तन कंठै धरई । हुय सिद्ध निरंजन भव दुःख भंजन अगणित शिव सुख संग करई ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीनमिनाथजिन पूजा संम्पूर्णा ।

२२ अथ श्रीनेमिनाथजिनपूजा प्रारभ्यते।

(रामचंद्र कृत) अडिल।

स्थापना–घणे जंतु रव करचो नेमिसुन गिर गये। तज रजमति भव अनित पेख मुनि वर भये।
ध्यान खडग गह हने कर्म शिव तिय वरी। आह्वाननविधि करूं प्रणमि गुण हिये धरी॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेश्वर अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेश्वर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेनिनाथजिनेश्वर अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। त्रिभंगीछन्द।

जल–निर्मल लाय महातीर्थोदक कनक रत्नमय भर झारी। मन वच तन सुध कर जिन पद पूजै नशै जन्म मृति दुःख कारी। श्रीनेमिजिनेश्वर के पद वंदूं रजमतिसी तत छिन छारी। पशुवन की रव सुन के करुणा धर जाय चढे प्रभु गिरनारी॥ १॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा

चन्दन–शुभ कुंकुम लावै अगर मिलावै चंदनतैं घन सार घसै। तसु परस समीर चलै अति शीतल महा दाह ततकाल नसै। श्रीनेमिजिनेश्वर के पद वंदूं रजमतिसी ततछिन छारी। पशुवन की रव

सुनके करुणा धर जाय चढे प्रभु गिरनारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–शुभशालि अखंडित सौरभ मंडित शशिसी उज्ज्वल अति प्यारी । भूपन को मोसर मुक्तासी द्युति, पुंज करै भवि मनहारी। श्रीनेमि जिनेश्वर के पद पूजूं रजमति सी तत छिन छारी । पशुवन की रव सुनके करुणा धर जाय चढे प्रभु गिरनारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–कुसुम मनोहर घ्राणा केहर पंचवरन अति सुख कारी। सुर तरु के पावन चख ललचावन अति मृदुतैं भवि भर थारी । श्रीनेमि जिनेश्वर के पद पूजूं रजमति सी तत छिन छारी । पशुवन की रव सुनके करुणा धर जाय चढे प्रभु गिरनारी ॥ ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य–अति मिष्ट मनोहर घेवर फेणा मोदक गुं ना भरथारी । रसनाके रंजन रस के पूरे क्षुधा निवारन बल कारी । श्रीनेमिजिनेश्वर के पद वंदूं रजमति सी ततछिन छारी । पशुवन की रव सुनके करुणा धर जाय चढे प्रभु गिरनारी ॥ ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–दीप रत्नमय ज्योति मनोहर कनक रकाबी में धारे । तम मोह नसे जिम पवन थकी घन स्वपर

लखे गुण विस्तारै॥ श्रीनेमिजिनेश्वर के पद बंदूं रजमतिसी ततछिन छारी। पशुवन की रव सुनके करुणाधर जाय चढे प्रभु गिरनारी॥ ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–शुभ धूप दशांग हुताशन के संग स्वर्ण धूपायण माहिं भरै। तसु सौरभतैं मधु गुंजत आवै अष्ट कर्म ततकाल जरै। श्रीनेमिजिनेश्वर के पद वंदूं रजमतिसी तत छिन छारी। पशुवन की रव सुन के करुणाधर जाय चढे प्रभु गिर नारी॥ ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–पूगी दाख बदाम छुहारा एला श्रीफल युत लावै। भर कनक थाल में मन के रंजन मोक्ष महा फल लघु पावै। श्रीनेमिजिनेश्वर के पद बंदूं रजमति सी तत छिन छारीं। पशुवन की रव सुन के करुणाधर जाय चढे प्रभु गिरनारी॥ ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–सलिल स्वच्छ मलियागिर चंदन अक्षत कुसुम चरु भर थारी। मणि दीप दशांग धूप फल उत्तम अर्घ राम कर सुख कारी। श्रीनेमिजिनेश्वर के पद बंदूं रजमतिसी ततछिन छारी। पशुवन केरव सुनके करुणाधर जाय चढे प्रभु गिरनारी॥ ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक (दोहा)

गर्भ-षष्ठीकार्तिक शुक्ल ही, अपराजित अहमिंद। चय शिवदेव्या उर लयो, जजूं चरण गुण वृंद ॥
ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कार्त्तिक शुक्ल षष्ठी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म-जन्मे श्रावण षष्ठीसित, वासव चतुर निकाय। सनपन कर सुर गिर जजे, मैं जजहूं गुण गाय ॥
ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल षष्ठी जन्म कल्याण काय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप-षष्ठी श्रावण शुक्ल ही, तज विवाह सुकुमार। उर्जयंत गिर तप धर्यो, जजूं चरण भव तार ॥
ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल षष्ठी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान-शुक्ल आसोज प्रतिपद हने, घाति कर्म दुःख दाय। घाति कर्म केवल भये, जजूं चरण गुण गाय ॥
ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय आश्विन शुक्ल प्रतिपदा ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

निर्वाण-शुक्ल असाढ सप्तमी गये, शेषकर्म हनि मोष। शिव कल्याण सुरपति कर्यो, जजूं चरण गुणघोष
ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेद्राय आषाढ शुक्ल सप्तमी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला। (अडिल)

महाअर्घ-लख अनित्य भव तजा राज तृणवत तप धारो। कर बहु विधि उपवास सकल आगम विसतारो॥
मुनि सुप्रतिष्ट पद नमूं भावना षोडश भाये। कर समाधि अहमिंद भये तीर्थंकर थाये ॥

(पद्धड़ीछन्द)–जय समुद विजै शिवदेवि माय। श्रीनेमि जिनेश्वर गर्भ आय। तिष्टे कातिक शुदि षष्ठी देव। गर्भा कल्याण आये सुमेव ॥ १ ॥ हरिवंश व्योम मधि सुष्ट भान। सित श्रावण षष्ठी जन्म थान। सौरी पुरतैं सुर मेरु लेय। जन्माभिषेक कर गुण भनेय ॥ २ ॥ जय देव महा बल धरन बाल। इह प्रचुर नीर मनु कुसुम माल। जय धीर धुरंधर मेरु शृंग। अति पावन लावन सकल अंग ॥३॥ जय दोष निराकृत धर्म घोष। भव तारन संभव करन मोष। जय मोहन मूरति सिष्ट थाल। पित मात पदम रवि प्रात काल ॥ ४ ॥ बहु नृत्य ठान पित मात देय। जिन वृद्ध भये गण राज हेय। सित श्रावण षष्ठी जंतु पेख। भय भीत भये भवतैं विशेख ॥ ५ ॥ तप धार तजो परिग्रह पिशाच। नुति सिद्धों को कर त्याग वाच। गह ध्यान खडग चउघाति मार। लहि केवल सित प्रतिपद कुंवार ॥ ६ ॥ धन देव रच्यो समवादि सार। जिन अंतरीक करके विहार। वन ग्राम नगर पुनि सर्व देश। कह धर्म भव्यतारे महेश ॥ ७ ॥ भव कूप इह अघको भंडार। तिस में दुःख है सुख ना लगार। तुम तारन विरद निहार देव। मैं शरण गही मुझ तार देव ॥ ८ ॥ दिन सप्तमी सित अषाढ मोख। जिन प्रकृति पचासी शेष सोख। गिर नार शिखर निर्वाण थान। चंदराम नमैं नित धार ध्यान ॥

घत्ताछन्द–इह पंचकल्याणं सुर पति ठानं नर पति खग पति नित ध्यावैं। जे पढैं पढावैं सुर धर गावैं सो शिव के सुख लघु पावैं ॥ ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वामीति स्वाहा। इति श्रीनेमिनाथजिन पूजा संपूर्णा।

२३ अथ श्रीपार्श्वनाथजिन पूजा लिख्यते।

रामचन्द्रकृत। (अडिल)

स्थापना–पारस मेरु समान ध्यान में थिर भये। कमठ किये उपसर्ग सबै छिन में जये॥
ज्ञान भानु उपजाय हानि विधि शिव वरी। आह्वानन विधि करूं प्रणमि त्रिविधा करी॥
उों ह्री श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। (गीताछंद)।

जल–शरद इदसमान उज्ज्वल स्वच्छ मुनि चित सारसा। शुभ मलय मिश्रित भृंग भरि हूं शीत अतिही तुषार सो॥ सो नीर मनहर तृषा नाशन हिमन उद्भव ल्यावही। श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपायही॥ उों ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन–घनसार अगर मिलाय कुंकुम मलय संग घसायही। अति शीत होय सनेह उष्णजु बूंद एक रलायही॥ सोगंध भव तप नाश कारन कनक भाजन लायही। श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय

हरष उपायही ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–सरित गंगा अंबुसीची शालि उज्वल अति घनी। द्युति धरै मुक्ताकी मनोहर सरल दीरघ युत अनी। सो अखित औघ अखंड कारन अखै पद को लाय ही। श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपायही ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प–कनक निरमय रत्न जडिये पंच वर्ण सुहावने । प्रसून सुन्दर अमर तरु के गंधयुत अति पावने । सो लेय समर निवार कारन घ्राण चक्षु सुहाय ही । श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपाय ही ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य–लक्ष्मी निवास सरोज उद्भव तथा सोम थकी झरै। आमोद पावन मिष्ट अति चित्त अमी भुंजन को हरै ॥ सो चारु रस नैवेद्य कारन क्षुधा नाशन लायही । श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपायही ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप–कनक दीप मनोज्ञ मणिमय भानु भासुर मोहने। तम नसै ज्यों घन पवन नासै धूम वर्जित

सोहने ॥ मम मोह निविड विध्वंस कारण लय जिन ग्रह आयही। श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपाय ही। ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–श्रीखंड अगर दशांग धूपसु कनक धूपायण भरै। आमोदतैं अलिवृन्द आवैं गुंजतैं मन को हरै॥ वसु कर्म दुष्ट विध्वंस कारण संग अग्नि जराय ही। श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपायही॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–अति मिष्ट पक्व मनोज्ञ पावन चक्षु घ्राणा को हरै। अलि गुंज करत सुगंध सेती सुधा की सर वर करै। सो फल मनोहर अमर तरु के स्वर्ण थाल भराय ही। श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपाय ही॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–सलिल स्वच्छ दशांग धूपसु अखित उज्ज्वल लाय ही। वर कुसुम चरुतैं क्षुधा नासै दीप ध्वांत नसाय ही। कर अर्घ धूप मनोज्ञ फल ले राम शिव सुख दायही। श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपाय ही॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक । दोहा।

गर्भ-प्राणत स्वर्ग थकी चये, वामा उर अवतार । उभय, असित वैशाख ही, लयो जजूं पद सार ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण द्वितीया गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जन्म-पौष कृष्णएकादशी, तीन ज्ञान युतदेव । जन्मे हरि सुर गिर जजे, मैं जज हूं कर सेव ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पौष कृष्ण एकादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

तप-दुर्द्धर तप सुकुमार वय, काशी देश विहाय । पौष कृष्ण एकादशी, धरचो जजूं गुण गाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पौष कृष्ण एकादशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान-कृष्ण चौथ शुभ चैतकी, हने घाति लह ज्ञान । कह्यो धर्म दुविधा मुदा, जजूं बोध भगवान ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण चतुर्थी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण-सप्तमि श्रावण शुक्ल ही, शेष कर्म हन वीर । अविचल शिव थानक लह्यो,जजूं चरण धर धीर ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल सप्तमी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

अथ जयमाला ।(दोहा)

महाअर्घं-पार्श्वनाथ जिनके नमूं, चरण कमल युग सार । प्रचुर भवार्णव तुम हरो, मुझ तारो भवतार॥

(ढाल ते गुरु मेरे उर वसो)   श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र वंदूं शुद्ध मन वच काय । धन पिता

धन जन्म काशी देश में वाराणसी शुभ ग्राम। प्रभु पास दो
आसा सेन जी धन धन्य वामा माय॥ धन जन्म काशी देश में वाराणसी शुभ ग्राम। मुख देख के
मुझ दासकी सुन अर्ज अविचल ठाम॥ अति मनोहर सजल जलद समान सुन्दर काय। मुख देख के
ललचाय लोचननेक तृपति न थाय॥ पद कमल नख द्युति कनक चपला कोटि रवि छवि धाम। प्रभु
पास दो मुझदास की सुन अरज अविचल ठाम॥ ह्वै अधो मुख पंचाग्नि तप तो कमठ कोचर क्रूर। तित
अग्नि जरते नाग बोधे देय वच वृष पूर॥ वे भये हैं धरणीन्द्र पदमा भवनत्रिकरिधि धाम। प्रभु पास
दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम॥ इम उरग मिरत निहार कै सब अथिर शरण न कोय
संसार यो भ्रम जाल है जिम चपल चपला होय। हूं एक चेतन सासतो शिव लहूं तज के धाम। प्रभु
पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम॥ इम चितवतां लौकांतिकेश्वर आय पूजे पाय। परणाम
कर संवोध चाले चितवते गुण धाय। धन धन्य वय सुकुमार मैं तप धरचो अति बल धाम॥ प्रभु
पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम॥ वंदं समय जिन धरी दीक्षा विहर अह छित जाय॥
तित ठये बन में दुष्ट वो सुर कमठ कोचर आय। अति रूप भीषण धार के फुंकार पन्नग स्याम॥
प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम। ह्वै तुंग वारण सिंह गर ज्यो उपल रज वरषाय।
कर अग्निवरषा मेघ मूसल तडित परलय वाय। प्रभु धीर वीर अत्यंत निरभै असुर को वल खाम।
प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अरज अविचल ठाम॥ वाही समय धरणीन्द्र को नय मुकुट कंप्यो
पीठ। हरि आय सिंहासन रच्यो फणमंड कीनो ईंठ। तब असुर करनी भई निषफल अचल जिन

जिम धाम । प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम ॥ ८ ॥ धर ध्यान योग निरोध के चव घाति कर्म उपार । लहि ज्ञान केवलतैं चराचर लोक सकल निहार ॥ समवादि भूति कुवेरकीनी कहै किम वुधि खाम । प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम ॥ ९ ॥ हरि करी नुति कर जोर विनती धन्य दिन इह वार । धन घड़ाया प्रभु पास जी हम लहे भव के तार । धन धन्य वाणी सुनी मैं अघनाशनी पुनि धाम । प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम ॥ १० ॥ वसु कर्म नाश विनाश वपु शिव नयरपाई वीर ॥ वसु द्रव्यतैं वहथान पूजै टरै सब ही पीर ॥ सो अचल है संमेद पै मम भाव है वसु जाम । प्रभुपास दो मुझ दास की सुन अरज अविचल ठाम ॥ ११ ॥ कर जोर कै चंदराम भाखै अहो धन तुम देव । भवि वोध कै भव सिंधु तारे तरन तारन टेव । मैं नमन हूं मो तार अब ही ढील क्यों तुम काम । प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम । ॥ १२ ॥ नित पढैं जे नर नारिही सब हरै तिन की पीर । सुर लोक लह नर होय चक्री काम हलधर वीर । पुन सर्व कर्म जुघात के लह मोष सब सुख धाम । प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम ॥ १३ ॥

घत्ताछन्द–श्रीपार्श्वं जिनेश्वर नमितसुरेश्वर पूजे तिन भवपाप हरम् । स्वर्गादिक जावै नृपपद पावै रामचंद पुन मुक्तिभरम् ॥ ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा । इतिश्रीपार्श्वनाथ जिनपूजा संपूर्णा ॥२३॥

२४ अथ श्रीवर्द्धमानजिन पूजा प्रारभ्यते।

रामचद्र कृत (अडिल)

स्थापना–बोध शुद्ध परकाशक प्रभु जिम भान ही। लोक अलोक मझार और नहि आन ही।
प्रणमूं श्रीवर्द्धमान वीरके पाय ही। आह्वाननविधि करूं विमल गुण ध्याय ही॥ १ ॥

ऊं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ऊं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥
ऊं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्।

अथ अष्टक (गीता छंद)

जल–कर्पूर वासित शरद शशिसम धवलहार तुषारतैं। मुनि चित्त सो अति विमलसौरभ रवैंमधुकरप्यारतै
सोहिमन उद्भवकुंभमणिमयनीर भरतृट् छेयही। श्रीवीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चरचूंश्रेयही१

ऊं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन–मलयनीर कपूर शीतल वर्ण पूरण इंदुही। आमोद बहुलसमीरतैं दिग रवै मधुकरवृंद ही।
सो द्रव्य भवतपनाश कारण कनक भाजन लेयही। श्री वीरनाथजिनेन्द्रकेयुग चरणचरचूं श्रेयही२

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसार
ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–हिमन उद्भवसरितसीची शालिसित शशिद्युति धरै। दीरघ अखंडित सरल पिंडन मुक्तसीमनकोहरै।
कर पुंजकारण अखैपदके उभै करमें लेयही। श्रीवीरनाथ जिनेन्द्रके युग चरण चरचूं श्रेयही ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय अक्षय
पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प–मंदार मेरु सुपारितरुके सुमनगंधासक्तही। मधुप आवैं भविनके चख लखैं होय पवित्त ही। सो समर
बाण विध्वंस कारण कुसुम उत्कर लेयही। श्रीवीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चरचूं श्रेयही ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्रप्ताय काम
बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्य–पद्मा निवास सरोज आश्रित शुधा की आमोदसा। चित्त सुधा भुंजन को तृपति ह्वै रवैमधुकरमोदसं
सो ही पीयूष क्षुधा विनाशन चारुचरु करलेयही। श्रीवीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चरचूं श्रेयही।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा
रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–त्रैलोक्य मध्य जिनेन्द्र महिमा तेजतें दरसायही। पाप तम दिग दशों निविड़सु मूलतैंनसजायही।

सो दीप मणिमय तेज भास्कर कनक भाजन लेयही। श्रीवीरनाथजिनेन्द्र केयुगचरणचरचूं श्रेयही

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप–धूप संग हुताशधारे धूम्र ब्रज दिग में हवै। दिगपाल चिंतैं मनोक्षिति धर नील से आवैं इहै । सो मलय परिमल घ्राण रजन सुरों को अति प्रेय ही। श्री वीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चरचूं श्रेयही

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल–शुभ फलोत्कर पक्व मधुरे स्वर्ण से मन को हरें। आमोद पावन पुंज करहूं मनो वांछित फल भरें । भरथाल कनक मय अमर नरुके लखें चाव हो प्रेयही ।श्री वीरनाथ जिनेन्द्र केयुगचरणचरचूंश्रेयही।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ–नीर गंध इत्यादि द्रव ले कमल पद सन्मतितने । जे जजें ध्यावैं वंदि सतवैं ठानि उत्सव अतिघने। सुर होय चक्री काम हल धर तीर्थं पद की श्रेयही। सुख रामचंद लहंत शिवके अर्घकर प्रभुधेयही

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पञ्चकल्याणक । दोहा ।

गर्भ—षष्ठी शुक्ल असाढ ही पुष्पोत्तरतैं देव । चयत्रिशला उर अवतरे जजूं भक्ति धरयेव ॥ १ ॥

ओंह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय आषाढ शुक्ल षष्ठी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ।

जन्म—चैत्र शुकल त्रोदसि सुरां कीनो जन्म कल्यान । क्षीर उदधितें मेरुपै मैं जजहूं धर ध्यान ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल त्रयोदशी जन्मकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

तप—अगहन दशमी कृष्णही तपधारो वन जाय । सुर नर पति पूजाकरी मैं जजहूं गुण गाय ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मार्गशिर कृष्ण दशमी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

ज्ञान—दशमी सित वैशाखकी घातिकर्म चक चूर । केवल ज्ञान उपाइयो जजूं चरण गुण भूर ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय वैशाख शुक्ल दशमी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

निर्वाण—कातिक वदि मावस गये शेष कर्म हन मोष । पावापुरतैं वीरजी जजूं चरण गुण घोष ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय कार्तिक कृष्ण अमावस्यामोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

अथ जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ—सन्मति सन्मति दोमुझे हो सन्मतिदातार । इहभक्तिपावन जगत होय अमल विस्तार १

(पद्धडी छद) जय महावीर द्युति अमल भान । सिद्धारथ चित अंवुज फुलान । जय त्रिसला

कुष कुमुदनि अनूप। प्रफुलावन को सुख चंद रूप ॥१॥ जय कुण्डल पुर जन्मा सथान। हरिवंश व्योम मधि सुष्ट भान। जय कनक वर्ण कर सप्तकाय। हरि चिह्न बहत्तर वर्ष आय ॥ २ ॥ जय इंद्र कह्यो महावीर सूर। सुन देव चलो ह्वै सर्पंकूर। फुंकार हाल विकराल देख। कीडत कुमार भाजे विशेख॥३॥ प्रभु धीर महापन्नग अज्ञान। करकीड हरचो मद को वितान। ह्वै प्रगट देव नय पूजपाय। परशस कह्यो महावीर राय ॥ ४ ॥ लख पूरव भव अनुप्रेक्ष्य चिंत्य। भय भीन भयें भवतैं अत्यंत। लौकांति आय थुति पूज्य पाय। निजथान गये सुर असुर आय ॥ ५ ॥ रच शिविका कर उत्सव अपार। बन जाय धरे प्रभु तज सिंगार। नुति सिद्ध लौंच कच नगन काय। धर षष्ठम लव चिद्रूप लाय ॥ ६ ॥ तप द्वादश द्वादशवर्ष ठान। चउघाति हने गह खडग ध्यान। जय अनंत चतुष्टय लब्धदेव। वसु प्रातिहार्य अतिशय सुमेव ॥ ७ ॥ जय भव्यन कर भव सिंधुतार। मैं प्रणमूं युग कर सीसधार। जय समर विटपिजारन हुताश। जय मोह तिमिरनाशन प्रकाश ॥ ८ ॥ जय दोष अठारा रहित देव। मुझ देह सदा तुम चरण सेव। हूं करूं बीनती जोड हाथ। भव तारन तरन निहारनाथ ॥ ९ ॥

घत्ता छन्द–श्री वीरजिनेश्वर नमत सुरेश्वर वसु विधि कर युग पद चरचम्। बहुतूर वजावैं गुण गण गावैं रामचंद्र मन अति हरषम् ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा। इति श्री महावीर जिनपूजा संपूर्णा।

अथ पंचकल्याणक (दोहा)

गर्भ-ग्रीवक मध्य थकी चये षष्ठीभाद्रवसेत पृथिवी देवि उर अवतरे जजूं मोक्ष के हेत ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भाद्रपद शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म-जेठ शुक्ल द्वादशिविषै जन्में सुरपतिराय। नृत्यत् ध्वनिकरजजे में जजहूं गुणगाय ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जेष्ठ शुक्ल द्वादशी जन्मकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप-तृणवतनजसाम्राज्य तप धरचोअरणिमेंजाय। जेठ शुक्लद्वादशिविषे जजूं पद्मयुगध्याय ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रायजेष्ठशुक्लद्वादशी तपकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान-कृष्णषष्ठि फागुणहने घातिकर्मधरधीर। कह्योधर्मलहिज्ञानजिन जजूं हरो भवपीर ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेद्राय फाल्गुण कृष्ण षष्ठी ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण-सप्तमिफागुणकृष्ण हो हनि अघातिशिवथान। गएसमेदाचलथकी जजूं मोक्षकल्याण॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्णसप्तमी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला। (दोहा)

महाअर्घ-जिनसुपार्श्वके चरणयुग नमूंहियेधरध्यान। सकलतत्त्वज्ञायकसुधी घायककर्मवितान ॥१॥

चौपई-देवसुपार्श्वतणेपददोय। त्रिविधनमूंअतिहरषितहोय। तजमांधग्रीववनारसराय। सुरप्रतिष्ट

पृथ्वीदेमाय ॥ २ ॥ तिन के गभलियो अवतार। सितभाद्रवषष्ठीदिनसार। जन्मजेठसुदि द्वादशिभयो। वंशइक्ष्वाककुतारथथयो ॥३॥ हरितवर्णतनदुयसैडंड। आयुपूर्वलखवीसअखंड। राज्यपूर्वलखचौदहभोग जेठ शुक्ल द्वादशिधरयोग ॥ ४ ॥ सप्तवर्षतपकरवरवीर। ध्यानखडगगहिसाहसधीर। घातिहनेलहि केवल ज्ञान। फागुणवदिछठतूर्य कल्यान ॥ ५ ॥ सुरपतिनरपतिखगपति आय। थुतिकीनीकिम कहै बनाय। पै तुम भक्ति थकी नरनाथ। करूनिलजह्वैधरसिरहाथ ॥ ६ ॥ जय जय दोष अष्टदशाहंत। जयजय शिव सुन्दरिके कंत। जय जय निराभरणनिर्मोह। जय जय निरआयुधनिरकोह ॥ ७ ॥ जय निरलोभनिराकृतमान। जय शिवपंथदिखावन भान। जय त्रिनकारण जगहितकार। पतितउधारन विरदनिहार ॥ ८॥ आयोशरण तिहारा नाथ। इस भवमें डूबतगहि हाथ। काढि ढावि विलम न कर देव। सही विरद तुमतारणएव।

दोहा—हन अघातिसंमेदतें फागुणसप्तमिस्याम। जिनसुपार्श्वशिव को गये नमें जोड़कर राम ॥ १०॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महा अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥इति श्रीसुपार्श्वनाथजिन पूजा संपूर्णा ।७।

८ अथ चन्द्रप्रभ जिन पूजा प्रारभ्यते।

(रामचन्द्र कृत) (अडिल)

स्थापना–शुभ अतिशय चौतीस प्रातिहारिज अधिकाईं। अनंत चतुष्टययुक्त दोष अष्टादश नांही ॥
आह्वानन विधिकरूं नाय सिरसुध कर मन ही। लोक मोह तम हरन दीप अद्भुत शशिजिन ही ।१।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक। गीताछन्द।

जल–हिमशैल निर्गत तोय शीतल मधुर सुरग थकी परै। भरभृंग जिनवर चरण आगे धारदे भवमृत हरे ॥
श्रीचन्द्रप्रभ द्युतिचंदको पद कमलनख शशिलग रहे। आतंकदाहनिवारमेरी अरजसुनमैं दुख सहे ॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्युजरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चंदन–भवताप दाहदहंत मोको एकछिन न विसार ही। घनसार मलयथकी जिनेश्वर पूजहूं दुख टार ही
श्रीचन्द्रप्रभ द्युतिचंदको पद कमलनख शशिलग रहे। आतंकदाह निवारमेरी अजरसुनमैं दुख सहे ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा
ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षत–संसार उदधिअपारतारण भक्तिप्रभु तुमकी सही। शुभशालिपुंज जिनाग्रधरिहैं लहैंवसु गुणवसुमही
श्री चन्द्रप्रभु द्युतिचंदको पद कमलनख शशिलगरहे। आतंकदाह निवारमेरी अरज सुन मैं दुखसहे ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय
पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्पं–अतिसुभट मार प्रचंड शरतें हने सुरनर पशुसबै। शुभकुसुमसों पद पूजिहों जिनहरो मनमथदुखअबै ॥
श्रीचन्द्रप्रभु द्युतिचंदको पद कमलनख शशिलग रहे। आतंकदाह निवारमेरी अरजसुनमैं दुख सहे ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामबाण
विनाशनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्य–यहक्षुधा मोकोदहै नितहीनेकसुख नहिंपाव ही। चरुमिष्टतैंपद पूजिहूं जिन क्षुधारोग नसावही ॥
श्रीचन्द्रप्रभु द्युतिचंदको पद कमलनख शशि लगरहे। आतंकदाह निवारमेरी अरजसुनमैं दुखसहे ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग
विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–अतिमोह तम ममज्ञानढाप्यो स्वपरपद नहि वेवही। तुमचरण पूजूं रतनदीपक करो तम को छेवही ॥

श्रीचन्द्रप्रभु द्युतिचंदको पद कमलनख शशिलग रहे। आतंकदाह निवारमेरी अरज सुनमैं दुखसहे ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप—मलयअगर सुगंधसौरभ थकी अलिवहु आवही। जिनचरण आगेधूपखेये कर्म वसु जर जावह ॥

श्रीचन्द्रप्रभु द्युतिचंदको पद कमल नख शशिलग रहे। आतंकदाह निवारमेरी अरज सुनमैं दुखसहे।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल—शुभमोक्षमग अंतरायरोको मोहिनिरबलठानिके। जिन मोक्षदो तुमचरण पूजूं फलमनोहर आनिके

श्रीचन्द्रप्रभु द्युतिचंदको पद कमलनख शशिलगरहे। आतंकदाह निवारमेरी अरजसुनमैंदुखसहे ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ—जलगंध तंडुल पुष्पचरुले दीपधूप फलौघही। कनथाल अर्घबनाय शिवसुख रामचंद लहे सही ॥

श्रीचन्द्रप्रभु द्युतिचंदको पद कमलनख शशिलग रहे। आतंकदाह निवारमेरी अरजसुन मैं दुखसहे।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पञ्चकल्याणक । दोहा ।

गर्भ—चैत्र असितपंचमि चये, वैजयंततैं इन्द । उदर सुलक्षणा अवतरे, जजूं त्रिविध गुण वृन्द ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय चैत्रकृष्णपंचमो गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म—असित पोह एकादशी, जन्मे युतत्रय ज्ञान । वासव उत्सव कर जजे, जजहूं जन्म कल्याण ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पौषकृष्णएकादशी जन्मकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप—चन्द्रपुरी साम्राज्य तज, कृष्ण एकादशी पोह । धरो उग्र तप बन विषे, जजूं नाशहित द्रोह ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पौषकृष्ण एकादशी तप कल्याणकायअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान—फागुण सप्तम कृष्ण ही, घाति हने लहिज्ञान । भव्या [illegible] बोधे घने, जजहूं ज्ञान कल्याण ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्णसप्तमी ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण—कृष्ण फाल्गुण सप्तमी, शेष कर्म हनिमोष । गए समेदाचल थकी, जजूं गुणन के कोष॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्णसप्तमी मोक्षकल्याणकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला । दोहा ।

महार्घ-वसुजिन वसुकम हानिकै, वसेधरा वसुजाय । हरो हमारे कर्मवसु, नमूं अंगवसु नाय ॥ १ ॥

(अहो जगत गुरु देवकी ढाल ।)

अहो चंद्रद्युतिनाथ ज्ञायक अंतरयामी । सकललोक तिरकाल लखे जगपति गुण धामी ॥ जे चर अचर अवार अनागत तीत उपाये । लोकालोक निहारलखे कछु नांहि छिपाये ॥ २ ॥ शाखा ज्यों करमाहिं सिधारथ धार निहारे । अथवा अंगुरी रेख लखै करयुत इकवारे । ऐसो ज्ञान अपार और कहूं नाहि सुनो है ॥ दरशन को परताप तुहे जिन माहिभनो है ॥ ३ ॥ मैं दुःख पाये घोर चतुरगति माहि घनेरे । तुमतें छाने नांहि कहा भापूं जिन मेरे ॥ पैं शिशु की सब बात ख्यात पित जननी जाने । मांग्या विन नहि देय तोय पय धाननखाने ॥ ४ ॥ देखो करम अपार सुभट जड़ चेतन नांही । चेतन को कर रंक चोर जिम बांधत जांही ॥ सातूं अवनि मझार नरक दारुण दुःख देही । कोऊ शरणे नांहि धर्मबिन निश्चय येही ॥ ५ ॥ तिर्यच् गति दुःख घोर सहे विन संयम धारे । भूख प्यास लदिभार आर दे पीठ मझारे ॥ मारत वंधक धाय जाल मधि उडन पखेरू । पकड कसाई लेय शरण नाहीं जिहि वेरू ॥ ६ ॥ मानुषगति कुल नीच विकल इंद्रीचख नांही । भूपति आगे दौड़ तुवक कंधे धरिजांही ॥ अहनिशि चौकी देह मेघ सिय घाम सवेही । विन दरशन दुःख यह घने चिरकाल लहे ही ॥७॥ कोऊ

पुण्य वसाय बालतप तैं सुरथायो। हस्ती घोटक बैल महिष असवारी धायो॥ पूरण आवज थाय तबे माला मुरझानी। आरतितैं तज प्राण कुसुमभ वपाय अज्ञानी॥ ८॥ ऐसे दुःख अपार सहे थिरता नहीं पाई। क्रोधमान छल लोभ थकी दिन दिन अधिकाई॥ तुम करुणा निधि लेख शरण आयो ततकारी। दुःख को कर निरवार अहो जगपत जगतारी॥ ९॥ जगनायक जगदीश जगोत्तम दिष्ट निहारो। मोकोदास विचार करो वपुतें निरवारो॥ या वपुसगति पाय सहे दुःख और न हेती। यह निश्चैकर जान लखे तुमवाणी सेती॥ १०॥ करम विचारे कौन भूल मेरी अधिकाई। अग्निसहे घनघात लोहकी संगति पाई॥ ऐसे या वपुसंग सहे दुःख औरन सती। धन वाणी तुम देव सुनी गुरु के मुख एती॥ ११॥ तुम अनुकंप वसाय तजूं दुर ध्यान विकारो। वरनादिकतैं भिन्न लखूं चिद्रूप हमारो॥ ज्योति सरूपी देव वसै याही घट मांही। ढूंढूं कौन सथान लखूं तुम ध्यान उपाही॥ १२॥ तेरे ध्यान प्रताप करम जरजांय अनंता। रामचंद्र कर ध्यानलहे सुख नरगुणवंता॥ सोरठा—इस भव सुख अपार, और भव सुरपदपावै। अनुक्रम तें निरवाण, जिके सुरधर कर गावै।१३। दोहा—वसु द्रवले सुधभावतें, जजूं तिहारे पाय। देह देवशिव मुझिअबै, अहो चंद्रद्युति राय॥ १४॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीचन्द्रप्रभ जिन पूजा संपूर्णा।

९ अथ पुष्पदन्त जिनपूजा प्रारभ्यते ।

(रामचन्द्र कृत) (अडिल)

स्थापना– तीन गुप्तिव्रत पंच महा पण समति ही। द्वादश तप उपदेश उधारे संतही।
पुष्पदंत जिन पाय नमूं सिरनायहो। आह्वाननविधि करूं एक चित्त थायहो ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ओं ह्रीं श्री पुष्प दंत जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ओं ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम् ।

अथ अष्टक । सोरठा ।

जल–क्षीर उदधि समनीर भरझारी त्रयधारदे। नसे जन्म मृतपीर। पुष्पदंत जिनवरजजे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
चंदन– कृष्णागर घन सार कुंकुमचंदनमेल के। भवआतापनिवार पुष्पदंतजिनवर जजे ॥ २ ॥
ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्तायसंसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–तंदुल धवल अनूप। मुक्ता फल शशि किरण सम। होय मुकति को भूप पुष्पदंत जिनवर जजे ३

उों ह्रीं श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीनि स्वाहा।

पुष्प–कुसुमकल्प तरुलेय मन मोहन चख भावने। वाण मनोजहरेय पुष्पदंतजिनवरजजे॥

उों ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

नैवेद्य– खंडघिरत चरुसार रसना रजित आनिये। होय क्षुधा निर्वार पुष्पदंतजिनवर जजे॥ ५॥

उों ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दीप– दीपरतन मय ज्योति कंचन भाजन में धरे। है हैं ज्ञान उद्योत पुष्पदंत जिनवरजजे॥ ६॥

उों ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीनि स्वाहा।

धूप–अगर कपूर मिलाय धूपदहन शुभ की जिये। अष्टकर्मजरजाय पष्पदंत जिनवर जजे॥ ७।

उों ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–उत्तम फल अतिसार नासा नेत्र सुहावने। होय मुकति भरतार पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्प दंत जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलंनिर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–अर्घ अनूप बनाय रामचंद वसुद्रव्यतें। होय मुक्तिको राय पुष्पदंत जिनवर जजे ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। दोहा।

गर्भ–फागुण नवमी कृष्ण ही आरणस्वर्गविहाय। रामा देउर अवतरे जजूं गर्भ दिन ध्याय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्ण नवमी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म–अगहन सित प्रति पद विषे। ज्ञान तीन युत देव। जन्मे हरि सुरगिर जजे। जजूं मोक्ष हित एव ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्लप्रतिप्रदा जन्मकल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

तप– सित प्रतिपद अगहनधरचो। तप तज राज महान। सुरनर खगपति पद जजे जजहूं तपकल्याण ३

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्लप्रतिपदा तप कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–दोयज कार्तिक शुक्ल ही घाति कर्महनि ज्ञान। लह्यो धर्म दुविधा कह्यो जजहूं ज्ञान कल्याण ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय कार्तिक शुक्ल द्वितीया ज्ञान कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

निर्वाण—भाद्रव सित अष्टमिहने। सकलकर्म शिवथान। गए समेदाचलथकी जजहूं मोक्ष कल्याण।

ॐह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय भाद्रपद शुक्ल अष्टमी मोक्षकल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ—पुष्प दंत के विमल गुण सकलसुखाकर पेख। सुमर सुमर वरणन करूं। करकरहर्षविशेष।

(ढाल श्री जिन वंदिस्या जगसार हो)

पुष्पदंत जिनवंदिस्या जगसार हो, काकिंदीपुरथान पितानमूं सुग्राव जी जगसार हो वंश इक्ष्वाक महान। महानवंश इक्ष्वाक में चय स्वर्ग आरणतें भये। धनदेवि रामा मातके उरकृष्णफागुण नवथये। गर्भावतार कल्याण सुरपति ठानि सुरलोकेंगये। जननी हि सेवा राखि धनपति मास नव सुखसों भये ॥ २ ॥ अगहन सित प्रतिपद भली जगसारहो। जन्म सुराधिप जान। मेरु सुदर्शन लेगये जगसारहो। क्षीरोदक शुभ आन। आन जल अभिषेकर पुनि नृत्य तूर वजाइये। कह पुष्पदंत पिता सुजननी सौंपिमंगल गाइये। पुनिनृत्य तांडव हरी कीनों कौन उपमा दीजिये। जन्मा कल्याण उछाह मन में राखनितही पूजिये ॥ ३ ॥ तन शशीसम धन शत भलो जगसार हो। आयु पूरव लख दोय लख पूरव सुख भोग के जगसार हो। विरकत भवतें होय। होय विरकत सुकल पडिवा मास मगसिर बन गये। नमः सिद्धेभ्यः कह लौंच कीन्हो ध्यान में प्रभुथिर भये। हरि केश पंचम उदधि खेपे आय

पद पूजाकरी। निः कर्म कल्याणकसुमहिमा पुण्य करता अघहरी ॥ ४ ॥ बरस चार बहु तप करे जग सार हो। ध्यान अगनि पर जाल। कातिक सुदि दोयज भली जगसार हो। घाति चतुक लघु बाल। लघु बाल घाति उपाय केवल लोक करवत पेखही। समवादि सहित विहारकर कैकह्यो धर्म विशेष ही। तुम बचन अमृत पानते उर दाह ततछिणं ही मिटयो। लख ज्ञान कल्याणकसु महिमा मोहतम मेरो फटो ॥ ५ ॥ गण धर हरि सुर थुतिकरी जगसार हो। सो थुति उनसों होय। धन दिन यो धन या घडी जगसार हो। धन धन मोचखि दोय। मोचखि धन तुम दरसदेख्यो परसि पद धन करभये। धन धन ये वसु अंग मेरे ध्यान कर तुमकोनये। धन भई रसना आज मेरी नाथ तुम थुति करत ही। धन उभै पद तुम सरन आयो सबै कारज सरत हीं ॥ ६ ॥ निर अंबर सुंदर घने जग सारहो। दिग अंबर सुखदाय। निरा भरणं तन अति लसैं जगसार हो। को रवि को शशिकाय। शशि काय लांछन अभ्रसम दिन हीन वृद्धि सदाभ्रमै। तुम चरण नखद्युति कोटि रविबिन और उपमाको फसै। दरसन ज्ञान चरित्र भूषण देख शिवतिय होखुशी। आलिंगदेने भई सन्मुख तोही छवि लखि अतिहसी ॥ ७ ॥ निर आयुध निरभैघने जग सारहो। कोप तणो नहिलेश। मोह सुभट किम जय करो जगसार हो। युत परिवार महेश। महेश हस्ती ध्यान पै सन्नाहसंयम असि छिमा। प्रय लाय असुरन संग लाग्यो रही ना तसुकी जमा ॥ सोफेर निकट न आवही युतसमर सुपननके विषे। हरि हरादिक कै हिये बासो करै जगकी को अखै ॥ ८ ॥ तुम गुण गणपति मन धरैं जगसारहो। पै वच कहे ना जाय। ज्यों तारे स-

गगन में जगसार हो पै कर में न समाय। कर में न तारे आयज्यों गुरु सहस रसना धारही। वरनन करत नहीं पार पावे, रह्यो पौरषहारी। मैं बुद्धि बिन थुति करन उमग्यो होय कैसे नाथजी। शशि विंवजल में बालबिन बुधि गहे किम गहिहाथ जी॥ ९॥ मैं विनऊं कर जोरि के जगसारहो। तुम गुण को नहिछेव। इस भव में बहु दुख सह्या जगसार हो। देहु अचल पद देव। देव अचल पद देहु मोको शरण चरनन की गही। कहे रामचंद्र लहंतशिवजे गायसीसुरधरसही। इत होय मंगल नितनये घर ऋद्धि सिद्धि अनेकही। अज्ञान तिमिर विलाय ततछिण हिये होय विवेक ही॥१०॥

घत्ताछन्द–अष्टमि सित भाद्रं नासि अघातं पुष्पदंत शिवनगरगयं। सुरनर खग आये मंगल गाये गिरि समेद कल्याण थयम्॥ ११॥

ओं ह्रीं श्री पुष्प दन्त जिनेद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताये अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

इति श्री पुष्पदंत जिन पूजा संपूर्णा॥९॥

१० अथ श्रीशीतलनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

रामचन्द्रकृत। (अडिल)

स्थापना–शीतलयुगक्रमनमूंधर्मदशधा इमभाख्यो। उत्तमक्षमासुआदिअंतब्रह्मचर्यसुआख्यो।
सुनप्रतिबुधह्वैभविमोक्षमारगकोलागे। आह्वाननविधिकरूं चरणयुगकरअनुरागे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। (गीताछन्द)

जल–ऋतुशरदइंदुसमान अंगसुस्वच्छशीतल अतिघणो। भरहेमझारीधारदेवै नीरहिमवतगिरतणों ॥
भविपूजशीतलनाथजिनवर नशैंभवकेतापही। आतंकजाय पलाय शिवतिय होयसन्मुखआपही ॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप, ज्ञान,निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय
जन्ममृत्युजरारोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥
चन्दन–कर्पूरनीरसुगंधकेशरमिश्रचंदनबावना। जिनराजपूजेदाहनासै होय सुखरलियावना ॥
भविपूजशीतलनाथ जिनवर नशैंभवके तापही। आतंकजायपलायशिवतियहोयसन्मुखआपही ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारातापरोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षत–उत्तमअखंडितशालि उज्वलदुरितखंडनकारही। करपुञ्जश्रीजिनचरणआगै अखैपदकरतारही।
भविपूजशीतलनाथजिनवर नशैं भवकेतापही। आतंकजायपलायशिवतियहोयसन्मुखआपही॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान,निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प–निरदोषऔघअनेकविधिके कुसुमपावनल्यावही। जिनचरणचरचउछाहसेती समरबाण नसावही।
भविपूजशीतलनाथ जिनवर नशैं भवकेतापही। आतंकजायपलायशिवतियहोयसन्मुखआपही॥

ओं ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

नैवेद्य–पकवानसुन्दरसुरहिघृतकर खंडरसके मिष्टही। धरकनकभाजनपूजजिनपदक्षुधानासै दुष्टही।
भविपूजशीतलनाथजिनवर नशैंभवकेतापही। आतंकजायपलायशिवतिय होयसन्मुख आपही।

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा॥

दीप–दीपज्योतिउद्योतसुन्दर कनकभाजनधारिये। जिनपूजभविजनमोहनाशैं स्वपरतत्त्व निहारिये॥

भविपूजशीतलनाथ जिनवर नशैंभवके तापही । आतंकजायपलाय शिवतिय होय सन्मुख आप ही ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप-श्रीखंड अगरकपूर उत्त न कनकधूपायन भरै । भविखेय श्रीजिन चरण आगे दुष्ट कर्म सबै ज रै।

भविपूज शीतलनाथ जिनवर नशैं भवके तापही। आतंकजाय पलाय शिवतिय होय सन्मुख आपही॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल-फललेहि उत्तममिष्ट मोहन लौंग श्रीफलआद ही। जिनचरण पूजे मुक्तिकेफल लहैअचल अनादही।

भविपूज शीतलनाथ जिनवर नशैंभवके तापही। आतंकजाय पलाय शिवतिय होय सन्मुख आपही ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ-नीरगंध सुगन्ध तंडुल पुष्प चरु अति दीपही। कर अर्घ धूप समेत फलले रामचंद अनूप ही ।

भविपूज शीतलनाथ जिनवर नशैं भवके ताप ही। आतंकजाय पलाय शिवतिय होय सन्मुख आपही।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पञ्चकल्याणक। दोहा।

गर्भ–चैत्र कृष्ण अष्टमि चये, अच्युत तें भगवंत। उदर सुनंदा अवतरे, जजूं मोक्ष के कंत ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय चैत्रकृष्ण अष्टमी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–कृष्ण द्वादशी माघकी, जन्मे श्रीजिनराय। उत्सव कर वासव जजे, मैं जजहूं गुणगाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय माघकृष्ण द्वादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–असितमाघ द्वादश तजी, तृणवत् भूतिमहान्। नगन दिगंबर बन वसे, जजूं दशम भगवान् ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय माघकृष्ण द्वादशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–पौष चतुर्दश स्याम ही, शुक्लध्यान असिधार। हने कर्म चउ घातिया, जजूं देवमुझ तार ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय पौषकृष्ण चतुर्दशी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–अष्टम सित आसोज की,गए मोक्ष भगवान्। वसु विधि पद पंकज जजूं,मोहि देहु शिवथान ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय आश्विन शुक्ल अष्टमी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

अथ जयमाला।(दोहा)।

म ः।अर्घं–शीतल तुमपद कमल युग, नमूंसीस धरहाथ। भवदधि डूबत काढमो, कर आलंबदे नाथ ॥

(ढाल पंचमंगल की)

शीतल पद युग नमूं उभै कर जोर ही । भद्रिकापुर अवतरे अच्युत पद छोर ही ॥ दृढ रथ तात विख्यात सुनंदामाय जी । चैत्र कृष्ण वसुगर्भ लयो सुख दायजी ॥ सुखदाय गर्भ कल्याण कीजो आय सुरपति सब मिले । जननीहि सेवा राख धनपति आप सुरलोकैं चले ॥ षट् मास ले नव मास दिन में वारत्रय मणि वरषिये । गर्भाकल्याण महंत महिमा देख सवजन हरषिये ॥ ७ ॥ पूर्वाषाढ नक्षत्र माघवदि द्वादशी । जन्मे श्रीजिननाथ योगिणी सब हंसी ॥ चतुरनिकाय मझारि घंटादि बजे भले । नये मौलि पुनिपीठ सबै हरि के चले ॥ चले पीठ अवधि तैं जिन जन्म निहचै हरि लख्यो । डग सप्त चलि नुति ठानि वासव मेर चलने को अख्यो ॥ जिन लेय पांडुक वन विषे अभिषेक कर पूजा करी । पितमातदे जन्मा कल्याणक ठांनि थल चाल्यो हरी ॥८॥ हेम वरण तन तुंग नव्वै धनुको सही। लक्षण श्रीवछ आय पूर्वं लखकी कही। नीति निपुण कर राज तज्यो तृणवत तवै । लौकांतिक सुर आय संबोध चले सवैं । संबोधि आये माघ द्वादशी कृष्ण श्रीजिन वन गये । नमः सिद्धेभ्यःकहि लौंचकीन्हो उपधितज कर मुनि भये । सुर असुर नृपगण ठानि पूजा धवल मंगल गावही । निःकर्म कल्याणक सु-महिमा सुनत सब सुखपावही॥९॥षष्ठम धर निज ध्यान विषे प्रभु थिर भये । पूरन कर अनिकाज सिंह पुरमें ॥ गये षीर दानयुत भक्ति पुनर्वसुजीदियो । हरषिदेव आश्चर्य पंचततछिणकियो । कियो आश्चर्य रत्नवर्षे अर्द्धद्वादश कोटिही। धर ध्यान शुकल उपाय केवल घाति चारों तोड़ही। चर अचर लोक अलोक

उत्सव पौष वदि चउदस किये ॥१०॥ जो जन युगपद देख सब ही वरनिये। शतइन्द्र ज्ञान कल्याण साढासात लसै सम वादि ही। लखि मुनि में गणदेव इक्यासी आद ही। पूरव सहस पच्चीस हीन वर्ष तीन ही। विहरे केवल पाय आयु भई छीन ही॥ भई छीन समेद गिरते अश्विन सित अष्टमी सही। असि ध्यान शुक्ल थकी अघाते हने मुक्ति तिया लही। शतइंद्र आय कियो महोत्सव मोक्ष मंगल गायही। मैं नमूं शीलतनाथ केपद अमल गुण गण ध्यायही॥ ११ ॥ वसुखिति वसु क्रम हान वसे वसु गुण मई। ज्ञानावरणजु घाति विश्वजानो सही॥ देख्यो लोक अलोक हने द्रसनावली॥ वेदनको कर नाश अवाध भये वली। पुन वली शुद्ध चरित्र में थिर मोहनाश थकी भये॥ अवगाह गुण क्षय आयतैं निरकाय नाम गये थये। गुण अगुर लघुगोत के अंतराय क्षय वलनंत ही॥ सिद्ध भये शीतलनाथ जिन तिरकाल वंदैं सन्त ही॥१२॥वसु गुण ये विवहार नियत अनंतही। जानेगणधर पैन वखानत अंत ही॥ ज्यों जल निधि विसतार कहै कर तैं इतो। वालन मरम लहंत न जानत है कितो। कितनों न जाने उदधिहैजिम तुहे गुण वरनन करूं। मैं भक्ति वश वाचाल है कछु शंकमन नांही धरूं गुण देह तेरे करूं विनती अहो शीतलनाथ जी। चंदराम शरण निहार आयो जोर करके हाथजी॥१३॥

दोहा–शीतलके पद कमलयुग,त्रिविध नमूं सुखदाय। भवदुःख ताप मिटाय मो, अहो दशम जिनराय॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ इतिश्रीशीतलनाथजिन पूजा संपूर्णा।

११ अथ श्रीश्रेयासनाथ जिन पूजा प्रारभ्यते।

(रामचंद्रकृत) अडिल।

स्थापना–सभा लोक सुन धर्म अंग द्वादश श्रुत सारे। भये अनंदित सवै श्रेय जिन भवि बहुतारे।
प्रशम चित्त कर कोप हन्योवंदू युगकरही। आह्वाननविधिकरूं चरण युग हिय में धरही ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांस नाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र अत्र ममसंनिहितों भव भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥१॥

अथ अष्टक (छंद मोतीदाम)

जल–हिमन उद्भव स्वच्छ गगोदकं। कनककुंभ भरेण सुगंधिना। जन्म मृत्यु जराक्षय कारणं । परि
जजे श्रेयांस पदाब्जकम् ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय जन्म
मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चंदन–अगर चंदन कुंकुम सद्रवं। भ्रमर कोटिभ्रमंति सुगंधिना। प्रचुर दुःख भवार्णव नाशनं । परजजे
श्रेयांस पदाब्जकम् ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–सरलशालि अखंड मनोहरं। लसत सोम मरीचि समानकं। सुभग सौख्य अखै पद कारणं। परिजजे श्रेयांस पदाब्जकम्॥ ३॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–कुसुम औघ कल्पतरुपावने। हरत चक्षु सुगंध सुहावने। अशुभ काम मनोद्भव नाशनं। परिजजे श्रेयांस पदाब्जकम्॥ ४॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–सरस मोदकघेवरबावरं। लसत कांचन पात्र चरोत्तमम्॥ प्रचुररोग क्षुधा निर नाशनम्। परिजजे श्रेयांस पदाब्जकम्॥ ५॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दीप- कनककांचन पात्र सुदीपकं। लसत ज्योति विवर्जित धूम्रही ॥ अखिल मोहविध्वंसन कारणं।
परिजजे श्रेयांस पदाब्जकम् ॥ ६ ॥

ऊँ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग बिनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप-अगर कृष्ण कपूर सुचंदनं। सुराभता गतषट्पदवृंदही । निचय कर्महुताशन जारनं। परिजजे श्रेयांस पदाब्जकम् ॥ ७ ॥ ऊँ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय,धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल-मधुर श्री फल चारु इत्यादिही। ललित गंध महारस अद्भुतं। अतुल सौख्य महाफल दायकं,परिजजे श्रेयांस पदाब्जकम् ॥ ८ ॥

ऊँ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये, फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ-सलिल गंध सुतंदुल पुष्पकं चरुसुदीप सधूप फलौघकं। परम मुक्ति सथान विदायकं परिजजे श्रेयांस पदाब्जकम् ॥ ९ ॥

ऊँ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंच कल्याणक । दोहा।

गर्भ–पुष्पोत्तरतैं हरिचये, विमला उर अवतार । षष्ठी जेठ असेत ही, लयो जजूं भवतार ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा॥

जन्म–फागुण स्याम एकादशी, जन्मे श्रीभगवान । चतुर निकाय सुराधिपा, जजे जजूं हितज्ञान ॥२॥

ओं ह्रींश्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्रायफाल्गुण कृष्णएकादशी जन्मकल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा॥

तप–फाल्गुण ग्यारस कृष्ण ही, तज उपाधि दुखकार । धरो ध्यान चिद्रूप को,जजूं देह मतिसार ॥ ३ ॥

ओं ह्रींश्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रायफाल्गुण कृष्णएकादशीतप कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥

ज्ञान–माघ अमावस ज्ञान ही, उपज्यो केवलसार । घाति कर्म चउ जर गये, जजूं भवार्णव तार ॥ ४ ॥

ओं ह्रींश्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय माघ कृष्ण अमावस्या ज्ञान कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा॥

निर्वाण–सावणशुदि पूनिम गए, हन अघातिशिवथान । सुरनर खगपति मिल जजे,जजूं मोक्ष कल्याण।५।

ओं ह्रींश्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल पूर्णिमा मोक्षकल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥

अथ जय माला। दोहा।

महाअघ–श्रयतणे पद कमल युग,नमूं उभैकर जोर। प्रचुर इह भवतार तुम, मो निश्चय नहि और।

(ढाल पंच मंगलकी)–जय जय जय श्रेयांस नमूं सिरनाय ही । चय पुष्पोत्तरथकी,सिंहपुर आय

ही ॥ विमला उर अवतार जेठ वदि छट लियो। गर्भ कल्याणक इंद्रसवे मिल के कियो। गर्भ कल्याण सुरपति रुचि रुवासिन प्रति कह्यो। तुम करो सेवा जननिकेरी छपनसुन कर सुख लह्यो। पुन धनदवर्षा रतन केरी। मासषट् नवलोंकरी। वा समे हिर्दे वसो मेरे धन्य दिन धन वा घरी॥ १ ॥ फागुण ग्यारस कृष्ण ज्ञान युत त्रय भये। चले सिंहासन मौलि अवधि लख हरि नये। सब मिल उत्सव ठांनि इन्द्र शत आय ही। मेरु शिखर लेंजाय सनान कराय ही। कराय सनपन पूज कीनी वसन भूषण धार ही। लख रूप त्रिपति न इन्द्र हूवो सहस लोचनकार ही। नृपविमल के दरबार सुरपति नृत्य तांडव अति करो। श्रेयांसनाम उचार वासवपिता लखि आनंद भरो ॥ २ ॥ श्रमजल रहित शरीर आदि संहनन लह्यो। आदि लसै संस्थान धवल शोणित कह्यो। वलअनंत वपू सोहै नही मलतन विखै शुभलक्षण शुभगंध वचन हित मित अखै॥ अखै हितमित सहज अतिशय लिये दश जिन जन्म ही। तन हेम अस्सी डंड आयसु लाख चवरासी कही। कर राज वरष वयाल लख ही त्याग तृणवत वन गयो। सुर असुर फागुण कृष्ण ग्यारस ठानि उत्सव सव नये ॥३॥ धरत चरित मन ज्ञान जिनेश्वर को भयो। षष्ठम पूरणठान अरठपुरमेंगयो। तहां दये पय दान नाह नरनंदही। वरखेरतन अपार भयो सुखकंदही। सुखकंद वरष उभै करो तप घोर द्वादश विधितदा। असि ध्यान शुकलथकीहने चव घातिदुस्तरविधि यदा॥ सुर असुर ज्ञान कल्याण पूजा ठान बहुथुति ऊचरी। सो द्योस पावन माघ मावस सकल मंगल की घरी॥ ४ ॥ तब ही केवल ज्ञान भये जखि धनदही। समोशरण रचसार लखे सुख वृंदही ॥ मध्य

महात्रय पीठ कमल परि जिन ठये। अंतर अंगुल चार अनन्त चतुष्ठये । भये अनंत चतुष्ठ प्रभु सिर छत्रतीन विराजही। लखि चवरचवसठकरैअति सित थकी शशिद्युतिलाजही। सुर पुष्पवृष्टी वजे दुंदुभि तरु अशोक सुहावनो। दिव्यधुनि सुन सुख होत श्रवण न प्रभा मंडल.पावनो॥५॥शत योजन सुरभिक्ष व्योमगति हल तना। छाय नआन न चार भौह चख चलतना।सव विद्या परमेश न प्राणी वधहवै। बधै केश नख नाहि क्षुधादि न संभवै। संभवै मागधि भाषा सवजन तोष षट ऋतु फल फलै। सव सत्त्व मैत्री आन अठ दह मुकर भूवृष चरचलै॥ युत गंधवात गंधोद वरषा विमल नभ सुरजै करै। खित बात सोधै द्रव्यमंगल कमल पद तल सुर धरै॥ ६॥ इम गुण युक्त जिनेश विहर भवि तार ही। वरष लख इक वीस ज्ञान प्रभुधार ही। शेष रह्यो इकमास समेदा चल ठये। हन अघाति शिवथान पूर्ण श्रावण गये। गए श्रावण सुकलपूनिम मोक्ष तवहरि आयही। वसुभेव पूजा ठान उत्सव मोक्षमंगल गायही सो मोक्ष मंगल देहु मोको श्रेययुत श्रेयनाथजी। चंदराम ध्यावै वंदि सतवै जोरके युग हाथ जी॥ ७॥

दोहा-श्रेयतणे पद मोहिये, तिष्ठो आठों याम। मो हियश्रिय पद विषै, रहो होय शिवधाम ॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान,निर्वाणपंचकल्याण प्राप्तायअनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

इति श्री श्रेयांसनाथ जिन पूजा संपूर्णा।

१२ अथ श्रीवासुपूज्यजिन पूजालिख्यते ।

रामचंद्र कृत (अडिल)

स्थापना–वासपूजिजिननमूं रत्न त्रय शेखरधारो । द्वादश तप सिंगार वधूशिव दिष्ट निहारो ।
कठालिंगनदेन लुब्ध ह्वै सन्मुख आई । आह्वाननविधि करूं वार त्रय मन वच काई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक (छन्द त्रिभंगी)

जल–क्षीरोदधिनीरं निर्मलसीरं मिश्रगंध शुभ भृङ्ग भरं । जिन वर पद सारं जजुं अविकारं जन्म मृत्यु के दाहहरं । चंपा पुरथानं शुभ कल्याणं वासुपूज्य जिन राजवरं । वसुविधि कर अरचै भव दुख विरचै परिचै सब सुख तासु घरं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चंदन–अति शीतल चंदन दाह निकंदन केसर अगर कपूर घसै। शुभ सौरभ आवै मधुकर ध्यावै पूज

जिनेश्वर पापनशै। चंपापुरथानं शुभकल्याणं वासु पूज्य जिन राज वरं। वसु विधि कर अरचै भव दुख विरचै परिचै सब सुख तासु घरं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–सितशालि अखंडं दुरित विहंडं सोम समा मन हर लावै। श्रीजिन पद आगै पूज रचावै तुरत अखै पद भवि पावै। चंपा पुरथानं शुभ कल्याणं वासु पूज्य जिन राज वरं। वसु विधिकर अरचै भव दुख विरचै परिचै सब सुखतासु घरं ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–सुर तरु के लावे चक्षु सुहावै कुसुम गंध दशों दिश ध्यावै। श्री जिनवर अरचै शिव तिय परिचै मदन वाण लघु नसजावै। चंपापुरथानं शुभ कल्याणं वासु पूज्य जिनराज वरं। वसुविधि कर अरचै भव दुख विरचै परिचै सब सुख तासु घरं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासु पूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवैद्य–चरु मिष्ट मनोहर घेवर बावर कनक थाल भर अति प्यारी। श्री जिनवर आगै पूज रचावै

हरो वेदना दुखकारी। चंपापुरथानं शुभ कल्याणं वासुपूज्य जिनराज वरं। वसुविधि कर अरचै
भव दुख विरचै परिचै सब सुख तासु घरं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासु पूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा
रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–शुभ रतनसुदीपं कनकरकावी ललित ज्योतिधर प्रभुआगै। तम मोह नसावै अतिसुखपावै स्वपर
लखै निजगुण जागै। चंपापुरथानं शुभ कल्याणं वासुपूज्य जिनराज वरं। वसुविधिकर अरचै
भव दुख विरचै परिचै सब सुखतासु घरं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय मोहांध
कार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–अगर कपूरं चंदन चूरं शुभ धूपायण माहिभरै। श्रीजिन पद आगै खेय मनोहर अष्ट कर्म तत्काल
जरै। चंपापुरथानं शुभ कल्याणं वासुपूज्य जिन राज वरं। वसुविधि कर अरचै भव दुख
विरचै परिचै सब सुख तासु घरं ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–शुभ श्री फल लावै लौंग मिलावै पुंगी खारिकमनहारे। श्रीजिनपद आगै पूजरचावै लहै मुक्ति फल सुखकारे। चंपापुरथानं शुभकल्याणं वासुपूज्यजिनराजवरं। वसुविधिकर अरचै भव दुख विरचै परिचै सब सुख तासुघरं ॥८॥

ऊँ ह्रीं श्री वासु पूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलंनिर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–अति निर्मल नीरं गध गहीरं तंदुल पुष्प सुचरुलावै। पुन दीपं धूपं फलस अनूपं अर्घरामकर गुण गावै। चंपापुरथानं शुभ कल्यानं वासुपूज्य जिनराज वरं। वसुविधिकर अरचै भवदुख विरचै परिचै सब सुख तासु घरं ॥ ९ ॥

ऊँ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंचकल्यणाक। दोहा।

गर्भ–महा शुकतैंचयलियो स्यामा उर अवतार। षष्ठी षाढ असेतही जजूं भवार्णतार ॥१॥

ऊँ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय आषाढ कृष्ण षष्ठी गर्भ कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा

जन्म–चउदश फाल्गुण कृष्ण ही वासव जन्म कल्याण। कीनो उत्सव कर महा मैं जज हूं धरध्यान २

ओंह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेद्राय फाल्गुण कृष्णचतुर्दशी जन्मकल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

तप–फागुण चौदस कृष्ण ही लख भव अनिति असार। राज्य त्याग तप वनधरो जजू चरणसुखकार।

ओंह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेद्राय फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी तप कल्याणकायअर्घंनिर्वंपामीतिस्वाहा

ज्ञान–माघ शुकलदुतियाहने घातिकर्मधरध्यान। कह्यो धर्म केवल भये जज हूं ज्ञान कल्याण ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय माघ शुक्ल द्वितीया ज्ञान कल्याणकाय अर्घंनिर्वंपामीति स्वाहा

निर्वाण–भाद्रव चौदशि शुक्ल ही हनि अघाति भगवान। लही मोक्ष सुख मयसदा पूजूं मोक्षकल्याण ५

ओंह्रीं श्रीवासुपज्य जिनेन्द्राय भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी जन्म कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामातिस्वाहा

अथ जयमाला। सोरठा।

महाअर्घ–अरुणवरण अविकार वासुपूज्य जिनकी छवी। ध्याऊं भवदधितार देहि सुमति विनती करूं।

(अडिल) वासुपूज्य जिनतनै पंच कल्यानही। चंपापुर में भये नमूं धर ध्यान ही। षष्ठी श्याम असाढ गर्भ विजयातने। महा शुक्रतें आय जिनेश्वर ऊपने ॥ २ ॥ फागुण चउदश कृष्ण जन्म प्रभु को भयो। तीनों लोक मझार महा आनंद थयो। नये मुकुट पुन पीठ सुरासुरकेहले। जन्म कल्याणक जान सबै वासव चले ॥ ३ ॥ मेरु शिखरले जाय सनान कराय ही। वासुपूज्य धरनाम पिता घर आयही। तांडव नृत्य महान शक्र हित धरकरो। भूप लख्यो वसुदेव महा आनंद भरो ।४। सत्तर धनुष उत्तंग काय जिम

भानही। लक्ख वहत्तर आयु महिष चिह्न जानही। राज करो चिरकाल महासुखदायही। सभै विनश्वर जान भावना भायही ॥ ५॥ फालगुण चउदसि स्याम देव ऋषि आयकै । पुष्पांजलि शुभदेय संवोधे ध्याय कै। इन्द्र सिंगार बनाय कल्याणक तप करो। पाढल तरु तल जाय योग वन में धरो ॥ ६॥ मन परजै भयो ज्ञान ततछिण ही जबै। षष्ठमपूरणठान अशन हित जिन तबै। पुरसिद्धारथ गये दान सुंदर दियो। वरषे रतन अपार हरख अनि ही भयो॥ ७॥ वरष एक छद्मस्थ विविध विधि तप करै। ध्यान शुक्ल असि थकी घातिचव जिनहरे। उपजो केवल उभै सित माघ ही । करी धर्म की वृष्ठि मिटो भव दाघ ही।८। विहरे आरज देश बोधिभविलोग ही। ठये चंपापुर वाझ निरोधे योग ही। हनि अघाति शिवथान गये जिन रायही। भाद्रवसित उचदशी सुरासुर ध्यायही।९। मोक्ष कल्याणक थान पूज उत्सव करो । मंगल गान उचार महा आनंद धरो। रामचन्द्र कर जोर नमैं करुणापती। मोकूं भवतैं तार अरज सुन मो इती।

वत्ताछन्द—चंपापुरथानं पंचकल्याणं सुरनर खग वंदित सबही। मैं पूजूं ध्याऊ गुण गण गाऊं वासुपूज्य दे शिव अब ही ॥११॥

ओं ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्री वासुपूज्य जिन पूजा संपूर्णा ॥ १२ ॥

१३ अथ श्रीविमलनाथजिनपजा प्रारम्यते।

(रामचंद्रकृत) अडिल।

स्थापना–परमसरूपी व्रती विवेकी ज्ञानी ध्यानी। प्राणीहित उपदेश देय मिथ्या तजध्यानी।
शिवसुख भोगी विमलपायवंदूयुगकरके। आह्वाननविधि करूं। त्रिविधि त्रय वार उचरके ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक। (छंद मोतीदाम)

जल–विमलशीतल सज्जलधारयं। जन्म मृत्यु जराक्षयकारयं। सकल सौख्यविधानमनायकं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन–अगर कृष्ण कपूर सुकुंकुमं। रणित भृंग घटावलि गंधनं। अखिलदुःखभवादिक नाशनं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–अक्षत उज्वल खंडन तीक्षणं। लसतचंद समान मनोहरं। त्रिगतदुःखसथानसुदायकं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम्॥३॥

ॐ ह्रीं श्री बिमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प–कल्पवृक्ष भवेन सुगंधिना। कुसुमचारु हरे चख पावनं। प्रवल बाण मनोद्भवनाशनं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम्॥४॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–सरस मोदकमिष्ट मनोहरं सुभग कांचन पात्र सथापितं। असमदुःखक्षुधादिविध्वंसनं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम्॥५॥ ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–मणिउद्योत महातम नाशनं। लसतदीपसुकांचन पात्रकं। अखिल मोहविध्वंसनकारणं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम्॥६॥

ओं ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप-अगर चंदन धूप सुगंधिनं। मधुपकोटि रवंत दिगाननं। अशुभ कर्म महादुःखजारनं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम् ॥ ७ ॥ ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्य ण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल-सुपक्वमिष्टरसामृतपावनं। सुभगश्रीफलआदिफलौघकं। परममोक्षमहाफलदायकं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम् ॥ ८ ॥ ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-सलिलगंध सुतंडुल पुष्पकं। चरुसदीपसुधूपफलौघकं। परममुक्ति सथान विदायकं। परिजजे विमलं चरणाब्जकम् ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घनिर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। (दोहा)

गर्भ-स्यामादें उर अवतरे सहसरारतैं आय। दशमी जेठ असेत ही जज हूं हरषउपाय ॥१॥

ऊों ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय जेष्ठ कृष्ण दशमी गर्भ कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म—माघ शुक्ल तिथि चौथ को जन्मेसुरपति आय। सुरगिर सन पन कर जजे मैं जजहूं गुणगाय॥२॥

ऊों ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्लचतुर्थी जन्म कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

तप—तज्यो राज कपिलापुरी जिनवर वन में जाय। चौथ माघ सित तप धरो जजहूं तूर वजाय ॥३॥

ऊों ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्ल चतुर्थी तप कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान—माघशुकलषष्ठी हने घाति करम धर ध्यान। कहो धर्म केवल भये जजहूं ज्ञान कल्यान ॥ ४ ॥

ऊों ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्ल षष्ठी ज्ञान कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण—अष्टमिसाढ असेतही हने अघातिशिवथान। गये विमल सुरनर जजे जजहूंमोक्षकल्यान ॥५॥

ऊों ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय आषाढ कृष्ण अष्टमी मोक्ष कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ—विमल विमल मति दीजिये हो करुणापति मोहि। करूं वीनती जोरकर नमूंनमूंपदतोहि।

(ढाल अहो जगतगुरु की)

अहो विमल जिनदेव सुनियो अर्ज हमारी। इस संसार मझार और न शरण निहारी। सुनिये हरि हर देव काल सवैही खाये। उनको सरनो कौन आप नहीं थिरताये॥ २ ॥ तुम निरभै तजमोह ध्यानशुकल प्रभु ध्यायो। उपजो केवल ज्ञान लोका लोक लखायो। समोशरण की विभूति दोष इते

लखि भागे। सुपननतोढिगथाय असुरन के संगलागे ॥ ३ ॥ धरो जन्म नहि फेर मरन नहि निद्रानासी रोग नांहि नहि सोग मोह की तोरीफासी। विस्मय कोनांहि लेश धीरभय प्रकृतिविदारी। जरानांहि नहि खेद प्रस्वेद न चिताटारी ।४। मदनाही नहिवैर विषै नहि रति नहि काते। प्यासहनी नहि भूख अष्टादश दोष न याते। नमूं सीस धरि हाथ ख्यात देवन को देवा। गुण षट्चालीस भंडार करूं प्रभु तेरी सेवा ॥ ५ ॥ नमूं दिगंवर रूप नमूं लख निश्चल आसन। मुद्राशांत निहार नमूं नमि हूं तुमशासन ।६। नमूं किया निधि तोहि नमूं जग करता थे ही। अशरण को तुम शरण हरो भवके दुख येही। जामन मरण वियोग सोग इत्यादिघनेरे। फेरन आवै निकट करो प्रभु ऐसी मेरे ॥ ७ ॥ तुम लख दीन दयाल शरण हम यातें आये। वैसे देव निहार भाग्य तें तुम प्रभुपाये। रामचन्द्र कर जोर अरज करे है जिन ऐसी। विपति यह जगमांहि सवे तुम जानत तैसी ॥ ८ ॥ यातें कहनी नाहि हरो जिन साहिव मेरे। विनकारण जग वंधु तुही अन मतलव केरे। शरण गहे की लाज राख जगपति जिन स्वामी। करुणा कर संसार विमल जिन अंतर जामी ॥ ९ ॥

(दोहा)—बिनती विमल जिनेशकी जो पढसी मन लाय। जन्म जन्म के पाप सब ततछिणजांय पलाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्री विमलनाथ जिन पूजा संपूर्णा।

१४ अथ श्रीअनन्तनाथजिन पूजा लिख्यते।

(रामचंद्र कृत) अडिल।

स्थापना—बाह्यअभ्यंतर त्यागपरिग्रह यति भये। बहुजनहित शिवपंथ दिखायो हरि नये॥
ऐसे अनंतजिनेश पाय नमहूं सदा। आह्वानन विधि करूं त्रिविध करके मुदा॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्॥

अथ अष्टक। (नाराचछन्द)।

जल—क्षीर। नीर हीरगौर सोम शीत धारया। मिश्रगंधरत्न भृंग पाप नाश कारया॥
अनंतनाथ पायसेव मोक्ष सौख्यदाय है। अनंतकाल भ्रम जाल पूजतैं नसाय है॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन—कुंकुमादि चंदनादि गंधशीत कारया। संभवेन अंतकेन भूरिताप हारया॥
अनंतनाथ पायसेव मोक्ष सौख्य दाय है। अनंतकाल भ्रम जाल पूजतैं नसाय है॥

ॐ ह्री श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसार ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–श्वेतइंदु कुंदहार खंडना अक्षतहो। दुत्तिखंडकार पुंज धारये पवित्तही॥
अनंतनाथ पाय सेव मोक्ष सौख्य दाय है। अनंतकाल भ्रमजाल पूजतैं नसाय है॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प–सुरोपनीत पुष्पसार पंचवर्णल्यावहो। गंधलुब्ध भृंग वृन्द शब्दधार आवही॥
अनंतनाथ पायसेव मोक्ष सौख्य दाय है। अनंतकाल भ्रमजाल पूजतैं नसाय है॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–मोदकादि घेवरादि मिष्ट स्वादसार ही। हेमथाल भव्यधार दुष्ट मुष्ट टार ही॥
अनंतनाथ पायसेव मोक्ष सौख्य दाय है। अनंतकाल भ्रमजाल पूजतैं नसाय है॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–रत्न दीप तेजभानहेम पात्र धारिये। भवांधकार दुःख भार मूलतैं निवारिये॥

अनंतनाथ पायसेव मोक्ष सौख्य दाय है। अनंतकाल भ्रमजाल पूजतैं नसाय है॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–देवदार कृष्णसार चंदनादि ल्यावही। दशांग धूप धूम्र गन्ध भृंग वृंद ध्यावही॥

अनंतनाथ पायसेव मोक्ष सौख्य दाय है। अनंतकाल भ्रम जाल पूजतैं नसाय है॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–श्रीफलादि खारि कादि हेमथाल में भरे। सुष्टमिष्ट गंधसार चक्षु नासिका हरे॥

अनंतनाथ पायसेव मोक्ष सौख्य दाय है। अनंतकाल भ्रमजाल पूजतैं नसाय है। ॐह्रींश्रीअनंतनाथ जिनेन्द्रायगर्भ,जन्म,तप,ज्ञान निर्वाणपंचकल्याण प्राप्तायमोक्षफल प्राप्तयेफलं निर्वपामीतिस्वाहा

अर्घ–(छप्पय) सलिलशीत अतिस्वच्छमिष्ट चंदन मलियागर। तंडुल सोमसमान पुष्प सुरतरु के ल्यावर॥

चरु उत्तम अति मिष्ट पुष्ट रसना मन भावन। मणि दीपक तम हरण धूप कृष्णागर पावन॥

लहिफल उत्तम कणथालभर अर्घ रामचंद्रइमकरै। श्रीअनंतनाथके चरणयुग वसुविधिचरचैशिववरै।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक (दोहा)

गर्भ–पुष्पोत्तरतें चयलियो, सूर्यादेउर आय। कार्त्तिक पड़वा कृष्ण ही, जजहूं तूरवजाय ॥ १ ॥

उोंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय कार्त्तिककृष्णप्रतिपदा गर्भकल्याणकायअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा

जन्म–जेष्ठअसित द्वादशी विषे, जन्म सुराधिप जान। सनपन कर सुरगिरजजे, जजहूं जन्मकल्याण॥

उों ह्रीं श्रीनंतनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्ण द्वादशीजन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–जगतराज तृणवततज्यो, द्वादशिजेठ असेत। लौकांतिकसुरपति जजे, मैं जजहूं शिवहेत॥

उों ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्ण द्वादशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–चैत्रअमावस अरिहने ,घातिकर्म दुःखदाय। कह्योधर्म केवलभये, जजूं चरण सुखदाय॥

उों ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय चैत्रकृष्ण अमावस्या ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

निर्वाण–चैत्रअमावस शिवगये, हनअघातिभगवान। सुरनर खगपति मिलजजे, जजहूं मोक्ष कल्याण ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय चैत्रकृष्ण अमावस्या मोक्षकल्याणकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

अथ जयमाला।(दोहा)

महाअर्घ–कालअनंता नंतभव, जीवअनंता नंत। जिन उतपति व्यय ध्रुव कही, नमूं अनंतभगवंत ॥

(ढाल त्रिभुवन गुरु स्वामी की)

जय अनंतजिनेश्वर जी। पुष्पोत्तरतैं सुर जी। सिंह सेन नरेश्वर के चय सुत भये जी। सूर्यादे माताजी। जग पुण्य विख्याता जी। तिन कै जग त्राता गर्भं विषे थये जी ॥ १ ॥ कार्त्तिक अंधियारी जी। पडवा अविकारी जी। साकेत मझार कल्याणक हरिकीयो जी। षट् मास अगेरे जी। मणि स्वर्ण घनेरे जी। वरषे नृप केरे मंदिर धन जीयोजी ॥ २ ॥ द्वादशि अंधियारी जी। जनमे हित कारी जी। प्रभुजेठ मझार सुरासुर आयकै जी। सुर गिरले आये जा। भव मंगल गाये जी। अभिषेक रचाये पूजे ध्यायके जी ॥ ३ ॥ फिर पित घर लाये जी। नृत तूर बजाये जी। लख अंगनमाये मात पिता तबै जी। तनहेम महाछवि जी। पंचास धनू रवि जो। लख तीस कहे कवि आय भई सवे जी ॥ ४ ॥ नृप पदवी धारी जी। लख पण दह सारी जो। सब अनित्य विचारि तपों बनको गये जी। वदि जेठ द्वादशी जी। तप देख सुराऋषि जी। पद पूजनये नस पाप सवै गये जी ॥ ५ ॥ षष्ठम कर पूगे जी। भोजन हित सूरो जी। पुर धर्म सतूरो आवत देख के जो। नव भक्ति थकी पयजी। वैशाष तहां दियो जी। मणि वृष्टि अक्षय करी सुर पेख कै जी ॥ ६ ॥ धर ध्यान शुकल जव जी। चउघाति हने तब जी। सुर आय मिले सब ज्ञान कल्याण ही जी। वदि चैत अमावस जी। लख भक्ति तुहे वस जी। समवादि रच्यो तसु उपमा भान ही जी ॥ ७ ॥ ममत्वादि जिते भवि जी। सुन धर्म तिरे सवजी। प्रभु आय रही जब मासत्तणी तबे जी। संमेद पधारे जी। सब योग सुधारे जी। सम भाव विथार

वरी शिव तिय जबै जी ॥ ८ ॥ वसु गुण युत भूषित जी । भव छोड़ वसे तितजी। सुख मगन भये जित मावस चैत की जी। सुर सब मिल आये जी। शिव मंगल गाये जी। बहु पुण्य उपाय चले तुम गुणथकी जी ॥ ९ ॥ गुण वृंद तिहारे जी। बुध कौन उचारे जी। गण देव निहारे पै वच ना कहै जी। चंदराम कहे थुति जी। वसु अंगथकी नुति जी। गुण पूरन दो मति मर्म तुहे लहै जी ॥ १० ॥ प्रभु अरज हमारी जी। सुनियों सुखकारी जी। भव में दु:ख भारो निवारो हो धनी जी। तुम शरण सहाई जी। जग के सुख दाई जी। शिव दे पित माई कहा कबलों भनों जी ॥ ११ ॥

घत्ताछन्द–इति गुणगण सारं अमल अपारं जिन अनंत के हिय धरई। हन जरमरनावलि नाश भवावलि शिव सुन्दर ततक्षिण वरई ॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीअनंतनाथ जिन पूजा संपूर्ण ॥१४॥

१५ अथ धर्मनाथ जिन पूजा प्रारम्भ्यते।

रामचन्द्र कृत। अडिल।

स्थापना—सार द्रव्यषट् कहे पदारथ नव शुभ भाखे। सप्त तत्त्व बरनये काय पंचाशत आखे।

लोक तीन थिति कही धर्म जिन वर वृषदायक। आह्वाननविध करूं प्रणम त्रिविधा शिवनायक॥

ओं ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ओं ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक (ढाल मद अवलिप्त कपोलको)

जल—अति निर्मल शुचि नीर तीर्थ उद्भव भृंगधारै। शीतल मिश्रितगंधसुरभतैं मधुझंकारै।

जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिन शिव के मंडन जन्म मृत्यु आताप दुरितदारिद दुःख खंडन॥

ओं ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग बिनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन—कृष्णागर कश्मीर नीरघनसारसुणंदन। षट्पद ओघ भमन्तसुरभतैं दाहनिकंदन।

जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिन शिवके मंडन। जन्म मृत्यु आताप दुरित दारिद दुःख खंडन॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा
ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–सोम किरण समश्वेत शुद्ध डंडीर अखंडित । अति निर्मल चखहरै शालि शुभसौरभ मंडित ।
जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिनशिव के मंडन । जन्म मृत्यु आताप दुरित दारिद दुःख खंडन ॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय
पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प–पंचवर्णमय कुसुम कल्प तरु के मन भावै । गंध लुब्ध मधुभ्रमै समर के वाण नसावै ।
जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिन शिवके मंडन । जन्म मृत्यु आताप दुरित दारिद दुःख खंडन ॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय काम
वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य–उज्वल ललित पवित्र कनक भाजन चरुधारै । मधुर घृत रस युक्त क्षुधा लखतै निरवारै ।
जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिन शिवके मंडन । जन्म मृत्यु आताप दुरित दारिद दुःख खंडन ॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा
रोग बिनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप-मणिमयदीपककांतिथकीतम औघविदारै। विकसत है वरबोध सुपरलखगुण विसतारै।
जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिन शिवके मंडन। जन्म मृत्यु आतापदुरित दारिद दुख खंडन॥
ॐ ह्रींश्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांध
कार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप- अगर कृष्ण कर्पूर सुरभ चंदन के दाहक। धूप निर्जरा करै अघ है शिवगाहक। जजूं चरण धर
भक्ति धर्म जिनशिवकेमंडन। जन्ममृत्यु आताप दुरित दारिद दुःख खंडन ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट
कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल-सुरतरु के फल भूरि कनक भाजन भर पावन। श्री फल मिष्ट बदाम चक्षु घ्राणा मन भावन।
जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिन शिवके मंडन। जन्म मृत्यु आताप दुरित दारिद दुःख खंडन॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष
फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घं-जल गंधाक्षत पुष्प दीप चरु धूपमिलावै। अर्घ रामचद करै मेल फल शिव सुख पावै।
जजूं चरण धर भक्ति धर्म जिन शिवके मंडन। जन्म मृत्यु आताप दुरित दारिद दुःख खंडन।

ओं ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अर्घन पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पञ्चकल्याणक । दोहा ।

गर्भ–सर्वारथ सिधितैं चये, गर्भसुव्रतासार । वैशाख असित तेरस सही, लयो जजूं भवतार ।

ओं ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण त्रयोदशी गर्भ कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म–जन्म माघ शुदि त्रोदशी, सुरपति लख इतआय । सुरगिर ले सनपन जजे, मैं जजहूं गुण गाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय माघशुक्ल त्रयोदशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप–माघ शुक्ल तेरस तज्यो, तृणवत राज महान । धरचौ धीर तप बन विषे, जजूं धर्म भगवान ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय माघशुक्ल त्रयोदशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान–पौष शुक्ल पूनिमहने, घाति कर्म लह ज्ञान । कही सकल थिति लोक की, जजूं बोध भगवान ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय पौष शुक्ल पूर्णिमा ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाण–जेठ शुक्ल तिथि चौथ ही, हन अघाति शिवथान । गये समेदाचल थकी, जजूं मोक्ष कल्यान ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ–बंदूं श्रीजिन धर्म के, पदनख मंडन भान । ममता रजनी हरन दिव, भवदधि तारन जान ॥१॥

चौपई–सर्वारथ सिधितैं अहमिंद । चय रतनाग पुरी गुण वृंद ॥ पिता भानु गुणवंत अपार । मातसुव्रता गर्भ मझार ॥ २ ॥ आये वदि त्रोदसि वैशाख । नये मुकुट हरि धर अभिलाख ॥ चले सवैं सुर युत परिवार । गर्भ कल्याणक कीनो सार ॥ ३ ॥ षट् नव मास थकी मणि वृष्ट । वार तीन दिन माहीं सृष्ट ॥ करी धनद सुर छप्पन पाय । सेवैं माता को सुख दाय ॥४॥ जन्म माघ सुदि तेरस भयो । तीन ज्ञान युत अचरज थयो ॥ वजे घंटादि सुमन की वृष्ट । इंद्र चले सब नुति कर इष्ट ॥५॥ माया शिशुधर शची जिनंद । परदच्छिन लीने सानंद ॥ वासव नमि लीने हर षाय । चले मे पांडुक वन जाय ॥ ५ ॥ क्षीरोदधितैं जल शुभ लाय । सनपन कर भव मंगल गाय ॥ वाजैं साढे वाराकोडि । जाति धुनैं कर नृत्य वहोडि ॥ ६ ॥ पूज पदांवुज पित घर लाय । तांडव नृत्य करो सुर राय ॥ धर्म नाथ कह निज थल गये । वालचन्द्र सम वढते भये ॥ ७ ॥ तन कंचन धणुपण चालीस । आयु वरष लख दशकी ईस ॥ पांच लाख व्रष कीनो राज । कछु कारण लख धर्म जहाज ॥ ८ ॥ तृणवत त्यागो भावन भाय । देव ऋषि नय पूजे पाय ॥ और सुरासुर खग अविनीस । शिविका ले थापे वन ईस ॥९॥ कचलौंचत उपजो मन ज्ञान । षष्ठम धर तिष्टे भगवान ॥ तेरस माघ शुक्ल सुर राय । करयो कल्याणक

तप सुख दाय ॥ १० ॥ वर्द्धमानपुर भोजन काज। गये दियो पय धर्म जहाज ॥ कोटि अर्द्ध द्वादशमणि धार। भई वृष्टि घर सेण अगार ॥ ११ ॥ वर्ष एक तप दुर्धर धार। पूनिम पौष ध्यान पर जार ॥ भस्म घातिया कर वर वीर। केवल ज्ञान उपायो धीर ॥ १२ ॥ वर्ष अढाई लख उपदेश भविजन भवतैं तार अशेष ॥ शेष मास इक आयु जब रही। गिर समेद प्रभु पहुंचे सही ॥ १३ ॥ योग निरोध करे सम भाव। हने अघाति भये शिव राव ॥ चतुर्निकाय देवता आय। उत्सव कीनो मंगल गाय ॥ १४ ॥ सो मंगल दे जिन पत मोहि। जोर उभे कर विनवू तोहि ॥ जे चर अचर लोक त्रय माहिं। तुमतैं पर-नति छानी नाहिं ॥ १५ ॥ यातैं मो मन की सब बात। हो त्रिभुवन पति कर विख्यात ॥ रामचंद्र बिनवै प्रभु तोहि। धर्मनाथ जिनदे शिव मोहि ॥ १६ ॥

घत्ताछन्द–इति श्रीजिनधर्मं गुण गणपरमं जो भविमन वचतन गावै। लहि सुर सुखसारं समकित धारं नरहुय शिव सुख लघु पावै ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीधर्मनाथजिन पूजा संम्पूर्णा। १५ ॥

१६ अथ श्रीशान्तिनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

(रामचंद्र कृत) अडिल।

स्थापना—शांति जिनेश्वर नमूं तीथ वतु दुगण ही। पंचम चक्री अनंग दुविधषट् सुगण ही ॥
तृणवतूरिधसब छाड धार तप शिववरी। आह्वानन विधिकरूं वारत्रय ऊचरी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक। (नाराचछंद)।

जल—शैलहेम ते पतंत आपगासु व्योम ही। रत्नभृंग धार नीर शीत अंगसोम ही ॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है। अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन—चंदनादि कुंकुमादि गंधसार ल्यावही। भृंगवृंद गुंजते समीर संग ध्यावही ॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है। अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–इंदु कुंद हारतें अपार स्वेत शालि ही। दुतिखंड कार पुंज धारिये विशाल ही॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है। अनंत सौख्यसार शांतिनाथ सेय पाय है॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–पंच वर्ण पुष्प सार लाइये मनोज्ञ ही। स्वर्ण थाल धारिये मनोज नाश योग्य ही॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है। अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–खंड घृत कार चारु सद्य मोदकादि ही। सुष्टु मिष्ट हेम थाल धार भव्य स्वाद ही॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है। अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–दीप ज्योति को उद्योत धूम होत ना कदा। रत्न थाल धार भव्य मोह ध्वांत है विदा॥

रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है । अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांध कार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप–अग्रचंदनादि द्रव्यसार सर्व धार ही । स्वर्ण धूप दानमें हुताश संग जार ही ॥

रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है । अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल–चोटकेन श्री फलेन हेम थाल को भरे । जिनेश के गुणौघ गाय सर्वएन को हरे ॥

रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है । अनंत सौख्यसार शांतिनाथ सेय पाय है ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ–(छप्पय) शरद इंदुसम अंबुतीर्थ उद्भव तृट हारी । चंदन दाह निकंद शालि शशितें द्युति भारी सुर तरुकेवर कुसुम सद्य चरु पावनधारै । दीप रत्नमय ज्योति धूपतें मधु झंकारै॥लहफलउत्तमअर्घ करशुभरामचंदकणथाल भर।श्रीशांतिनाथ केचरणयुग वसुविधिअरचैभावधर॥ ॐह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंचल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तयेअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक। दोहा।

गर्भ–सर्वारथ सिधितें चये, भाद्रव सप्तमि स्याम। ऐरादे उर अवतरे, जजूं गर्भ अभिराम ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय भाद्रपद कृष्णसप्तमी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जन्म–जेठ चतुर्दशि कृष्ण ही, जनमें श्रीभगवान। सनपन कर सुरपति यजे, मैं जजहूं धर ध्यान ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

तप–जेठ असित चउदसिधरचों, तप तज राज महा। सुर नर खगपति पदजजे, मैं जजहूं भगवान ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्णचतुर्दशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–पौष शुकल दशमीहने, घाति कर्म दुख दाय। केवल लहि वृष भाखियो, जजूं शांति पद ध्याय ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय पौष शुक्ल दशमी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–कृष्ण चतुर्दशि जेठ की, हन अघाति शिवथान। गए समेदाचल थकी, जजूं मोक्षकल्याण ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

अथ जयमाला। सोरठा।

महाअर्घ–शांति जिनेश्वर पाय, वंदूं मनवचकाय तैं। देहु सुमति जिन राय, यूं विनती रुचिसो करूं ॥

(ढाल संसार सासरियोदोहिलो)

शांति कर्म वसु हानिकैं। सिद्ध भये शिव जाय। शांति करो सब लोक में। अरज यह सुख दाय। शांति करो जग शांत जी ॥ २ ॥ धन नगरी हथना पुरी। धन पिता विश्व सेन ॥ धन उदरे अयरासती शांति भये सुख देन, शांति करो जग शांत जी ॥ ३ ॥ भाद्रव सप्तमि कृष्ण ही गर्भ कल्याणक ठांन ॥ रत्न धनद वरषाइये षट् नव मास महान। शांति करो जग शान्त जी ॥ ४ ॥ जेठ असित चउदस विषे। जन्म कल्याणक इंद ॥ मेरु करचो अभिषेक के पूजनचेसुर वृंद। शांति करो जग शांत जी ॥ ५ ॥ हेम वरण तन सोहनो तुंग धनुष चालीस ॥ आयु वरष लख नर पति सेवत सहस बत्तीस। शांति करो जग शान्त जी ॥ ६ ॥ षट् खंड नवनिधि तिय सवै चउदह रत्न भंडार ॥ कछु कारण लखके तजे खणचव असिथ अगार ॥ शांति करो जग शांत जी ॥ ७ ॥ देव ऋषि सब आय के। पूज चले जिन वोध ॥ लेय सुर्रा शिवका धगे। विरछ नंदी सुर सोध॥ शान्तिकरो जग शांत जी ॥ ८ ॥ कृष्ण चतुर्दशी ज्येष्ठ की। मन परजै लह ज्ञान ॥ इंद्र कल्याणक तप करचो। ध्यान धरचो भगवान् ॥ शांति करो जग शांत जी ॥ ९ ॥ षष्ठम कर हित असन के। पुर सोमनस मझार ॥ गये दियो पय मित्त जी। वरषे रत्न अपार ॥ शांति करो जग शांत जी ॥१०॥ मौन सहित वसु दुगण ही। वरष करे तप ध्यान ॥ पौष शुकल दशमी हने। घाति लियो प्रभु ज्ञान ॥ शांति करो जग शान्त जी ॥ ११ ॥ समव शरण धनपति रच्यो। कमलासन परि देव॥ इंद्र नरा षट् द्रव्य की। सुन थिति

थुति कर एव ॥ शांति करो जग शांत जी ॥ १२ ॥ धन्य युगल पद मोतणो। आयो तुम दरबार ॥ धन्न उभै चखये भये। वदनजिनेंद्र निहार ॥ शांति करो जग शांत जा ॥ १३ ॥ आज सफल करये भये। पूजत श्रीजिन पाय ॥ सीस सफल अब ही भयो। धोकिये तुम प्रभु आय ॥ शांति करो जग शान्त जी ॥ १४ ॥ आज सफल रसना भई। तुम गुणगान करंत ॥ धन्य भयो हिय मोतणो, प्रभु पद ध्यान धरंत ॥ शांति करो जग शांत जी ॥ १५ ॥ आज सफल युग मोतणो, श्रवण सुनत तुम वैन ॥ धन्य भये वसु अंग ये। नमत लियो अति चैन ॥ शांति करो जग शांत जी ॥ १६ ॥ राम कहै तुम गुण तणो। इंद्र लहै नहि पार ॥ मैं मति अलप अजान हूं। होय नहीं विस्तार ॥ शांति करो जग शांत जी ॥ १७ ॥ वरष सहस पच्चीस ही। षोडश कम उपदेश ॥ देय समेद पधारिये। मास रहे इक शेष। शांति करो जग शांत जी ॥ १८ ॥ जेठ असित चौदस गये। हन अघाति शिव थान ॥ सुर पति उत्सव अति करयो। मंगल मोक्ष कल्याण ॥ शांति करो जग शांत जी ॥ १९ ॥ सेवक अरज करे सुनो। हो करुणानिधि देव ॥ भवदधि दुःख मय तें मुझे। तार करूं तुम सेव। शांति करो जग शांति जी ॥२०॥

घत्ताछन्द–इति जिन गुण माला अमर रसाला। जो भविजन कंठै धरई। हो दिवि अमरेश्वर पुहमिनरेश्वर शिव सुन्दर ततछिन वरई ॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा। इति श्रीशांतिनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥१६॥

१७ अथ श्रीकुन्थुनाथ जिन पूजा प्रारभ्यते।

(रामचंद्र कृत अडिल)

स्थापना—जे परशंसा करैं रागतासों नहीं। करैं विराधन दुष्टथकी दुख ना कहीं।
शुद्धातम में लीन कुंथु जिनको नमूं। आह्वानविधिठान सबै अघ को वमूं॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्।

अथ अष्टक। (त्रिभंगीछन्द)

जल—अति आमय दुस्तरतैं तृट्थावैं दुखपावै अतिही भारी। तिस नाशनकारण पूजन आयो तीरथको जल भरझारी। श्रीकुंथुजिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज गुमायो अबतारो तुम पद शरणा॥ १॥ ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलंनिर्वपामीति स्वाहा।

चंदन—भवगाहत श्रमतैं दाह भयो मुझ छिन सुख नांही का वरना। घस कुंकुम चंदन दाह निकंदन पूजन लायो हरमरना। श्री कुंथुजिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल

अनंत अकाज गुमायो अब तारो तुम पद शरना॥२॥ उों ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–यह संसार अपार उदधिको तारन भक्ति तुहै नवका। सित तंडुल लावै पुंज बनावै लघु पावैते सुख शिवका। श्री कुंथु जिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज गुमायो अबतारो तुम पद शरणा॥३॥ उों ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्नये अक्षतान् निर्वपामीनि स्वाहा।

पुष्प–सुर असुर विद्याधर हरि हर प्रतिहर ब्रह्मा भ्रष्ट मदन कीने। सुर तरुके कुसुम थकी पद पूजूं हरो समर इन दुख दीने। श्री कुंथुजिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज गुमायो अवतारो तुम पद शरणा॥४॥ उों ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–दोष अठारा यातैं होय क्षुधा तृपति ना नितखाते। सद घेवर मोदक पूजन लायो हरो वेदना दुःख पाते। श्री कुंथुजिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज गुमायो अब तारो तुम पद शरना॥५॥

उों ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवैद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–मोह महातम छाय रह्यो मम ज्ञान हर्यो दुख अति दीना। मणिदीप उजारा तुम ढिगधारा सुपर लखैं तम ह्वै छीना। श्री कुंथु जिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज गुमायो अबतारो तुम पद शरना ॥६॥ ऊँ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–कारागार इह वपुमें मुझ मूंदि महा दुःख विधि पारें। क्रम इंधन जारन भरधूपायन अगर हुताशन संग जारैं। श्री कुंथुजिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज गुमायो अब तारो तुम पद शरना ॥ ७॥ ऊँ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–मोक्ष महामगरोक रह्यो अंतराय कर्म मुझ बल हरकैं। शिवकारण फल ले पूजन आयो स्वर्णथाल तुम ढिग भरकैं। श्री कुंथुजिनेश्वर आपण से चर लख पोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज गुमायो अबतारो तुमपद शरना ॥ ८॥ ऊँ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–जल गंधाक्षत पुष्प दीप चरु धूप फलोत्तम अघकरैं। जिन गुण गण गावैं तूर बजावैं रामचंद शिव रमनिवरैं। श्री कुंथुजिनेश्वर आपण से चर लखपोखे घट धर करुणा। मैं काल अनंत अकाज

गुमायो अब तारो तुम पद शरना ॥ ९ ॥ ऊँ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पञ्चकल्याणक । दोहा ।

गर्भ–दशमी श्रावण कृष्ण ही । तजसर्वारथ सिद्ध ॥ गर्भ लियो श्रीमतितणो जजूं देउ शिवरिद्ध ॥ १ ॥

ऊँ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय श्रावण कृष्ण दशमी गर्भकल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–प्रतिपद सित वैशाख ही जन्म सुराधिप जान। उत्सव कर सुर गिरि जजे। मैं जजहूं भवहान ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेंद्राय वैशाख शुक्ल प्रतिपदा जन्म कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

तप–तज्यो राज षट् खड को तृणवत दीक्षा धार। पड़वा सित वैशाख ही जजूं भवार्णवतार ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय वैशाख शुक्ल प्रतिपदा तप कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

ज्ञान–चैत्र शुक्ल तृतियाहने । घातिकर्म लह ज्ञान। कह्यो धर्म सुन भवितिरे जजहूं ज्ञान कल्याण ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल तृतीया ज्ञान कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–पड़वा सित वैशाख ही । सकल कर्म हन मोख। गएसमेदाचलथकी जजूं चरण गुणपोख ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय वैशाख शुक्ल प्रतिपदा मोक्ष कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ-कुंथुनाथ जिन के चरण त्रिविध नमूं कर जोर। धर दीक्षा षट्काय को पोखे षट्खंड छोर १

(ढाल त्रिभुवन गुरु स्वामी की)

जय कुंथुजिनेश्वर जी। वंदू परमेश्वर जी। सर्वारथ सिद्धथकी चय आयेजी। श्रीमति उर थाये जी। नृप सूर्यकहायेजी। वदिश्रावण दशमें मंगल गाइये जी ॥ २ ॥ वारणपुरथानं जी। हरि जन्म कल्याणं जी। मिळ आये वैशाख शुकल पडिवानवै जी। सुर गिरलेआये जी। जल क्षीर सुलाये जी। अभिषेक सिंगार करी पूजा सबैजी ॥ ३ ॥ फिर पित ढिग आये जी। नच तूर वजाये जी। लख अंग नमाये मात पिता सबैजी। तन कंचन सोहै जी। रवि कोटि को हैजी। धनु तुंग पैंतीस अजा लछिन फबै जी ॥ ४ ॥ वयबालबिहाई जी। नृप पदवी पाईजी। शुभ चक्र इत्यादि भंडार विषै भयेजी। षट्खंडके भूपा जी। बल धार अनूपाजा। सुर सिंधु मझारि इत्यादि सबै जये जी ॥ ५ ॥ नृप शेखर धारा जी। सेवैंपद साराजी। वत्तीस हजार तियातिगुणीलही जी। कछु कारण पायोजी। भव चंचल भायो जी। नवनिधि सिंगारविभौविषवत तजे जी ॥ ६ ॥ लौकांतिक आये जी। पद पुष्प चढायेजी। नुतिकै थुति ठानि संबोधि घरां गये जी। शिविकाहरिकीनीजी। मिल कंधे लीनी जी। वन जायतिलक तरु तल ठये जी ॥ ७ सिंगार उतारे जी। सिरकेशउपारे जी। नमः सिद्ध उचारे सुधातम ध्याइयो जी।

वैशाख उजारो जी। पडिवा तपधारो जी। तब ही मन ज्ञान जिनेश्वर पाईयो जी ॥ ८ ॥ षष्टम कर पूरो जी। भोजनहितसूरोजी। पुरमंदिर धीर लख भू पाय धरैजी। वरदत निहारेजी। नमि तिष्ठ उचारे जी। पय दान सुरां लख पंचाचर्य करेजी ॥९॥ षोडश व्रषताई जी। कर तप अधिकाईजी। आतम लव लायहने चउ घातिया जी। केवल लहि ज्ञानोजी। त्रैलोक्य बखानो जी। सित तीज कल्यानो चैत सुरां कियो जी ॥ १० ॥ सब आरज विहरे जी। भवितार घनेरे जी। सब आयु नवेड समेदाचलठयेजी। वैशाख सु प्रतिपद जी। अघातिकरे रद जी। तब मोक्ष महापद कुंथजिन गयेजी ॥११॥ श्रीजिनवर स्वामी जी। गुण पूरणधामीजी। करुणा निधिनामी अरज सुनो करूंजी। भववास महावन जी। इसमे सुखना छिनजी। बिन कारण ए जन वैर करैं डरूंजी ॥ १२॥ तुम शरण सहाइ जी। बिन कारण भाई जी। हो त्रिभुवन राई शरण तुहै गहूंजी। गुण गान तिहारे जी। चंदराम उचारे जी। हर वैर हमार सौख्य सदा लहुंजी ॥ १३ ॥

घत्ता छन्द—गुण गण अविकारं भवदधि तारं कुंथु जिनेश्वर के अमलम्। सुर नर खग ध्यावै शिपपद पावै रामचंद जजपद कमलम्।

ओं ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्री कुंथुनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥ १७ ॥

१८ अथ श्रीअरनाथजिन पूजा लिख्यते।

(रामचंद्रकृत) अडिल।

स्थापना-तज षट्खंड विभूति तृणवत् सवै। शुद्धातम में लीन भये अर जिन जवै।
ध्यान खडगतैं हने कर्म वसु मैं नमूं। आह्वानन विधि ठान सवै अघ को वमूं॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्॥

अथ अष्टक (गीता छन्द)

जल-शरद ऋतु के इंदतैं सित तीर्थ उद्भव नीर ही। भर भृंग मणिमय धार देवे नसैं त्रिविधा पीड़ ही॥
अरनाथ दुस्तर हान अरि वसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इंद्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु
जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन-घनसार अगर मिलाय कुंकुम घसत परिमल दिग्महैं। चंचरीक शब्द करंत आवैं पूजजिन भवतप जहैं।

अरनाथ दुस्तर हान अरि वसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शतइंद्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसार ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–सितशालि शशितें खंड नाहीं सरलदीरघ आनही। करपुंज जिनवर चरण आगे लहै अविचलथानही

अरनाथ दुस्तर हानअरि वसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इन्द्र आय उछाह कीना जजूं पुलकित अंग ये॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प–कुसुम चारु अपार परिमल कल्प तरु के पावने। चख घ्राण हारी भरूं थारी समर बाण नसावने ॥

अरनाथ दुस्तर हान अरि वसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इन्द्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य–खंड घृत पकवान सुन्दर स्वर्ण भाजन में भरे। अति मिष्ट रसना भावना जिन पूज रोग क्षुधाहरे ॥

अरनाथ दुस्तर हान अरिवसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इन्द्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप—मणि दीप ज्योति उद्योत अद्भुत ध्वांत नाशन भान ही। धर कनक भाजन पूजजिनपद लहैंकेवलज्ञानही॥
अरनाथ दुस्तर हान अरिवसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इन्द्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये॥
ऊों ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप—घनसार अगर दशांगधूपसु स्वर्ण धूपायण भरे। जिन चरण आगे खेय भविजन दुष्टकर्म सब जरे॥
अरनाथ दुस्तर हानअरि वसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इन्द्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये॥
ऊों ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल—बादाम श्रीफल दाख खारिक आदि फलबहुमिष्टही। भरकनकथाल जिनाग्र धारैलहैंशिवफलसुष्टही।
अरनाथ दुस्तर हान अरिवसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इन्द्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये॥
ऊों ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ—नीर गंधसुगंध तंदुल पुष्प चरुअर दीप ही। करअर्घ धूपफलौघ लेकर रामचंद अनूपही। अरनाथ दुस्तर हान अरि वसु मोक्ष निरभै ह्वै गये। शत इन्द्र आय उछाह कीनो जजूं पुलकित अंगये॥ऊोंह्रींश्रीअरनाथ जिनेन्द्रायगर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाणपंच कल्याण प्राप्तायअनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

अथ पंचकल्याणक । दोहा ।

गर्भ-फाल्गुण सुदि तृतीया चये, अपराजितते इंद । उदर सुमित्रा अवतरे, जजूं देव गुण वृंद ॥

ऊं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय फाल्गुण शुक्ल तृतीया गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म-अगहन चउदस शुक्ल हो, जन्मे युतत्रय ज्ञान । हरि सनपन कर गिर जजे, जजहुं जन्मकल्याण ॥

ऊं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्ल चतुर्दशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

तप-मगसिर दशमी शुक्ल ही, षट्खंड रत्न महान । तृणवत तज तप वन धरयो, जजूं चरण धर ध्यान ॥

ऊं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्ल दशमी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान-कार्त्तिक द्वादशी शुक्ल ही, घाति कर्म हन ज्ञान । लह्यो धर्म दुविधा कह्यो, जजूं ज्ञान कल्याण ॥

ऊं ह्रीं अरनाथजिनेन्द्राय कार्त्तिक शुक्ल द्वादशी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाण-चैत्र अमावस शिव गये, सर्व कर्म हन देव । चतुर्निकाय सुरांजजे, मैं जजहूं वसुभेव ॥

ऊं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण अमावस्या मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ।

अथ जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ-अर जिन के पद कमल युग, बंदूं सीस नवाय । देउ सुमति विनती रचूं, पढे पाप खैं जाय ॥

(ढाल चन्द्र प्रभ जिन ध्याइयो जी)

अर अराति वसु हानके, शिव तिय के पति थाय। सुख अनंता संग लहै वंदूं गुण मन लाय॥

वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी। २। ध्यावत शिव पदवी लहै नर पद की किह बात॥ भृत्य होय सुर पति रहे देखो फल अव दात। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ३॥ हस्तिनाग पुर में नमूं पिता सुदर्शन पाय। मात सुमित्रा कूख में आये त्रिभुवन राय। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ४॥ फागुण सुदि तृतीया कह्यो सुरपति गर्भ कल्याण। रत्न वृष्टि धनपति करी षट् नव मास महान। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ५॥ मगसिर सुदि चउदसि विषे जन्मे सुरपति आय। कर सनपन सुर गिर परे पूजे तूर वजाय। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ६॥ आयु असीचव सहस की तन कंचन धनु तीस। मुकुट वंध नर पति करैं सेवा सहस वत्तीस॥ वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ७॥ कछु कारण प्रभु पाय के भव तन भोग विनंद। देव ऋषि सब आय के बोधि चले पद वंद। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ८॥ मगसिर सुदि दसै तजे षट् खंडरत्न महान। छिनमें सहस तिया तजी अंबतले धर ध्यान। वुध हो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ९॥ षष्ठम पूरो कर चले गज पुर भोजन काज। प्रभु के कर पर कर करचो अपराजित महा राज। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ १०॥ नवधा भक्ति सुरांलखी करी वृष्टि सुख पाय। साढा द्वादश कोटि ही मणि सुवरण जस गाय। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी॥ ११॥ षोडश वर्ष करे

भले उग्र उग्र तप सार। कार्तिक सुदि द्वादश हने घाति करम दुःख कार ॥ वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी ॥ १२ ॥ केवल ज्ञान उपाय के कह्यो धर्म भव तार। द्वादश व्रत श्रावक तणे दश विध वृष अणगार। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी ॥ १३ ॥ विहर समेदा चल गये आय रही इक मास। योग निरोध अघातिया हन लीनों शिव वास। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी ॥ १४ ॥ चैत अमावस सब सुरां आये चतुरनिकाय। मोक्ष सथानक पूज के ध्याये मंगल गाय। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी ॥ १५ ॥ अविनाशी सुख में तहां ज्ञान रूप निरवाद । लखै काल भव की सबै परणति वोध अगाध। वुधहो अरजिन ध्यावो भावसों जी ॥ १६ ॥ तुम करुणा निधि जगपति जग नायक भगवान। रामचंद्र विनती करै दो मुझ अविचल ज्ञान ॥ वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी ॥१७॥ ध्यावत शिव पदवी लहै नर पद की किहबात। भृत्य होय सुर पति रहै देखो फल अवदात। वुधहो अर जिन ध्यावो भावसों जी ॥ १८ ॥

घत्ताछन्द–अरजिन गुण सारं विवुध अपारं गावत अह निशि मन धरई। तसु कीरति देवा खग नृप सेवा ठानत उत्सव बहु करई ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीअरनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥१८॥

१९ अथ श्रीमल्लिनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

(रामचंद्र कृत) अडिल

स्थापना—मल्लिसनाहसज शील मदन दुस्तर हरो। अनुप्रेक्षा सर संधि मोह भट जय करो।
प्रवज्याशिवि का साज वरांगन शिववरी। आह्वाननविधिकरूं प्रणमि गुणहियेधरी ॥ १॥

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। नाराच छंद।

जल—इंदु कुंद क्षीरतैं अपारश्वेत वारही। मिश्र गंध भृंगधारकैनिकार धारही। अनेक गीत नृत्य तूरठानिये विनोदसों। अनर्घ्यद्रव्यलाय मल्लिनाथ पूज मोदसों ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलंनिर्वपामीति स्वाहा।

चंदन— गंध चंदनादि लेभवादि दाहकोहरै। शरद है सनेह उष्ण बूंद एक जो परै ॥ अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदसों। अनर्घ्यद्रव्यलाय मल्लिनाथ पूज मोदसों ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–राज भोग के मनोज्ञ तंडुलौघ सारही। सरलचित्तहारश्वेत पुंज भव्य धारही। अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदसों। अनर्घ्यद्रव्य लाय मल्लिनाथ पूज मोदसों ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्प–सुरोपनीत पुष्पसार पंच वर्ण लाइये। जिनेश अग्र धारिके मनोजकों नसाइये ॥ अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदसों। अनर्घ्यद्रव्य लाय मल्लिनाथ पूज मोदसों। ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–मोदकादि घेवरादि घृत खंडतैं करै। स्वर्ण थाल धारतैं क्षुधादि रोग को हरै। अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदसों। अनर्घ्यद्रव्यलाय मल्लिनाथ पूज मोदसो ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–रत्न दीप तेज भान हेम थाल में धरे। जिनेश अग्र धार भव्य मोहध्वांतकोहरैं।

अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदसों। अनर्घ्यद्रव्य लाय मल्लिनाथ पूजमोदसों ॥ ६ ॥
ऊँ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप– दशांग धूप चंदनादि स्वर्ण पात्र में भरै। हुताश संग धार कर्म औघ भव्य के जरै।
अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदसों। अनर्घ्य द्रव्यलाय मल्लिनाथ पूज मोदसों ॥ ७ ॥
ऊँ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–मिष्ट सुष्ट श्री फलादि घ्राण चक्षु को हरै। मनोज्ञ चित्त हार पुंज योग्य थाल में भरै।
अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदसों। अनर्घ्य द्रव्य लाय मल्लिनाथ पूज मोदसों ॥८॥
ऊँ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष
फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–(छप्पय) सलिल स्वच्छ शुभ गंध मलयतैं मधु झंकारै। तंदुलशशितैं श्वेत कुसुम परिमल विस्तारै।
क्षुधा हरन नैवेद्य रत्न दीपक तम नाशै। धूप दहैं वसु कर्म मोक्ष मग फल परकाशै। इम अर्घ
करैं शुभद्रव्य ले रामचन्द्र कण थाल भर। श्रीमल्लिनाथ के चरण युग वसु विधि अरचै भावधर॥९॥

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। दोहा।

गर्भ—चैत्र शुक्ल प्रतिपदच्यो अपराजित तैं इंद। प्रजावती उर अवतरे जजूं मल्लिगुण वृन्द ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा गर्भ कल्याणकायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जन्म—अगहन शुदि एकादशी सुरपति चतुर निकाय। सुर गिरि सनपन कर जजे मैं जजहूं गुणगाय। २।

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्ल एकादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप— भव भय कर तृणवत तज्यो जगतराज धर धीर। सित अगहन एकादशी जजूं धरो तपवीर ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्लएकादशी तप कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

ज्ञान—पौष कृष्ण दुतिया हने घाति कर्म दुःखदाय। केवल लै वृष भाखियो जजूं ज्ञान गुण गाय ॥४॥

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्ण द्वितीया ज्ञान कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा

निर्वाण—फागुण पंचमि शुकल ही शेष कर्महनि मोष। गये समेदाचलथकी शिव हित पद गुणघोष ॥५॥

ओं ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय फाल्गण शुक्ल पंचमी मोक्षकल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

अथ जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ–बालपणै मल्लिनाथ जी त्रिषै अनिंदुखकार। प्रकट भस्मतप अग्नितैं कर नमूं पदसार ॥ १ ॥

(पद्धडी छंद) जय तीन जगतपति मल्लिदेव। भव उदधितार तुम शरण एव। जय धर्मतीर्थ करता जिनेश। जग बंधु बिना कारण महेश ॥ १ ॥ जय तीर्थराज किरपा निधान। जय मुक्ति रमा भरता सुजान। जय स्वय बुद्ध शंभूमहान। जय ज्ञान चक्षु कर विश्वजान ॥ २ ॥ जय स्वपर हितू मद मोहसूर। दीक्षा कृपाण गहितुरत चूर। जय त्रयोदश चारित अमलधार। हत राग द्वेष वय अति कुमार ॥ ३ ॥ तुम ज्ञान पोत लहि भवि अनेक। भव सिंधु तरे संशय न एक। तुम बचनामृत तीरथ महान। है पावन जेकर है सनान ।४। दुष्कर्म पंक छिन ना रहाय। तुम बैन मेघ कर कै जिनाय। तुम ज्ञान भान करके महेश। है तिमिर मोहको छयअशेष।५।शिव पंथ भव्य निर्विघ्नजाय। तेरी सहायनिर्वाण पाय। बहु योगीश्वर तुमशरण थाय। निर्वाण गये जासी अघाय।६।जय दर्शन ज्ञानचरित्र ईश। धर्मोपदेश दाता महीश।जय भव्यनिकर तारन जहाज। भवसिंधु प्रचुर तुम नाम पाज।७। त्वंनाम मंत्र जो चित धरेय। सर्वारथ सिद्धि शिव सौख्य लेय। मैं विनवूं त्रिविधा जोड हाथ। मुझ देह अखै पदमल्लिनाथ।८।

घत्ता छन्द–श्रीमल्लिजिनेश्वर नमत सुरेश्वर वसुविधि कर युग पद चरचैं। दुह जर मरणा वलि नसै भवावलि रामचंद्र शिव तिय परिचै।९। ओंह्रीं श्रीमल्लिानाथ जिनेंद्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा। इति श्रीमल्लिनाथजिन पूजा संपूर्णा

२० अथ श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिन पूजा प्रारभ्यते।

(रामचंद्रकृत) अडिल ।

स्थापना–सकल परीषह जीत ध्यान असितैं हने । घाति चतुक लहि ज्ञान भव्य बोधे घने ।

मुनि सुव्रत जिन पाय नमूं सिर नाय के। आह्वानन विधि करूं चरण लवलाय के ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक (ढालजोगीरासा की)

जल–इंदुशरदऋतु का अंगतैं सित मुनिचित्तसो अविकारी। शीत सुगंध तृट् परसत नासै तीर्थोंदकभरझारी ।

मुनिसुव्रत जिनके पद पूजें दोष दुगुण नवनाशै । लोक सकल कर रेख ज्यों देखै ऐसो ज्ञान प्रकाशै ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन–घस मलयागर कुंकुम के संग कृष्णागर घन सारं। दाह निकंदन परिमलतैं अलिध्यावत वृंदअपारं।

मुनि सुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुण नव नाशै। लोक सकल कररेख ज्यों देखै ऐसो ज्ञान प्रकाशै॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–चंदकिरण सम उज्ज्वल दीरघ मन रंजन अनि यारे। तंडुल ओघ अखंडित लेकर पुंजकरो दृगहारे।
मुनि सुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुण नव नाशै। लोक सकल कर रेखज्यों देखे ऐसो ज्ञान प्रकाशै॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–कुसुम मनोहर पंच वरनही सुरतरु के शुभ लावै। गंधसुगंधे घ्राणा रंजन गुंजतषट् पद आवै॥
मुनि सुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुण नवनाशै। लोक सकल कर रेखज्यों देखे ऐसो ज्ञान प्रकाशै॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–मोदक गुंजा घेवर फेणी सुरही घृत्त बनावै। रसनारंजन रसतैं पूरे कंचन थाल भरावै॥
मुनि सुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुण नवनाशै। लोक सकल कर रेखज्यों देखै ऐसो ज्ञान प्रकाशै॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–दीप रत्नमय ज्योति मनोहर सुवर्ण पातर धारै। ध्वांतनसै जिम मेघ पवनतैं रवि आतम विस्तारै॥

मुनि सुव्रतजिनके पद पूजे दोष दुगुण नवनाशै। लोक सकल कर रेखज्यों देखै ऐसो ज्ञान प्रकाशै।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप—कृष्णागर मलयागर चंदनधूप दशांग मंगावै। स्वर्ण धूपायण संग हुताशन जारे मधुकर आवै।
मुनि सुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुण नवनाशै। लोक सकल कर रेख ज्यों देखे ऐसो ज्ञान प्रकाशै॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल—फल उत्तम मनहर बहु नीके श्रीफल दाख मंगावै। पूंगी खारिक आदि घनेर घ्राणा चक्षु सुहावै॥
मुनि सुव्रतजिनके पद पूजे दोष दुगुण नव नाशै। लोक सकल कर रेख ज्यों देखै ऐसो ज्ञान प्रकाशै॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ—जल चंदन तंडुल चरुदीपक धूप कसुम फल लावै। अर्घकरै चंद वसुविधि ऐसे सोशिवके सुख पावै॥
मुनि सुव्रतजिनके पद पूजे दोष दुगुण नवनाशै। लोक सकल कर रेख ज्यों देखै ऐसो ज्ञान प्रकाशै।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। (दोहा)

गर्भ–प्राणत स्वर्ग थकी चये स्यामा उर अवतार। श्रावण द्वितिया कृष्ण ही, लयो जजूं पद सार ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय श्रावण कृष्ण द्वितीयागर्भ कल्याणकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म–दशमी वदिवैशाख ही, जन्मे युतत्रय ज्ञान। सकल सुरासुर गिर जजे, मैं जजहूं धर ध्यान ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण दशमी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

तप–कृष्णदसैं वैशाखतप, धरचो परिग्रह त्याग। नगन दिगंबर बन बसे, जजूं चरण युगराग ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण दशमी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

ज्ञान–नौमी कृष्ण वैशाख अर, हने घाति दुख दाय। कह्यो धर्म केवल भयो, जजूं चरण गुण गाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण नवमी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

निर्वाण–फाल्गुण द्वादशी कृष्ण ही, हनि अघाति निर्वाण। गये सुरासुर पदजजे, जजूं मोक्ष कल्याण ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्ण द्वादशी मोक्षकल्याणकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महार्घ–श्रीमुनि सुव्रत जिनतने, नमूं युगल पद सार। भवदधि तारन तरनहो, पतित उधारन हार ॥

(ढाल श्रीमंधरजिनवंदिस्याकी) मुनि सुव्रतजिन बंदिस्या जग सार हो। नगर कुसागर भूप। पिता नमूं सुमित्र जी जग सार हो॥ श्रीहरिवंश अनूप। अनूप श्रावण दूज कारी सुरग प्राणततैं चये। तव मात स्यामा गर्भ आये लोकत्रय में सुख भये। सुरअसुर के नय मुकुट कंपे पीठ सब हरि आय ही। गर्भा कल्याण महंत महिमा ठानि मंगल गाय हो॥ १॥ षट्नव मास त्रिकालही जग सार हो। वरषेरतन-अपारवदि दसैं वैशाखकी जग सार हो। जिन जन्मे तिहवार। तिहवार घंटा आदि बाजै सबै सुर मिल आयही। जिनलेय पांडुक वन नह्वायेक्षीरजल शुभ लायही। सिंगार कर पित मात सौंपे नृत्यतांडवहरि करचो। लखहृदय हर्षित भये दंपति नाममुनिसुव्रत धरचो॥ २॥ श्याम वरण तन तुंगहैजग सार हो। वीस धनुष परमाण तीस सहस व्रष आय है जग सार हो। कछु लांछन शुभ जान। शुभ राज्य पंदरां सहस कीनो त्याग तृणवत वन गये। नमः सिद्धेभ्यः कह लौंच कीनो ध्यान में प्रभु थिर भये। तब ही भयो मन ज्ञान सुर नर पूज पद गुण गाइये। वैशाख दसैं कृष्ण चंपक वृक्षतल व्रत भाइये ॥ ३॥ कर षष्ठम मिथिला गये जग सार हो। भोजन हित जिन राय। विश्व सेन नृपजी दयो जग सार हो। पयलख सुर हरषाय। हरषाय सुर आश्चर्य्य कीनो पंच फिर वन जाय ही। तप करे ग्यारा वरस द्वादश भांति निर्भै थाय ही। बैशाख नवमी कृष्ण हरिये घाति चव धर ध्यान ही। लह ज्ञान लोक अलोक पेख्यो भयो बोध कल्याण ही। समव शरण धनपति रच्यो जग सार हो। मानस थंभ त्रिशाल चव। चव गोपुर सोहने जग सार हो। खाई सजल मराल। मराल बन बन कल्प तरु पुनि

चैत्य चंपक अंब ही। धुज शैल सरित सुरूप सुर तिय नचै हलत नितंबही। मध सभा द्वादश सभा मंडपकमल आसन जिन ठये। चतु वक्र अंगुल चार अतर भई धुनि सुन हरषये॥ ५॥ तरु अशोक त्रय छत्र हैं जग सार हो। चवसठ चमर ढुलंत। योजन वाणी मागधी जग सार हो। दुंदुभि मधुर धुरंत। धुरंत दुंदुभिसुमन वरषे तुंग आसनत्रय लसै। तमपटलभा मंडल विध्वंसै कोटि रविकी छवि नसै। वसु प्राति हारिज सहित आरिज देश के भवि वोध ही। संमेद गिर समभाव प्रण मे भूत योग निरोध ही॥ ३॥ फाल्गुण द्वादश कृष्ण ही जग सार हो। ध्यान शुक्ल असिधार हन अघाति शिव पुर लियो जग सार हो। सुख अनंत भंडार। भंडार सुख अविकार अवयव हीन वृद्धि नहीं कदा। त्रिलोक की तिरकाल परिणति ज्ञान गर्भित है सदा। तित जन्म मरण जरा न व्यापै नाहि सेवक भूप ही चिद्रूप वसु गुण मई राजै सदा एक सरूप ही ॥ ७॥ तुम गुण सुर गुरु वर्नवै जग सार हो। जिह्वा सहस वणाय ,गोऊपारल है नहीं जग सार हो। नो हम पै किम थाय। किम थाय हम पै तुहे वर्नन देव गुरु से थक रहे। हो कृपा नाथ अनाथ के पति इह भव मैं दुःख सहे। तुम तरन तारन दुःख निवारन तार भव तैं नाथ जी। चंदराम शरण निहार आयो जोर कै युग हाथ जी॥

दोहा—श्रीमुनि सुव्रत देव की, बिनती परम रसाल। जो पढसी सुणसी सदा पासी मोक्ष विशाल॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा। इति श्रीमुनिसुव्रतनाथजिन पूजा संपूर्णा।

२१ अथ श्रीनमिनाथजिन पूजा लिख्यते।

(रामचंद्र कृत) अडिल।

स्थापना–शकल ध्यान पर जाल भस्म कर घाति ही। केवल ज्ञान उपाय धर्म कह ख्यात ही।
सान प्रतिबुध भवि भये नमूं नमिपाय ही। आह्वानन विधि करूं तिष्ठ इत आय ही॥ १।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्॥

अथ अष्टक। (गीताछंद)

जल–सरित गंगाहिमन पर्वत थकी पूरब ध्याय ही। भरत सन्मख होय नभतैं पडी कुंड में आय ही। सो
नीर निर्मल अति हि शीतल तृषा नाशन लेयही। नमि नाथजिनकेचरण पूजूं अमलगुणगणधेयही।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म
मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन–उद्यान निर्जन मांहि पन्नग घाम दुःखतैं अतिभ्रमैं। लख मलय चंदन दारु कंदनतासपैसुखतैं रमैं।
सो दारु प्रासुक नारतैं घस कनक भाजन लेयही। नमिनाथ जिनके चरण पूजूं अमलगुणगणधेयही

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–शरद इन्दु समान उज्ज्वल गंधतैं मधु कर भमैं। सरल दीरघ नांहि खंडित ज्योति मुक्ता की दमैं।
सो अखित जलतैं क्षालि भविजन उभं करमें लेयही। नमिनाथ जिनके चरण पूजूं अमलगुणगणधेयही

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचजल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–कनक माणमय सुघर घरिये पंचवर्ण सुहावने। जावित्रि आदि अनेक विधि ही अमर तरुके पावने।
सो कुसुम अद्भुत घ्राण हारी लगैं मधुको प्रेयही। नमिनाथ जिनके चरण पूजूंअमलगुणगणधेयही।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, मिर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–खंड घृत पकवान सुंदर सद्य अनुपम मोहने। अतिमिष्ट रसना हरैं देखत क्षुधा डाकन कोहने।
सो सुष्ट मोदक चारु फेणी स्वर्ण भाजन लेयही। नमिनाथ जिनके चरणपूजूं अमलगुणगणधेयही५

ॐ ह्रीं श्री नामनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–दीपमणि,मय ज्योति सुंदर धम वर्जित ललित ही। तम मोह पटल विलाय ऐसे पवन ज्यों घन चलत ही

सो कनक भाजन धार भविजन चक्षुको अति प्रेयही । नमिनाथ जिनके चरण पूजूं अमलगुणगणधेयही

ओं ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप– सुभग धूप दशांग चूरण स्वर्ण धूपायण भरै । तसु सुरभितैं मधुभ्रमै अतिही दशोंदिश में रव करै ।
सो द्रव्य भविजन लेहि उत्तम अग्नि के संग खेयही । नमिनाथ जिनके चरण पूजूं अमलगुणगणधेयही ।

ओं ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल–बादाम श्री फल चारुपूगी आदि शुभ रलि यावने । तसु गंधतैं ह्वै घ्राण रंजन लखे चक्षुसुहावने । कण थाल फलतैं भरो उत्तम अमरतरु के लेयही । नमिनाथ जिन के चरण पूजूं अमलगुणगणधेय ही ॥८॥

ओं ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ–विमल नीर सुगंध चंदन अषत श्वेत उजास ही । वरकुसुम चरुतै क्षुधा नाशै दीपतैं तमनाशही ।
रामचंद इम अर्घ कीजे धूप फल शुभ लेयही । नमिनाथ जिनके चरण पूजूं अमलगुण गणधेयही ९

ओं ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वा।

अथ पंचकल्याणक (दोहा)

गर्भ–अपराजिततैं हरिचये विमला उर अवतार । दोयज श्याम असोज ही लयो जजूं भवतार ॥१॥

उोंह्रींश्री नमिनाथ जिनेन्द्राय आश्विन कृष्ण द्वितीया गर्भ कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म–दशमी आसत असाढ ही जन्म सुराधिप जान । सुरगिरलेसनपनजजे जजहूं जन्म कल्यान ॥२॥

उों ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अषाढ कृष्ण दशमी जन्म कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

तप–आषाढ कृष्ण दशमी तज्यो जगत राज्य तप धार । स्थिर भये निजध्यान में जजूं चरणसुखकार ।३।

उों ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढ कृष्णदशमी तपकल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

ज्ञान–मगसिर सुदि एकादशी हने घातिया कर्म । कह्योधर्मकेवलभये जजूं चरण तज भर्म ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रायमार्गशिर शुक्लएकादशीज्ञान कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

निर्वाण–चतुर्दशी वैशाख वदि हनि अघाति शिवथान । गये समेदाचलथकी जजहूं मोक्षकल्यान ॥५॥

उों ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण चतुर्दशी मोक्ष कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

अथ जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ–इंद नमत मणि मुकुट की नेक न द्युतिदरसाय । नामजिननख मंडल थकी त्रिविध नमूं तिन पाय १

(पद्धडी छंद)–जयनमि जिनवरके युगलपाय । प्रणमूं मन बचतन सीसनाय । अपराजितनाम

विमान सार। चयआये मिथिलापुर मझार ॥१॥ ।वजथा रथ तात इक्ष्वाकवंश। विपुलादेवी उर सहस अंश। अश्विनि कुवार दोयज असेत। जिन गर्भलयो हरि धार हेत ॥२॥ आये कल्याण गर्भादिकाज। कर उतसव चाले,देव राज। धन पति कर है तिरकाल विष्ट। षटमास आदि नव रत्न सुष्ट ॥ ३ ॥ जय,जिन जन्मे त्रय ज्ञान धार। आषाढ कृष्ण दशमी मझार। आये सब चतुर निकाय देव। निजनिज वाहन निज सारि एव ॥४॥ तब शचीजाय परसूति थान। नमि गुप्त लिये जिनतेज भान। हरि नमस्कार करगोद लेय। सिर छत्र तीन ईशान देय ॥ ५ ॥ पुनि सनत कुमार महेंद्र इंद। सितचमरकरैं शोभा अमंद। सुरगिर पांडुक वन मांहिजाय। अभिषेक करो जल क्षीर लाय ॥ ६ ॥ शचि पोंछि करैं सिंगार सार। बहुतूर बजैं तिनको न पार। वसुविधि पूजा कर निरतठान। संतोषे मात पितादि आन ॥७॥ तन हेम धनुष पण दह उतंग। दश सहस वर्ष की आयुचंग। कर राज तजो भय भीत होय। भव भोग विनश्वर काय जोय ॥ ८ ॥ तब ही लौकांतिक आयदेव। संबोध चले थुति ठान एव। सौ धर्म आदि सुर खचरभूप। शिविकाले चाले वन अनूप ॥९॥ तरुवकुलतलैसिरकेशडार। तज उपधि सुधातम ध्यान धार। आषाढ कृष्णदशमी महान। इंद्रादि चले कर तप कल्यान ॥१०॥ कर षष्टम नगरी सुजगत मांहि। अन काज गये नृपदत लखां हि। पयदान दियो सुर भक्ति देख। आश्चर्य करे पणविधिविशेख ॥११॥ नवमास महातप उग्रठान। धर ध्यान शुकल चउ घाति हान। अगहनसित ग्यारस ज्ञान भान। उपज्यो सुर असुर कल्याण मान ॥१२॥समवादि सहित कर कै विहार। संमेदठये बहुभव्यतार। वैशाख

कृष्ण चउदसि मझार । शिव वधूवरी चउ घाति जार ॥१३॥ तब चतर निकायक देव आय । वसु भेव पूज बहु पुन उपाय । कर उत्सव मंगल मोक्ष ठांन । निज थान गये कर क कल्यान ॥१४॥ जय महा अमल गुण समत धार । जय लोक बोध धरणी मझार । दर्शन सब युगपत लखतभूप । बल अनंतकाल ध्रुव एक रूप ॥ १५ सहमंत देश सूक्षम अपार । गुण अगुर लघू हलको न भार । तन चर्म कछू अवगाह हीन । नहि आमय अव्याबाध चीन ॥१६ ॥ गुण अष्ट इहै निश्चै अनंत। को वर्ण सकै भुवमाहि संत । मैं विनवूं श्री नमिनाथ देव । मुझ देय सदा तुम चरण सेव ॥ १७ ॥ हो कृपा नाथ जगपति जगीश । तुम तारन तरन निहार ईश । मैं शरण गहो तुम तार नाथ । चंदराम नमें धर सीस हाथ ॥ १८ ॥

घत्ताछन्द–इह नमि गुण माला परम रसाला मन वच तन कंठै धरई । हुय सिद्ध निरंजन भव दुःख भंजन अगणित शिव सुख संग करई ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीनमिनाथजिन पूजा संम्पूर्णा ।

२२ अथ श्रीनेमिनाथजिनपूजा प्रारभ्यते।

(रामचंद्र कृत) अडिल।

स्थापना—घणे जंतु रव करचो नेमिसुन गिर गये। तज रजमति भव अनित पेख मुनि वर भये।
ध्यान खडग गह हने कर्म शिव तिय वरी। आह्वाननविधि करूं प्रणमि गुण हिये धरी॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेश्वर अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेश्वर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेनिनाथजिनेश्वर अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। त्रिभंगीछन्द।

जल—निर्मल लाय महातीर्थोदक कनक रत्नमय भर झारी। मन वच तन सुध कर जिन पद पूजै नशै जन्म मृति दुःख कारी। श्रीनेमिजिनेश्वर के पद वंदूं रजमतिसी तत छिन छारी। पशुवन की रव सुन के करुणा धर जाय चढे प्रभु गिरनारी॥ १॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा

चन्दन—शुभ कुंकुम लावै अगर मिलावै चंदनतैं घन सार घसैं। तसु परस समीर चलै अति शीतल महा दाह ततकाल नसै। श्रीनेमिजिनेश्वर के पद वंदूं रजमतिसी ततछिन छारी। पशुवन की रव

सुनके करुणा धर जाय चढे प्रभु गिरनारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–शुभशालि अखंडित सौरभ मंडित शशिसी उज्ज्वल अति प्यारी। भूपन को मोसर मुक्तासी द्युति, पुंज करै भवि मनहारी। श्रीनेमि जिनेश्वर के पद पूजूं रजमति सी तत छिन छारी। पशुवन कीरव सुनके करुणा धर जाय चढे प्रभु गिरनारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–कुसुम मनोहर घ्राणा केहर पंचवरन अति सुख कारी। सुर तरु के पावन चख ललचावन अति मृदुतैं भवि भर थारी। श्रीनेमि जिनेश्वर के पद पूजूं रजमति सी तत छिन छारी। पशुवन की रव सुनके करुणा धर जाय चढे प्रभु गिरनारी ॥ ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–अति मिष्ट मनोहर घेवर फेणा मोदक गुं ना भरथारी। रसनाके रंजन रस के पूरे क्षुधा निवारन बल कारी। श्रीनेमिजिनेश्वर के पद वंदूं रजमति सी ततछिन छारी। पशुवन की रव सुनके करुणा धर जाय चढे प्रभु गिरनारी ॥ ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–दीप रत्नमय ज्योति मनोहर कनक रकाबी में धारे। तम मोह नसे जिम पवन थकी घन स्वपर

लखे गुण विस्तारै ॥ श्रीनेमिजिनेश्वर के पद वंदू रजमतिसी ततछिन छारी। पशुवन की रव सुनके करुणाधर जाय चढे प्रभु गिरनारी ॥ ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप—शुभ धूप दशांग हुताशन के संग स्वर्ण धूपायण माहिं भरै। तसु सौरभतैं मधु गुंजत आवै अष्ट कर्म ततकाल जरै। श्रीनेमिजिनेश्वर के पद वंदू रजमतिसी तत छिन छारी। पशुवन की रव सुन के करुणाधर जाय चढे प्रभु गिर नारी ॥ ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल—पूगी दाख बदाम छुहारा एला श्रीफल युत लावै। भर कनक थाल में मन के रंजन मोक्ष महा फल लघु पावै। श्रीनेमिजिनेश्वर के पद वंदू रजमति सी तत छिन छारीं। पशुवन की रव सुन के करुणाधर जाय चढे प्रभु गिरनारी ॥ ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ—सलिल स्वच्छ मलियागिर चंदन अक्षत कुसुम चरु भर थारी। मणि दीप दशांग धूप फल उत्तम अर्घ राम कर सुख कारी। श्रीनेमिजिनेश्वर के पद वंदू रजमतिसी ततछिन छारी। पशुवन केरव सुनके करुणाधर जाय चढे प्रभु गिरनारी ॥ ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक (दोहा)

गर्भ-षष्ठीकार्तिक शुक्ल ही, अपराजित अहमिंद। चय शिवदेव्या उर लयो, जजूं चरण गुण वृंद ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कार्त्तिक शुक्ल षष्ठी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म-जन्मे श्रावण षष्ठीसित,वासव चतुर निकाय। सनपन कर सुर गिर जजे, मैं जजहूं गुण गाय ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल षष्ठी जन्म कल्याण काय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप-षष्ठी श्रावण शुक्ल ही, तज विवाह सुकुमार। उर्जयंत गिर तप धर्यो, जजूं चरण भव तार ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल षष्ठी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान-शुक्ल आसोज प्रतिपद हने, घाति कर्म दुःख दाय। घाति कर्म केवल भये, जजूं चरण गुण गाय ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय आश्विन शुक्ल प्रतिपदा ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

निर्वाण-शुक्ल असाढ सप्तमी गये, शेषकर्म हनि मोष। शिव कल्याण सुरपति कर्यो, जजूं चरण गुणघोष

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेद्राय आषाढ शुक्ल सप्तमी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला। (अडिल)

महाअर्घ-लख अनित्य भव तजा राज तृणवत तप धारो। कर बहु विधि उपवास सकल आगम विसतारो॥

मुनि सुप्रतिष्ट पद नमूं भावना षोडश भाये। कर समाधि अहमिंद भये तीर्थंकर थाये ॥

(पद्धड़ीछन्द)—जय समुद विजै शिवदेवि माय। श्रीनेमि जिनेश्वर गर्भ आय। तिष्टे कातिक शुदि षष्ठी देव। गर्भा कल्याण आये सुमेव ॥ १ ॥ हरिवंश व्योम मधि सुष्ट भान। सित श्रावण षष्ठी जन्म थान। सौरी पुरतैं सुर मेरु लेय। जन्माभिषेक कर गुण भनेय ॥ २ ॥ जय देव महा बल धरन बाल। इह प्रचुर नीर मनु कुसुम माल। जय धीर धुरंधर मेरु श्रृंग। अति पावन लावन सकल अंग ॥३॥ जय दोष निराकृत धर्म घोष। भव तारन संभव करन मोष। जय मोहन मूरति सिष्ट पाल। पित मात पदम रवि प्रात काल ॥ ४ ॥ बहु नृत्य ठान पित मात देय। जिन वृद्ध भये गण राज-हेय। सित श्रावण षष्ठी जंतु पेख। भय भीत भये भवतैं विशेख ॥ ५ ॥ तप धार तजो परिग्रह पिशाच। नुति सिद्धों को कर त्याग वाच। गह ध्यान खडग चउघाति मार। लहि केवल सित प्रतिपद कुंवार ॥ ६ ॥ धन देव रच्यो समवादि सार। जिन अंतरीक करके विहार। वन ग्राम नगर पुनि सर्व देश। कह धर्म भव्यतारे महेश ॥ ७ ॥ भव कूप इह अघको भंडार। तिस में दुःख है सुख ना लगार। तुम तारन विरद निहार देव। मैं शरण गही मुझ तार देव ॥ ८ ॥ दिन सप्तमी सित अषाढ मोख। जिन प्रकृति पचासी शेष सोख। गिर नार शिखर निर्वाण थान। चंदराम नमैं नित धार ध्यान ॥

घत्ताछन्द—इह पंचकल्याणं सुर पति ठानं नर पति खग पति नित ध्यावैं। जे पढैं पढावैं सुर धर गावैं सो शिव के सुख लघु पावैं ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वामीति स्वाहा। इति श्रीनेमिनाथजिन पूजा संपूर्णा।

२३ अथ श्रीपार्श्वनाथजिन पूजा लिख्यते।

रामचन्द्रकृत। (अडिल)

स्थापना–पारस मेरु समान ध्यान में थिर भये। कमठ किये उपसर्ग सबै छिन में जये ॥
ज्ञान भानु उपजाय हानि विधि शिव वरी। आह्वानन विधि करूं प्रणमि त्रिविधा करी ॥
उों ह्वीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्वीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। (गोताछंद)।

जल–शरद इंदसमान उज्ज्वल स्वच्छ मुनि चित सारसा। शुभ मलय मिश्रित भृंग भरि हूं शीत अतिही तुषार सो ॥ सो नीर मनहर तृषा नाशन हिमन उद्भव ल्यावही। श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपायही ॥ उों ह्वीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन–घनसार अगर मिलाय कुंकुम मलय संग घसायही। अति शीत होय सनेह उष्णजु बूंद एक रलायही ॥ सोगंध भव तप नाश कारन कनक भाजन लायही। श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय

हरष उपायही ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–सरित गंगा अंबुसीची शालि उज्वल अति घनी। द्युति धरै मुक्ताकी मनोहर सरल दीरघ युत अनी। सो अखित औघ अखंड कारन अखै पद को लाय ही। श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपायही ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प–कनक निरमय रत्न जडिये पंच वर्ण सुहावने । प्रसून सुन्दर अमर तरु के गंधयुत अति पावने । सो लेय समर निवार कारन घ्राण चक्षु सुहाय ही । श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपाय ही ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य–लक्ष्मी निवास सरोज उद्भव तथा सोम थकी झरै। आमोद पावन मिष्ट अति चित्त अमी भुंजन को हरै ॥ सो चारु रस नैवेद्य कारन क्षुधा नाशन लायही। श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपायही ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप–कनक दीप मनोज्ञ मणिमय भानु भासुर मोहने। तम नसै ज्यों घन पवन नासै धूम वर्जित

सोहने ॥ मम मोह निविड विध्वंस कारण लय जिन ग्रह आयही। श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपाय ही। ऊँ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–श्रीखंड अगर दशांग धूपसु कनक धूपायण भरै। आमोदतैं अलिवृन्द आवैं गुंजतैं मन को हरै॥ वसु कर्म दुष्ट विध्वंस कारण संग अग्नि जराय ही। श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपायही॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–अति मिष्ट पक्व मनोज्ञ पावन चक्षु घ्राणा को हरै। अलि गुंज करत सुगंध सेती सुधा की सर वर करै। सो फल मनोहर अमर तरु के स्वर्ण थाल भराय ही। श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपाय ही॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–सलिल स्वच्छ दशांग धूपसु अखित उज्ज्वल लाय ही। वर कुसुम चरुतैं क्षुधा नासै दीप ध्वांत नसाय ही। कर अर्घ धूप मनोज्ञ फल ले राम शिव सुख दायही। श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपाय ही॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक । दोहा।

गर्भ–प्राणत स्वर्ग थकी चये, वामा उर अवतार । उभय, असित वैशाख ही, लयो जजूं पद सार ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण द्वितीया गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जन्म–पौष कृष्णएकादशी, तीन ज्ञान युतदेव । जन्मे हरि सुर गिर जजे, मैं जज हूं कर सेव ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पौष कृष्ण एकादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

तप–दुर्द्धर तप सुकुमार वय, काशी देश विहाय । पौष कृष्ण एकादशी, धरयो जजूं गुण गाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पौष कृष्ण एकादशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–कृष्ण चौथ शुभ चैतकी, हने घाति लह ज्ञान । कह्यो धर्म दुविधा मुदा, जजूं बोध भगवान ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण चतुर्थी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–सप्तमि श्रावण शुक्ल ही, शेष कर्म हन वीर । अविचल शिव थानक लह्यो,जजूं चरण धर धीर॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल सप्तमी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

अथ जयमाला ।(दोहा)

महाअर्घं–पार्श्वनाथ जिनके नमूं, चरण कमल युग सार । प्रचुर भवार्णव तुम हरो, मुझ तारो भवतार॥

(ढाल ते गुरु मेरे उर वसो) श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र वंदूं शुद्ध मन वच काय । धन पिता

आसा सेन जी धन धन्य वामा माय ॥ धन जन्म काशी देश में वाराणसी शुभ ग्राम। प्रभु पास दो मुझ दासकी सुन अर्ज अविचल ठाम ॥ अति मनोहर सजल जलद समान सुन्दर काय। मुख देख के ललचाय लोचननेक तृपति न थाय ॥ पद कमल नख द्युति कनक चपला कोटि रवि छवि धाम। प्रभु पास दो मुझदास की सुन अरज अविचल ठाम ॥ ह्वै अधो मुख पंचाग्नि तप तो कमठ कोचर क्रूर। तित अग्नि जरते नाग बोधे देय वच वृष पूर ॥ वे भये हैं धरणीन्द्र पदमा भवनत्रिकरिधि धाम। प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम ॥ इम उरग मिरत निहार कै सब अथिर शरण न कोय संसार यो भ्रम जाल है जिम चपल चपला होय। हूं एक चेतन सासतो शिव लहूं तज के धाम। प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम ॥ इम चितवतां लौकांतिकेश्वर आय पूजे पाय। परणाम कर संबोध चाले चितवते गुण धाय। धन धन्य वय सुकुमार मैं तप धरयो अति बल धाम ॥ प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम ॥ बंद समय जिन धरी दीक्षा विहर अह छित जाय ॥ तित ठये बन में दुष्ट वो सुर कमठ कोचर आय। अति रूप भीषण धार के फुंकार पन्नग स्याम ॥ प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम। ह्वै तुंग वारण सिंह गर ज्यो उपल रज वरषाय। कर अग्निवरषा मेघ मूसल तडित परलय वाय। प्रभु धीर वीर अत्यंत निरभै असुर को बल खाम। प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अरज अविचल ठाम ॥ वाही समय धरणीन्द्र को नय मुकुट कंप्यो पीठ। हरि आय सिंहासन रच्यो फणमंड कीनो ईठ। तब असुर करनी भई निषफल अचल जिन

जिम धाम । प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम ॥ ८ ॥ धर ध्यान योग निरोध के चव घाति कर्म उपार । लहि ज्ञान केवलतैं चराचर लोक सकल निहार ॥ समवादि भूति कुवेरकीनी कहै किम वुधि खाम । प्रभु पास दो मुझ-दास की सुन अर्ज अविचल ठाम ॥ ९ ॥ हरि करी नुति कर जोर विनती धन्य दिन इह वार । धन घड़ाया प्रभु पास जी हम लहे भव के तार । धन धन्य वाणी सुनी मैं अघनाशनी पुनि धाम । प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम ॥ १० ॥ वसु कर्म नाश विनाश वपु शिव नयरपाई वीर ॥ वसु द्रव्यतैं वहथान पूजे टरै सब ही पीर ॥ सो अचल है संमेद पै मम भाव है वसु जाम । प्रभुपास दो मुझ दास की सुन अरज अविचल ठाम ॥ ११ ॥ कर जोर कै चंदराम भाखै अहो धन तुम देव । भवि वोध कै भव सिंधु तारे तरन तारन टेव । मैं नमन हूं मो तार अब ही ढील क्यों तुम काम । प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम । ॥ १२ ॥ नित पढैं जे नर नारिही सब हरै तिन की पीर । सुर लोक लह नर होय चक्री काम हलधर वीर । पुन सर्व कर्म जुघात के लह मोष सब सुख धाम । प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम ॥ १३ ॥

घत्ताछन्द—श्रीपार्श्वं जिनेश्वर नमितसुरेश्वर पूजे तिन भवपाप हरम् । स्वर्गादिक जावै नृपपद पावै रामचंद पुन मुक्तिभरम् ॥ ऊँ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा । इतिश्रीपार्श्वनाथ जिनपूजा संपूर्णा ॥२३॥

२४ अथ श्रीवर्द्धमानजिन पूजा प्रारभ्यते।

रामचद्र कृत (अडिल)

स्थापना–बोध शुद्ध परकाशक प्रभुजिम भान ही। लोक अलोक मझार और नहि आन ही।
प्रणमूं श्रीवर्द्धमान वीरके पाय ही। आह्वाननविधि करूं विमल गुण ध्याय ही॥ १॥
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्।

अथ अष्टक (गीता छंद)

जल–कर्पूर वासित शरद शशिसम धवलहार तुषारतैं। मुनि चित्त सो अति विमलसौरभ रवैंमधुकरप्यारतै
सोहिमन उद्भवकुंभमणिमयनीर भरतृट् छेयही। श्रीवीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चरचूंश्रेयही१
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म
मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
चन्दन–मलयनीर कपूर शीतल वर्ण पूरण इंदुही। आमोद बहुलसमीरतैं दिग रवै मधुकरवृंद ही।
सो द्रव्य भवतपनाश कारण कनक भाजन लेयही। श्री वीरनाथजिनेन्द्रकेयुग चरणचरचूं श्रेयही२

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसार
ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–हिमन उद्भवसरितसीची शालिसित शशिद्युति धरै। दीरघ अखंडित सरल पिंडन मुक्तसीमनकोहरै।
कर पुंजकारण अखैपदके उभै करमें लेयहो। श्री वीरनाथ जिनेन्द्रके युग चरण चरचूं श्रेयही ॥३॥
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय अक्षय
पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पुष्प–मंदार मेरु सुपारितरुके सुमनगंधासक्तही। मधुप आवै भविनके चख लखैं होय पवित्त ही। सो समर
बाण विध्वंस कारण कुसुम उत्कर लेयही। श्रीवीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चरचूं श्रेयही ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्रप्ताय काम
बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्य–पद्मा निवास सरोज आश्रित शुधा की आमोदसा। चित्त सुधा भुंजन को तृपति ह्वै रवैमधुकरमोदसं
सो ही पीयूष क्षुधा विनाशन चारुचरु करलेयही। श्रीवीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चरचूं श्रेयही
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा
रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दीप–त्रैलोक्य मध्य जिनेन्द्र महिमा तेजतें दरसायही। पाप तम दिग दशों निविडसु मूलतैंनसजायही।

सो दीप मणिमय तेज भास्कर कनक भाजन लेयही। श्रीवीरनाथजिनेन्द्र केयुगचरणचरचूं श्रेयही

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप—धूपसंग हुताशधारे धूम्र व्रज दिग में हवै। दिगपाल चिंतैं मनोक्षिति भर नील से आवें इहे । सो मलय परिमल घ्राण रंजन सुरों को अति प्रेय ही। श्री वीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चरचूं श्रेयही

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल—शुभ फलोत्कर पक्व मधुरे स्वर्ण से मन को हरें। आमोद पावन पुंज करहूं मनो वांछित फल भरे । भरथाल कनक मय अमर तरुके लखै चाव हो प्रेयही ।श्री वीरनाथ जिनेन्द्र केयुगचरणचरचूंश्रेयही।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ—नीर गंध इत्यादि द्रव्य ले कमल पद सन्मतितने । जे जजें ध्यावैं वंदि सतवैं ठानि उत्सव अतिघने। सुर होय चक्री काम हल धर तीर्थं पद की श्रेयही। सुख रामचंद लहंत शिवके अर्घकर प्रभुधेयही

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

अथ पञ्चकल्याणक । दोहा ।

गर्भ–षष्ठी शुक्ल असाढ ही पुष्पोत्तरतैं देव । चयत्रिशला उर अवतरे जजूं भक्ति धरयेव ॥ १ ॥

ओंह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय आषाढ शुक्ल षष्ठी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ।

जन्म–चैत्र शुकल त्रोदसि सुरां कीनो जन्म कल्यान । क्षीर उदधितैं मेरुपै मैं जजहूं धर ध्यान ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल त्रयोदशी जन्मकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

तप–अगहन दशमी कृष्णही तपधारो बन जाय । सुर नर पति पूजाकरी मैं जजहूं गुण गाय ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मार्गशिर कृष्ण दशमी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

ज्ञान–दशमी सित वैशाखकी घातिकर्म चक चूर । केवल ज्ञान उपाइयो जजूं चरण गुण भूर ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय वैशाख शुक्ल दशमी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

निर्वाण–कातिक वदि मावस गये शेष कर्म हन मोष । पावापुरतैं वीरजी जजूं चरण गुण घोष ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय कार्तिक कृष्ण अमावस्यामोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

अथ जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ–सन्मति सन्मति दोमुझे हो सन्मतिदातार । इहभक्तिपावन जगत होय अमल विस्तार १

(पद्धडी छंद) जय महावीर द्युति अमल भान । सिद्धारथ चित अंवुज फुलान । जय त्रिसला

कुष कुमुदनि अनूप । प्रफुलावन को मुख चंद रूप ॥१॥ जय कुण्डल पुर जन्मा सथान । हरिवंश व्योम मधि सुष्ट भान । जय कनक वर्ण कर सप्तकाय । हरि चिह्न बहत्तर वर्ष आय ॥ २ ॥ जय इंद्र कह्यो महावीर सूर । सुन देव चलो ह्वै सर्पकूर । फुंकार हाल विकराल देख । कीडत कुमार भाजे विशेख ॥३॥ प्रभु धीर महापन्नग अज्ञान । करकीड हरयो मद को वितान । ह्वै प्रगट देव नय पूजपाय । परशस कह्यो महावीर राय ॥ ४ ॥ लख पूरव भव अनुप्रेक्ष्य चिंत्य । भय भीन भयें भवतैं अत्यंत । लौकांति आय थुति पूज्य पाय । निजथान गये सुर असुर आय ॥ ५ ॥ रच शिविका कर उत्सव अपार । बन जाय धरे प्रभु तज सिंगार । नुति सिद्ध लौंच कच नगन काय । धर षष्ठम लव चिद्रूप लाय ॥ ६ ॥ तप द्वादश द्वादशवर्ष ठान । चउघाति हने गह खडग ध्यान । जय अनंत चतुष्टय लब्धदेव । वसु प्रातिहार्य अतिशय सुमेव ॥ ७ ॥ जय भव्यन कर भव सिंधुतार । मैं प्रणमूं युग कर सीसधार । जय समर विटपिजारन हुताश । जय मोह तिमिरनाशन प्रकाश ॥ ८ ॥ जय दोष अठारा रहित देव । मुझ देह सदा तुम चरण सेव । हूं करूं बीनती जोड हाथ । भव तारन तरन निहारनाथ ॥ ९ ॥

घत्ता छन्द—श्री वीरजिनेश्वर नमत सुरेश्वर वसु विधि कर युग पद चरचम् । बहुतूर वजावैं गुण गण गावैं रामचंद्र मन अति हरषम् ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा । इति श्री महावीर जिनपूजा संपूर्णा ।

अथ पूजा फल।

पूर्णार्घं (अडिल)–कीरति ह्वै सफुराय सुराधिप बहुसिरनावै। वृद्धि सिद्धि समऋद्धि बुद्धिना श्रिय अति पावैं। धर्म अर्थलहि कामदेव नरपतिपद थावै। वृषभ आदि जिन जजे अर्घ कर जे नरध्यावै। वृषभआदि चउवीस जिनेश्वर ध्याव ही। अर्घ करै गुणगाय तूर बजावही। ते पावैं शिव शर्म भक्ति सुर पति करै। रामचंद्र सकनांहि कीर्नि जग त्रिसनरै। ऊँ ह्रीं श्री ऋषभ, अजित, सम्भव, अभिनन्दन, सुमति, पद्म, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभ, पुष्पदन्त, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य, विमल, अनन्त, धर्म, शान्ति, कुन्थु, अर, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व, वर्द्धमान इति चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

(इत्याशीर्वादः)

इति श्री चतुर्विंशति जिन पूजा (चौधरी रामचन्द्र कृता) संपूर्ण।